हिन्दी पुस्तक-एजेन्सी-माला — ३८

मौलाना रूम

लेखक

जगदीशचन्द्र वाचस्पति

प्रकाशक

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
१२६, हरिसन रोड, कलकत्ता

प्रथम बार] संवत् १९८० [मूल्य १)

प्रकाशक :—
बैजनाथ केडिया
प्रोप्राइटर :—
हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
१२६, हरिसन रोड,
कलकत्ता।

मुद्रक :—
किशोरीलाल केडिया,
वणिक् प्रेस,
१, सरकार लेन कलकत्ता।

निवेदन

प्रिय पाठको! जगत्-प्रसिद्ध मौलाना रूम और उनकी मस्नवीके सम्बन्धमें आपमेंसे बहुतोंने कुछ न कुछ अवश्य सुना होगा। फारसी-साहित्यमें मस्नवीका स्थान बहुत ऊँचा है। अंग्रेजी और बंगाली भाषाओंसे अनूदित पुस्तकें धड़ाधड़ हिन्दीमें निकलती दीखती हैं, परन्तु इस ओर हिन्दी-प्रेमियोंका पूरा पूरा ध्यान नहीं गया है। काव्य-कलाकी दृष्टिसे भी इसमें विचित्रतायें हैं, और भाव भी उच्च हैं। इसीलिये इस बार हमने हिन्दी-पुस्तक-एजेन्सी-मालाकी ३८ वीं संख्याके रूपमें यह 'मौलाना रूम' नामकी पुस्तक निकाली है। मौलानाका जीवन आदर्श था। मौलानाके विचार बहुत उच्च थे। उनकी शिक्षाप्रद जीवनी, कथाके रूपमें उनके उच्च भाव और विचार, और उनकी बहुमूल्य शिक्षायें इस पुस्तकमें सुन्दर सरल भाषामें लिखी गई हैं। इसके लेखक श्रीयुक्त जगदीशचन्द्र वाचस्पति भी हिन्दीके बड़े प्रेमी हैं। हिन्दी भाषामें ऐसे अनुपम और प्रसिद्ध ग्रन्थोंका होना आवश्यक समझकर ही हमने इसे निकाला है। आशा है हमारे उत्साही और प्रेमी पाठक इसे अपनाकर स्वयं लाभ उठावेंगे और हमें उत्साहित करेंगे।

विनीत—

प्रकाशक

मौलाना रूम

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—भूमिका	१
२—प्रस्तावना	४
३—मौलानाका जीवनचरित्र	२७
४—मौलानाके विचार	५३
५—कथा-संग्रह	९७
६—प्रेम-माहात्म्य	१६५
७—सुभाषित	२०३

निवेदन
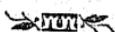
बहुत दिनसे विचार था कि हिन्दी-उद्यानमें कुछ पुराने पुष्प-वृक्ष लगाऊं और इसको अपनी लेखनीके जलसे सींचूं। ईश्वरकी कृपा है कि आज मैं अपने इस संकल्पमें कृत-कार्य्य हुआ और आशा करता हूं कि आगे भी यथासमय मान्य पाठकोंकी सेवाकी सौभाग्य पानेमें अग्रसर हूंगा।

"मौलाना रूम और उनका काव्य" यह पुस्तक सचमुच मेरी लेखनीका पहला कदम है। पहला कदम उमङ्गोंसे भरा होता है, बड़ी-बड़ी आशाओंसे प्रेरित होकर उठता है और उसके उठानेमें बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना होता है—यह सब बातें इस पुस्तकके प्रस्तुत करनेमें काम करती हैं यह विज्ञ पाठकों और लेखकोंको अनुभव द्वारा मालूम हो जावेगा।

इस पुस्तकका जो क्रम मैंने निश्चित किया है, वह अच्छेसे अच्छा सोचकर किया है। वास्तवमें 'मस्नवी' में यह क्रम नहीं है हां उसमें ऐसा है कि समय-समयपर जो विचार सूझते रहे उनका एकत्री करण मात्र है, न क्रम और न कोई विशेष प्रकरण तथा शृङ्खला ही है। मौलानाके विचारोंके किसी भी भागको छोड़ा नहीं गया है बल्कि उनके वास्तविक रूपमें क्रमबद्ध कर दिया

गया है। केवल इस कार्यमें मुझे छ मास खर्च करने पड़े हैं जिससे पुस्तकको यह सुन्दरता प्राप्त हुई है।

पाठकों और समालोचकोंसे निवेदन है कि कृपाकर वह इसको अङ्गीकार करें और एक प्रेमी की दी हुई भेंट समझकर इसे अपनावें।

मैं अपने परममित्र श्रीयुक्त साधु महेशप्रसादजीका अत्यन्त आभारी हूं कि उन्होंने प्रस्तुत पुस्तककी अपनी विद्वत्तामयी भूमिका लिख देनेकी कृपा की है। परमात्मा उनकी योग्यतासे मुझे लाभ उठानेका फिर भी समय दे।

प्यारे भाई पं० योगेन्द्रपालजी शास्त्रीके पवित्र कार्य्योंका स्मरणकर जो कि उन्होंने मेरी सहायतामें किये हैं, कृतज्ञता प्रकाश करता हुआ ईश्वरसे यही प्रार्थना करता हूं कि वह उनकी सहायता करे और मेरा स्वाभाविक साथी बनाये रक्खे।

हिन्दी-पुस्तक-एजेन्सीके मैनेजर श्री शम्भूप्रसादजी वर्म्मा तथा अन्य सज्जनोंको भी धन्यवाद है कि इन्होंने कृपाकर मेरी सेवाको पाठक महोदयोंतक पहुंचानेका प्रशंसनीय कार्य किया।

अन्तमें अपनी जीवन-नौका देवी सुशीलाका ध्यान करता हुआ कि जिसके प्रेमने मुझे इस शुभ मार्गपर चलाया प्रभुसे संसारके मंगल की कामना करता हूँ।

निवेदक—

जगदीशचन्द्र वाचस्पति,

ॐ

भूमिका

मौलाना जलाल-उद्-दीन रूमी तथा उनकी मस्नवीकी अमिट कीर्ति सूर्यके समान प्रकट है। हिन्दी भाषामें मौलाना तथा उनके ग्रन्थ मस्नवीपर आजतक कुछ भी नहीं लिखा गया था। कुछ लोगोंने मुझसे भी आग्रह किया था कि मैं इसपर कुछ लिखूं, परन्तु मैं भी अवकाश न होनेके कारण कुछ लिख नहीं सका। बड़ी प्रसन्नताकी बात है कि इस कार्यका बीड़ा श्री पण्डित जगदीशचन्द्र वाचस्पतिजीने उठाया है और उसे भली भांति निभाया है। मेरा विश्वास है कि पाठक जब इस हिन्दी मस्नवीको भलीभांति पढ़ेंगे तो अवश्य इस नतीजेपर पहुंचेंगे कि इस मस्नवी ऐसे मार्मिक ग्रन्थको लिखनेके लिये वास्तवमें आप ही सर्वथा उपयुक्त थे, अस्तु। हिन्दी साहित्य-भांडारकी पूंजीमें आपने जो आदरणीय तथा महत्वपूर्ण वृद्धि कर दिखाई है वह भूरि भूरि प्रशंसाके योग्य है।

फ़ारसी भाषाके पद्यके जो विभाग सुप्रसिद्ध हैं उन्हींमेंसे एकका नाम मस्नवी है। इस विभागके सारे पदों—शेरोंमेंसे प्रत्येक पदका वज़न वा काफिया (अनुप्रास) एक ही हुआ करता है, वास्तवमें मस्नवी शब्द अरबीके सनयुन् धातुसे निकला है जिसका अर्थ है दोहरा करना, दोहरा होना अथवा

लौटा लेना। मस्नवीमें वस्तुतः पहले ही अर्धपद (मिसरा) का अनुप्रास लौटाया तथा दोहराया हुआ होता है इस कारण ऐसे पदोंका नाम मस्नवी* पड़ा है।

मस्नवीके लिये वस्तुतः ७ छन्द मुख्य माने गये हैं। इनके सिवा किसी अन्य छन्दके अनुसार मस्नवी कहना अच्छा नहीं समझा जाता। मस्नवीमें पदसंख्याकी भी कोई कैद नहीं है और यदि भिन्न २ छन्दोंकी पांच मस्नवियां हों तो उनका एक विशेष नाम ख़मसा अर्थात् पंजा कहा जाता है–जैसे ख़मसा निज़ामी वा ख़मसा जामी इत्यादि ग्रन्थ हैं। विद्वद्वरोंका कथन है कि मस्नवीका लिखना बड़ा कठिन कार्य है तथापि फ़ारसीमें अनेक विद्वानोंने मस्नवियां लिखी हैं और अपनी अपनी मस्नवियोंकी बदौलत ही उन्होंने अक्षय कीर्ति भी पायी है। इस क्षेत्रके सबसे बड़े योद्धा निज़ामी, गंजवी, और फ़िरदौसी माने जाते हैं।

निजामीने जिन २ मुख्य बातोंका होना मस्नवीमें अत्यावश्यक बतालाया है मौलाना रूम तथा अन्य लोगोंने उससे भिन्न मार्गका अनुसरण किया है। उनकी मस्नवीका श्रीगणेश एक कथासे होता है। मौलाना रूम तथा उनकी मस्नवीका जो दरजा है वह स्पष्ट ही है। मौलाना रूम तेरहवीं शताब्दी ईस्वीमें हुए हैं। उस समय तथा उससे पूर्व कालमें अफ़ग़ानिस्तान, बलख़, ईरान तथा अरबका

* मौलाना रूमकी मस्नवी रमल मुसद्दस मक़सूर नामी छन्दमें है जिसका वज़न है–फ़ायलातुन, फ़ायलातुन, फायलुन।

बहुत कुछ सम्बन्ध भारतके साथ था। इतिहास-प्रेमी भलीभांति जानते हैं कि उस समय भारतकी सारी वस्तुएं इन्हीं देशोंसे होकर अथवा इन्हीं देशवासियोंकी बदौलत सारे पश्चिममें पहुंचा करती थीं। इस प्रकार इन देशोंका सम्बन्ध बहुत कुछ भारतसे था और अल्बेरूनी, मसऊदी वा अन्य कई विद्वानोंके द्वारा भारतीय विद्या तथा ज्ञानकी चर्चा बहुत कुछ उन देशोंमें फैल गई थी। निदान निर्विवाद रूपसे इस बातको मानना पड़ता है कि मौलाना रूमकी बहुत सी सारगर्भित बातें वास्तवमें भारतीय विद्या तथा ज्ञानके आधारपर हैं। वस्तुतः सुयोग्य लेखकने संस्कृत वाक्यों तथा टिप्पणियोंद्वारा इस रहस्यको भलीभांति खोल दिया है और साथ ही साथ आशा की जाती है कि लेखकके ऐसा कर देनेसे पाठकोंको प्रत्येक मर्मके समझनेमें अवश्यमेव बड़ी सुगमता होगी। अब अन्तमें यह कह देना भी अवश्यक प्रतीत होता है कि यदि मैं ग़लती नहीं करता तो यह बात अवश्य ठीक है कि मौलाना रूमके सम्बन्धमें हिन्दी भाषामें यह पहला ग्रन्थ है और बड़े परिश्रमसे लिखा गया है। संसारकी अनेक भाषाओंमें इस मसनवीके भिन्न २ संस्करण निकल चुके हैं। हिन्दी भाषा अबतक इससे बिलकुल वंचित थी। अतः आशा है हिन्दी प्रेमी इस ग्रन्थको आदर-दृष्टिसे देखेंगे।

हिन्दू-विश्वविद्यालय काशी
६—४—१९३२

महेशप्रसाद 'साधु'
मौलवी फ़ाज़िल

प्रस्तावना

"आत्मानं चेद्विजानीया दयमस्मीति पूरुषः
किमिच्छन्कस्य कामाय शरीरमनुसंज्वरत् ।"

उपनिषद्के इस आदर्श वाक्यमें महर्षिने कहा है कि मनुष्य यदि यह जान ले कि मैं (आत्मा) कौन हूं, किस प्रकारका हूं तो फिर वह किसकी इच्छा करता हुआ किस वस्तुके वियोग अथवा संयोगसे अपने शरीरको जलाया करेगा ?

महर्षिका कथन है कि मनुष्यमात्रको चाहिये कि यथार्थ रीतिसे निश्चयपूर्वक जान ले कि आत्मा क्या है। यदि मनुष्यने यह जान लिया तो निश्चय जानो कि उसके लिये कुछ अप्राप्य वस्तु नहीं रही; वह चाहे जिस वस्तुको प्राप्त कर सकता है।

यह बात हरएक व्यक्तिमें देखी जाती है कि वह अप्राप्तकी प्राप्ति और प्राप्तकी रक्षा किया करता है। यदि उसकी अभिलषित वस्तु न मिले तो उसे एक प्रकारका कष्ट होता है जिससे न केवल आत्मा ही दुःखी होता है और मनपर ही बुरा संस्कार पड़ता है बल्कि शरीर भी जलने लग जाता है। इसी प्रकार जब अनिष्ट वस्तु सामने आ जाती है और प्रयत्न करनेपर भी

नहीं दूर होती तब भी विशेष कष्ट उठाना पड़ता है। प्रयत्न करनेपर यदि इष्टकी प्राप्ति हो जावे पर कुछ ही समय बाद नष्ट होता दिखायी दे तो उससे भी चित्तको क्लेश होता है। इस क्लेशको बहुत बुरा समझ ऋषियोंने यह मन्त्र उपनिषद्में वर्णित किया है। इसलिये यदि कोई यह चाहे कि मेरे सब कष्ट दूर हों और मेरा बेड़ा दुःख-सागरसे निकल आनन्द-तटपर पहुंचे तो उस सन्तप्त हृदयको उचित है कि आत्मज्ञानकी नौकामें चढ़कर पार उतरनेकी चेष्टा करे। यह आत्मज्ञान अध्यात्मविद्यासे प्राप्त होता है। इसीलिये जिसने अध्यात्मविद्या ग्रहण कर ली उसने अपना मनुष्य-जन्म सफल कर लिया और जिसने इस सर्वोत्कृष्ट विज्ञानको छोड़ लौकिक विद्याको सीखा वह भारी टोटेमें रहा।

"इह चेदवेदी दथ सत्यमस्ति नो चेदवेदी महती विनष्टिः"

अर्थात् जिसने मनुष्य-जन्म लेकर आत्मज्ञान प्राप्त कर लिया उसने सचमुच एक उचित कार्य किया पर जिस मूर्खने न जान पाया और इधर-उधरकी बातोंमें समय गँवाया, उसने बड़ा टोटा उठाया। इसी उत्कृष्ट और सर्वोत्तम विचारको भगवान् श्रीकृष्णने अपने वचनामृतसे यों कहा है कि—

'अध्यात्म विद्या विद्यानाम्'

फिर जो आत्म-विद्या सब विद्याओंसे उत्तम और उपयोगी है उसका श्रवण, मनन तथा तदनुसार निदिध्यासन करना प्रत्येक समझदार मनुष्यका मुख्य कर्त्तव्य हो जाता है।

यह निश्चित है कि आत्म-विद्याका विद्यार्थी पापात्मा नहीं हो सकता। इसीलिये धर्मका सम्बन्ध आत्माके साथ अटूट है। प्रत्येक आत्मज्ञानाभिलाषीके लिये सदाचार या आचारशास्त्र-का अध्ययन करना भी इसीलिये उपयोगी माना गया है कि आत्मज्ञानरूपी अमृत कदाचारी या आचारशून्य हृदयमें नहीं डाला जा सकता; क्योंकि यदि ऐसे अपवित्र बर्तनमें यह वस्तु रक्खी जायगी तो वह अपवित्र और अशुद्ध हो जायगी। मनुने इसीलिये लिखा है कि—

'विद्यातपोभ्यां भूतात्मा।'

विद्या तप और धर्माचरणसे ही आत्मा शुद्ध होता है। यह बात न सिर्फ़ संस्कृत ग्रन्थोंके अन्दर ही पायी जाती है बल्कि और भी जिन भाषाओंमें आत्मविद्याका वर्णन पाया जाता है उनमें आत्माके साथ आचारका अवश्य वर्णन पाया जाता है; यथा फ़ारसी और अरबी भाषाओंके उच्च ग्रन्थोंमें जो कि आत्म-विद्यापर लिखे गये हैं आचारधर्मका वर्णन अवश्य देखनेमें आता है। जैसे गीतामें आत्मविद्याके रहस्योंके साथ साथ ब्रह्मचर्य, संयम, निर्ममता, शान्ति और दैवी गुणोंके स्वीकारका उपदेश पाया जाता है वैसे ही सिराजुस्सालिकीन जैसी फारसी पुस्तकों और 'अहयाउल् उलूम' जैसी वृहत्काय अरबी पुस्तकोंमें भी जो केवल आत्म-विद्यापर ही लिखी गयी हैं आचारधर्मका सविस्तर वर्णन दिखायी देता है।

इस समय हम अरबी साहित्यकी चर्चा छेड़कर असामयिक

कार्य करना उचित नहीं समझते। हां, यह अवश्य जतलानेकी कोशिश करेंगे कि फ़ारसी साहित्यमें आत्माके साथ साथ आचारका भी ऊँचा स्थान माना गया है।

फ़ारसी साहित्यमें आत्मविद्या और आचार-शास्त्रके एकत्रित उपाख्यानपर सबसे पुरानी पुस्तक हकीम सनाईकी बनाई 'हदीक़ा' नाम पुस्तक विख्यात है जिसमें कि योग्य तथा अनुभवी लेखकने जहां आत्माके उन रहस्योंको, जो शरीर और मनके संसर्गसे उत्पन्न हुए हैं, खोलनेका यत्न किया है वहां धैर्य, पवित्रता, सत्य, दया और भक्ति आदि अनुपम धर्माङ्ग रत्नोंका भी विशदरूपसे वर्णन किया है।

इसके सिवा ख़ाजा फ़रीदुद्दीन अत्तारकी दिलचस्प पुस्तक 'मस्नवी अत्तार' भी उसी श्रेणीकी है जिसमें वह सब उत्तम गुण पाये जाते हैं जो किसी योग्य अनुभवी आत्मविद्याके व्याख्याताकी कृतिमें होने चाहिये। सौभाग्यवश यह दोनों पुस्तकें जो कि मस्नवीसे बहुत ही छोटी हैं प्रकाशित हुई आज भी मिल सकती हैं। जिन लोगोंको अन्वेषणकी इच्छा हो या आत्मविद्याके इतिहास जाननेका विचार हो उन्हें चाहिये कि अवश्य इन प्राचीन पुस्तकोंको देखनेका कष्ट उठावें। हमें इनके देखने तथा सविचार पढ़नेका इसलिये ध्यान आया कि फ़ारसीके वर्त्तमान आध्यात्मिक ग्रन्थोंमें मौलाना रूमकी मस्नवीको जो स्थान प्राप्त है वह बहुत ऊंचा है और उनकी प्रशंसा स्वयं मौलाना रूमने अपनी मस्नवीमें यह लिखकर की है—

'अत्तार रूह बूद सनाई दो चश्मे मा ।'

अर्थात् मौलाना कहते हैं कि अत्तार मेरा आत्मा और सनाई मेरी दो आँखें हैं। आंखें मार्ग दिखाती हैं, सत्यासत्यका विवेक कराती हैं, यह दोनों भी मुझे सचाईतक पहुंचानेवाले हैं। जैसे आँखें माथेपर होती हैं वैसे ही इन महात्माओंका कथन सिर माथे है। जैसे मनुष्य आंखोंसे देखता और इनके अभावमें अन्धा होता है वैसे ही इन सज्जनोंके बिना मैं अन्ध समान हूं। मौलाना रूमने जिस श्रद्धा और कृतज्ञतासे इन दोनों महानुभावोंका वर्णन किया है उससे जहां मौलानाकी कृतज्ञता प्रकट होती है वहां अत्तार और सनाईका महत्व भी दिखायी देता है।

अत्तार और सनाई यद्यपि उच्च कोटिके विद्वान थे तथापि वे अपने समयके ही योग्य व्यक्ति थे। कुछ कालके बाद जब आत्मज्ञानियोंकी और भी आवश्यकता प्रतीत हुई तो यह लोग हिम्मत हार बैठे। ऐसे आत्मप्रधान समयमें जब कि किसी उच्च विद्वान और उत्कृष्ट व्याख्याताकी आवश्यकता प्रतीत होती थी ईश्वरीय प्रेरणासे मौलाना रूमका नसीबा जागा और इन्होंने आकर ऐसा अपूर्व परिचय दिया कि लोग वाह वाह कर उठे। मौलानाके व्याख्यानोंके सामने हकीम सनाईके प्रभावोत्पादक वाक्य भी धुँधलेसे हो गये और ख्वाजा अत्तारके भजन भी सारहीन प्रतीत होने लगे। कुछ ही वर्षोंमें मौलानाकी इतनी विख्याति हुई कि तातारसे अरबतक और तुर्किस्तानसे चीनतक हर बालक और वृद्ध उनके नामसे परिचित हो गया।

यही मौलाना रूम हैं जिन्होंने अपने दीर्घकालके स्वाध्याय और प्रवचन नियमसे प्रतिष्ठा पाकर सर्वसाधारणके हृदयमें स्थान पाया और अपने जीवनके साथी हस्सामुद्दीन चिल्पीकी उत्कट प्रेरणासे 'मस्नवी मानवी' जैसी अद्भुत तथा शिक्षाप्रद पुस्तक लिखी जिसका न केवल उनके जीवनकालमें और मृत्यु के बाद फ़ारसी आदि देशोंमें प्रचार हुआ बल्कि आज भी संसारकी विख्यात भाषाओंमें उसका अनुवाद हो गया जिसके कारण प्रत्येक आत्मानुरागी और विद्या-व्यसनी उनकी पवित्र कृतिसे लाभ उठा रहा है।

फ़ारसी साहित्यमें हदीक़ा और मस्नवी अत्तारके बाद यदि कोई उत्तम आध्यात्मिक पुस्तक है तो वह 'मस्नवी रूम, ही है। वैसे तो फ़ारसीमें मौलानाकी मस्नवीसे बढ़कर आचार, नीति और सभ्यताकी व्याख्या करनेवाला कोई ग्रन्थ नहीं पर साथ ही आत्मविद्याका जैसा वर्णन इस ग्रंथमें है और किसीमें नहीं है। इसीलिये इस पुस्तकको जितनी उपादेयता और विख्याति प्राप्त हुई है उतनी किसी और ग्रंथको नहीं हुई।

मस्नवीकी प्रसिद्धिके कारण

सवाल होता है कि वह कौनसे कारण हैं कि फ़ारसी साहित्यमें मस्नवीका स्थान सबसे ऊँचा है। जहांतक हमारा विचार है मस्नवी इसलिये प्रसिद्ध नहीं है कि वह मौलाना रूम जैसे लेखकको लेखनीसे निकली है और न इसलिये ही मशहूर है कि इतनी वृहत आकारवाली है तथा न इसलिये ही लोग उसे पसन्द करते हैं

कि वह फ़ारसी जैसी कवितामयी भाषामें लिखी गयी है बल्कि उसकी ख्यातिका सबब कुछ और ही है। हम यह चाहते हैं कि इस उचित स्थानपर मस्नवीके प्रसिद्ध होनेके असली कारणों-पर विचार किया जावे और यह सोचा जावे कि क्या कारण हैं कि मौलाना रूमको मस्नवी संसारमें प्रसिद्ध है।

किसी भी वस्तुकी प्रसिद्धिके विशेषतया तीन कारण होते हैं—

(१) वह वस्तु स्वयं इतनी अच्छी हो कि सर्व-प्रिय हो जावे।

(२) वह वस्तु किसी ऐसे कामकी हो कि जो बहुत आव-श्यक हो।

(३) वह वस्तु किसी ऐसे प्रसिद्ध व्यक्तिकी हो कि जो सर्वप्रिय हो।

मस्नवीकी प्रसिद्धिमें केवल पहिली बात ही प्रमाण है। अर्थात् मस्नवी इसलिये प्रसिद्ध है कि वह स्वयं ऐसी है कि लोग उसे चाहें और स्थान स्थानपर ले जावें।

मस्नवीकी लेखन-शैली इस प्रकारकी है कि समझनेवालेपर कुछ ज़ोर नहीं पड़ता और अपने आप दिलमें उतरती जाती है। इसके लिये हम कई युक्ति और उदाहरण देना उचित समझते हैं।

(१) मस्नवीमें प्रत्येक बातपर कथा लिखी गयी है। यदि मस्नवीको शुरू किया जावे तो 'बांसुरीका रुदन' नामक उपा-ख्यान सबसे पहिले दृष्टिगोचर होगा जैसा कि—

'शुनवाज़ नै चूं हिकायत मीकुनद
वज़ जुदाईहा शिकायत मीकुनद ।'

सुनो! बांसुरी क्या कथा कह रही है और देखो, अपनी जुदाई-वियोगकी कैसी शिकायतें कर रही है।

बीचमें भी बांसुरीके अभिप्रायसे मिलते जुलते तत्त्वोंपर कथाएं लिखी गयी हैं; जैसे बादशाहका एक सुन्दरीपर आसक्त होना और महात्माके दर्शनोंसे कृतकृत्य होना तथा शेरकी कथा लिखकर पुरुषार्थका महत्व दिखलाना आदि आदि और अन्तमें तीन आलस्यावतार भाइयोंकी कहानी लिखकर उपरतिका मनोहर भाव उत्पन्न किया गया है।

इन कथाओंके लिखनेका ढंग ऐसा अच्छा है कि बालकसे वृद्ध और मूर्खसे विद्वानतक प्रत्येक पसन्द करता है। इसी कथा-कथन-कलासे हरएक व्यक्तिपर प्रभाव पड़ जाता है और इतना मन लगता है कि छोड़नेको दिल नहीं चाहता।

कथा लिखते समय इतना विशेष ध्यान रखा गया है कि कथाका परिणाम कथामें झलकने न पावे और जबतक कि उसका खास तौरपर बादमें ज़िकर न किया जावे किसीको मालूम न हो। प्रत्येक कथा या उपाख्यानसे परिणाम ऐसा अच्छा निकाला गया है कि पढ़नेवालेको हैरानी होती है और उसे प्रतीत होता है कि इसका प्रभाव उसके मनपर पड़ रहा है। पाठक जब कथा-संग्रहको पढ़ेंगे तो उनको इस वचनकी सत्यताका प्रमाण कुछ न कुछ अवश्य मिल जावेगा।

(२) दूसरी बात जो मस्नवीको प्रसिद्ध करनेवाली है वह आत्मविद्याका अद्भुत वर्णन है—जैसे मुरदा जिस्मको यह आत्मा ज़िन्दा कर देता है इसी प्रकार आत्मविद्याने मस्नवीको संसार-के हर देशकी तरफ़ हरकत दी है और प्रसिद्ध कर दिया है। मस्नवीमें स्थान स्थानपर आत्मविद्याके अङ्गों और उपाङ्गोंका ऐसा अच्छा वर्णन पाया जाता है कि पढ़नेवाला फड़क उठता है। अहा! परीका प्रभाव तो पढ़कर देखो, भूले-भटके प्रेमीको कैसा सीधा और सच्चा मार्ग दिखलाया है। 'बादशाहके बाज़की दुर्गति' नामक उपाख्यान लिखकर आत्माको उसका स्वरूप कैसे दिखाया गया है—यह पढ़नेसे ही ज्ञात होगा।

(३) इश्क़—प्रेमका अच्छेसे शब्दोंमें वर्णन किया गया है। सांसारिक और आत्मिक लोग जिस एक वस्तुपर लट्टू हैं उसका लोकोत्तर नाम 'इश्क़' है। यह इश्क ऐसी वस्तु है कि मुरदा भी तड़प उठता है। हाय! इस इश्कने सैकड़ोंको बरबाद कर डाला और हज़ारों ग़रीबोंपर दिन-दहाड़े डाके डाले! हाय! इस हत्यारेने लाखोंके कलेजे छलनी कर दिये लेकिन इतना कर चुकनेपर भी सबका प्यारा बना रहा और सबका सहारा साबित होता रहा। जिसमें इश्क़ है वही कुछ है पर जिसमें इश्क़ नहीं वह कुछ भी नहीं। इसी हज़रत इश्क़के हाथों सताये हुए होनेसे मौलाना रूमने स्थान २ पर इनकी करतूतें लिखी हैं और अगर कहीं खुश हो गये हैं तो खुशीके मारे तारीफ़ोंके पुल बांध दिये हैं, एक नमूना पेश करते हैं —

"शाद बाश ऐ इश्के खुश सौदाए मा
ऐ तबीबे जुम्ला इल्लत हाय मा।
ऐ दवाए निख़वतो नामूसे मा
ऐ तो अफ़्लातूनो जालीनूसे मा।"

अर्थात् ऐ मेरी धुन—इश्क़ तू खुश रह—मुझपर कृपादृष्टि किये रह। ऐ मेरे प्यारे इश्क़! तू ऐसा वैद्य है कि जो मेरे हर एक रोगकी दवाई कर सकता है। ऐ मेरी जान! तू मेरे हर दरदकी दवाई है और मेरे ऐबोंको दूर करने वाली है। हां, हां, तू तो मेरा जालीनूस और अफलातून है।

हमारे विचारमें इश्क़देवकी तारीफ़ इससे अधिक हो ही नहीं सकती। जालीनूस कहकर इश्क़का प्रभाव और प्रतिष्ठा सिद्ध की गयी है। यह मानी हुई बात है कि जालीनूससे बढ़कर पश्चिममें कोई वैद्य नहीं हुआ। सर्वसाधारण जितनी श्रद्धा जालीनूससे रखते हैं उसकाएक अंश भी दूसरोंसे नहीं। यह इसलिये कि वह इतना योग्य और सिद्ध था कि हर मरज़का चुटकियोंमें इलाज किया करता था। बड़ेसे बड़े दुःखीको आराम पहुंचा देना और कष्टोंसे छुड़ा सुखी बनाना उसी वैद्यके बांये हाथका काम था। इश्कको यह नाम देकर मौलानाका भी यही अभिप्राय है। अफलातून अपने समयका अद्वितीय विद्वान् हो गया है। यूरोपियन लोग उसे प्लेटोके नामसे पुकारते हैं और आधुनिक विज्ञानका आदि आविष्कर्ता स्वीकार करते हैं। ऐसे उच्च व्यक्तिकी प्रतिष्ठा

इश्कको देकर सचमुच उचितसे उचित सम्मान किया गया है, अधिक क्या 'प्रेम महिमा' इसका ज्वलन्त दृष्टान्त है। मेरे भाई जब देखेंगे तो जान सकेंगे कि मौलानापर इस प्रेम-इश्कका कैसा रंग चढ़ा हुआ था। इस प्रेमके यत्र तत्र समावेशसे भी मस्नवीको प्रसिद्धिकी सम्पत्ति प्राप्त हुई।

(३) तीसरी बात जो मस्नवीको प्रसिद्ध करनेवाली हुई वह धार्मिक ग्रन्थोंमें लिखे उपाख्यानोंका रोचक सम्वाद है। जैसे हज़रत मूसाका चरवाहेकी प्रार्थनापर नाराज़ होना और बादमें परेशान होना। हज़रत बुस्तामीकी तपस्याका वर्णन और फिर उनका क़िस्सा भी ऐसे ढंगसे लिखा गया है कि किसी अन्य पुस्तकमें वैसा नहीं देखनेमें आता, पैगम्बरोंकी करामातें जैसे—हबशी गुलामका गोरा हो जाना आदि बातें भी इस प्रकार वर्णित हैं कि पढ़नेवालोंपर विशेष प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता।

(४) विशेषता यह है कि कुरान और हदीसोंके कई वाक्योंकी व्याख्या जैसे विचित्र ढंगसे मौलानाने की है वैसी आजतक सिवा शिबली और ग़िज़ालीके और किसीने नहीं की। उदाहरणके लिये दो आयतोंकी व्याख्याकी ओर पाठकोंका ध्यान आकृष्ट किया जा सकता है—

'मन् अरफ़ नफ़्सहु फ़क़द अरफ़ रब्बहु।' १

अर्थ—जिसने अपने आपको जान लिया उसने ईश्वरको पहिचान लिया।

'कुल्लो इलैना राजेऊन।' २

अर्थ—हरएक हमारी तरफ़ लौटेगा अर्थात् प्रत्येक व्यक्तिको ईश्वरके सामने जाना होगा।

'मा ख़लक़ तल्जिन्न वल् उन्सा इल्ला लियाबदून्।' ३

अर्थ—हमने मनुष्यों और फ़रिश्तोंको सिवा इसके कि हमारी उपासना करें और किसी कामके लिये नहीं पैदा किया। परमात्मा कहता है कि हमने हरएकको इसलिये पैदा किया है कि हमारी भक्ति किया करे न कि इसलिये कि मुझे छोड़ इधर उधरके व्यसनोंमें फंस जावे। और भी बहुतसे वाक्य हैं कि जिनका रोचक और प्रभावोत्पादक वर्णन किया है। यह गुण इतना अधिक अच्छा प्रतीत होता है कि हरएक कुरान और हदीसोंसे प्रेम करनेवाला बड़ी श्रद्धासे मस्नवीको देखता और पढ़ता है।

इसी एक गुणकी वजहसे ही बड़े बड़े विद्वान् मस्नवीपर आशिक़ होते रहे हैं जैसे कि मुफ़्ती मीर अब्बासने अपनी प्रसिद्ध मस्नवीमें स्पष्ट कहा है कि—

"ईं कलामे सूफ़ियाने शूम नेस्त
मस्नवीए मौलवीए रूम नेस्त।"

अर्थ—यह मेरा कलाम या काव्य उच्च कोटिके विद्वानोंका सा नहीं है और न 'मस्नवी मौलाना रूम' ही है कि लोग इसे पसन्द करेंगे।

(५) पांचवीं विशेषता जो मस्नवीकी प्रसिद्धिमें है वह यह है कि ज्ञानकाण्डके गूढ़से गूढ़ सिद्धान्त ऐसी सरल भाषामें लिखे गयेहैं कि बड़े बड़े ज्ञानियोंको दाँतों तले अङ्गुली डालनी पड़ी है। फ़िलासफ़ीके प्रसिद्ध पुस्तक 'दुर्रतुत्ताज'में उसके लेखक* शेख़ क़ुतुबुद्दीन शीराज़ीने मौलानाके उपदेशों और मस्नवीके विशेष विशेष स्थलोंको सुन और पढ़कर ऐसी प्रशंसा की है कि हरएक समझदार ज्ञानी-विद्वान्के हृदयमें मौलानाके लिये सद्भाव उत्पन्न हो उठते हैं।*

(६) छठी विशेषता एक ऐसी विशेषता है जो ऊपर लिखी पांचों विशेषताओंपर सुहागेका काम करनेवाली है। मस्नवी एक काव्य है जिसमें प्रत्येक बात और प्रत्येक सिद्धान्त कवितामें लिखा गया है। बस, यही छठी विशेषता है कि मस्नवी कवितामयी है। मौलानाके जीवनकालसे आजतक फ़ारिस, बुख़ारा, अफ़ग़ानिस्तान और भारत आदि देशोंमें मस्नवीका गान ऐसे ढङ्गसे किया जाता है कि सुननेवालेपर वजद तारी हो जाता है। मूर्च्छा और बेहोशीतककी नौबत आती है।

---

* फ़ारसी भाषामें फ़िलासफ़ीपर सबसे उत्तम विचार करने और पुस्तकाकारमें लिखनेवाले यह विद्वान् संसारप्रसिद्ध हैं। इनके ग्रन्थमें दर्शन-शास्त्रके वह सिद्धान्त जहांपर तर्ककी भी पहुंच नहीं, ऐसे अच्छे प्रकारसे पाये जाते हैं कि बड़े बड़े दार्शनिक हैरान हो उठते हैं।

लेखकने एक बार बुख़ारा जानेके लिये चित्रालकी यात्रा की थी। मार्गमें स्वात देशके एक ग्रामके प्रसिद्ध गायकसे सभामें उनको कुछ सुननेका अवसर प्राप्त हुआ, तो चित्त ऐसा आकृष्ट हुआ, कि बेसुध हो गये। पूछा तो पता लगा, कि यह भजन मौलाना रूमकी बनाई हुई ग़ज़ल है, जो उसने अपने ग्रंथ 'दीवाने तबरेज़ी' में लिखी है। इस जगह मैं इतना और कह दूँ, कि यह वही ग़ज़ल थी, जो शहाबुद्दीन सहरवर्दीने शेख़शादीको खुश करने और अपने आत्माको तसल्ली देनेके लिये मौलानासे पत्र लिख-कर मंगवाई थी।

ग़ज़ल

रौ सर बिनह बिबालीं तनहा मिरा रिहा कुन्
तर्कें मने ख़राबे शबो गर्द मुबातिला कुन्।
माएमो मौज सौदा शब ता बिरोज़ तनहा,
ख्वाही बया बबख़शा ख्वाही बिरौ जफ़ा कुन्।
बर शाहे खूबरूयां वाजिब वफ़ा न बाशद,
ऐ ज़र्द रूए आशिक़! तू सब्र कुन् वफ़ा कुन्।
(ईं दर्दरा दवा कुन)

और भी अच्छी अच्छी ग़ज़लें मौलानाकी बनाई दीवाने तबरेज़ीमें पाई जाती हैं। फ़ारसी भाषाके विद्वान् पाठक उस ग्रंथमें देखनेका कष्ट उठावें। इस ग़ज़लको यहाँ लिखनेका हमारा उद्देश्य केवल इतना ही है, कि यह जतला दिया जावे, कि

मौलाना एक अच्छे कवि भी थे और ऐसी अच्छी कविता करते थे, कि हर दिल रखनेवाला दर्दसे बेताब हो उठता था। वास्तवमें कवि होनेसे सरस काव्यका कवि होना कहीं अधिक प्रतिष्ठाका पात्र होना है। मौलाना कविता करते थे; पर उनकी कविता समय बरबाद करनेवाली नहीं होती थी और न ऐसी होती थी, कि उसका प्रभाव न पड़े, अथवा पड़े तो साधारण लोगोंपर ही पड़े; बल्कि उच्च-कक्षाके विद्वान् भी उनकी कवितासे लाभ उठाते थे। यह सब इसीलिये, कि वह सरस काव्यके वक्ता और लेखक थे।

मौलानाने मसनवी क्यों बनाई?

मसनवी जिसके सात दफ्तर हैं और इतनी बड़ी पुस्तक है, कि जो श्रीमद्भागवतसे किसी प्रकार कम आकारवाली न होगी, मौलानाने क्यों लिखी? इस प्रश्नपर विचार करते हुए हमें यह अवश्य मान लेना चाहिये, कि कोई न कोई ऐसा कारण अवश्य था, जिससे प्रेरित होकर मौलानाको इस बृहत्काव्यकी रचना करनेपर बाध्य होना पड़ा। वह कारण यद्यपि कई हैं तथापि यहां हम दो एक ही कारण दिखलानेकी कोशिश करेंगे।

पहला और मुख्य कारण—मौलानाके एक घनिष्ठ मित्र और एकान्त प्रेमी हसामुद्दीन चिलपी नामक थे, जो सदा मौलानाके साथ रहा करते थे। इन्होंने कई बार प्रेरणा की, कि मौलाना! आप ऐसी पुस्तक रचें कि मेरी आत्माको तसल्ली हो और दूसरे लोग भी ज्ञानकी बातोंसे लाभ उठाकर कृतकृत्य हों। यद्यपि

मौलानाने प्रतिषेध किया, तो भी हसामुद्दीनकी प्रीति और मित्रताने आख़िर एक ऐसा समय ला दिया, कि मौलाना लिखने-पर उतारू हो गये। इसी विवशताको मौलानाने स्वयं अपने शब्दोंमें मस्नवीके अन्दर स्थान-स्थानपर जतलाया है। मस्नवीके प्रत्येक दफ्तरके आरम्भमें हसामुद्दीनको सम्बोधित कर किसी भी प्रकरणको शुरू किया गया है। यही स्पष्ट प्रमाण है, कि चिहपी महोदयके प्रेमके कारण ही मौलानाने मस्नवी लिखी।

दूसरा कारण यह है कि 'हदीक़ा' और अत्तारके काव्यमें जो विषय वर्णन किया गया था, सो था तो अवश्य उपयोगी; पर त्रुटि यह थी कि सम्पूर्ण न था और न ऐसा रोचक या दिलचस्प था कि सर्वसाधारण पढ़ सकते। मौलाना और उनके मित्रोंने यह त्रुटि देख निश्चय किया कि ऐसी पुस्तक तैयार करनी चाहिये, जो आचारकी शिक्षा देते हुए ज्ञानके सिद्धान्तोंसे भरी हो और ऐसी दिलचस्प हो कि प्रत्येक पढ़ा-लिखा या मूर्ख समझ सके। बस, मौलानाने इस त्रुटिको पूरा करनेके लिये लेखनी उठाई और मस्नवीको प्रकट कर दिया। हकीम सनाई और अत्तारकी पुस्तकोंको ही मौलाना अपने स्वाध्यायमें रखा करते थे। इसीलिये उनके भाव और शब्द उपरोक्त महानुभावोंके ग्रन्थों-से मिलते-जुलते दिखाई देते हैं और जबाने हालसे यह कहते दिखाई देते हैं कि 'मस्नवी रूम' अत्तार और सनाईके सूत्रोंकी वृहत् व्याख्या है। हम इस स्थानपर एक पद्य उद्धृत करते हैं। इसलिये कि, हमारे इस वचनकी सत्यता प्रकट हो जावे।

हकीम सनाईने' अपने 'हदीक़ा' में आत्माके स्वरूपको वर्णन करते हुए कहा है कि—

रूह बा अक्लो इल्म दानद ज़ीस्त
रूह रा पारसी ओ ताज़ी नीस्त।

मौलानाने इसी भावको कुछ शब्दोंको बदलकर यों कहा, कि

रूह बा अक्लस्तो बा इल्मस्तो यार
रूह रा बा ताजिओ तुर्की चेह कार।

तात्पर्य यह है, कि आत्मा अक्ल और इल्म रखता है। आत्माको ताज़ी और तुर्कीसे क्या काम है अर्थात् आत्माको किसी देश-विशेषके सम्बन्धसे सरोकार नहीं है। वह तो सब प्रकारके सम्बन्ध और संसर्गोंसे दूर है और केवल 'ज्ञान' गुण रखनेवाली चीज़ है।

सनाईने हदीक़ाको शुरू करते समय 'नै' बांसुरीकी कथा लिखी है और कहा है कि—

नालाए नै अज़ दर्द ख़ाली नेस्त
(बांसुरीका क्रन्दन दर्दसे ख़ाली नहीं है।)

मौलानाने मस्नवीको शुरू करते समय नैकी विशेष सहायता ली है और कहा है, कि वह जुदाईका रोना रो रही है।

बिशुनवाज़ नै चूं हिकायत मीकुनद
वज जुदाई हा शिकायत मीकुनद।

पहुंच-पहुंचमें फ़रक़ है—सनाई और मौलानाकी पहुंचमें बड़ा अन्तर है—गोया एक किसीको धुँधलासा दिखाई देता है और दूसरा साफ़ २ देख रहा है।

यह नियम है, कि किसी भी वस्तुमें गुण ही गुण नहीं, होते बल्कि यदि सौ गुण हैं, तो कमसे कम एक अवगुण भी हुआ करता है। मस्नवीमें भी गुणोंके साथ अवगुण हैं। एक दो अवगुण मौलानाके जीवन-कालमें स्वयं बिगड़े दिलोंने पेश किये थे, जिनका उत्तर मौलानाने स्वयं मस्नवीमें दिया है। कुछ लोगोंने कहा कि मस्नवीमें मिथ्या कथायें—शेर, तोता आदिकी लिख रखी हैं। ऐसी झूठी कहानियोंके लिखनेसे सिवा मिथ्या व्यवहारके और क्या रखा है—इस आक्षेपका उत्तर मौलानाने यह दिया है।

ख़ुशतर आं बाशद कि राज़े दिल बरां
गुफ्ता आयद दर हदीसे दीगरां।

अर्थ—अच्छा यह है, कि दिलवरोंका राज़ दूसरोंकी ज़बानी खुले। मौलाना कहते हैं, कि इन कथाओंके लिखनेका अभिप्राय यह है, कि इन कथाओंके पात्रोंके नामसे जो हम कहना चाहते हैं, कह जावें। हमारा मतलब यह तो नहीं, कि यह पशु-पक्षी बोलते और इस प्रकारकी बुद्धिमानीकी बातें करते थे ; बल्कि हम तो इनका नाम लेकर किसी और ही बातको कहना चाहते हैं। क्योंकि यही एक ऐसा तरीक़ा है, कि अपनी हार्दिक बात अच्छीसे अच्छी तरह कही जा सकती है।

लोगोंने कहा, कि आपकी मस्नवीमें कोई क्रम नहीं है—एक दफ़्तरका दूसरे दफ़्तरसे कोई सम्बन्ध नहीं और न एक कथाका दूसरी कथासे कोई लगाव प्रतीत होता है। हमें तो ऐसा मालूम होता है, कि तुम्हारी यह किताब बे सिर-पैरके ख़यालात-की एक पोटली है, जिसमें एक प्रकरणका दूसरे प्रकरणसे कोई सम्बन्ध नहीं है। मौलाना उत्तर देते हैं कि—

चूं किताबुल्लाह बियायद हम बिरां
ईं चुनीं ताना ज़न्द आं काफ़िरां।

मतलब यह है, कि—जब कुरान आया था, तो काफ़िरोंने उसपर भी यही ताना मारा था—आक्षेप किया था। मौलानाने अपनी मस्नवीपर किये आक्षेपोंको वही स्थान दिया है जो मुहम्मद साहिबने कुरानपर किये आक्षेपोंको दिया है। यह उत्तर, कि तुम श्रद्धाहीन हो,—काफ़िर हो, मस्नवीकी उत्तम बातोंपर विचार नहीं करते, चाहिये, कि ध्यानसे देखो और उपदेश ग्रहण करो। देखा जावे, तो कुरानसे मस्नवीकी तुलना केवल उसके लेखक मौलानाने ही नहीं की है बल्कि और विद्वानोंने भी मस्न-वीको कुरानका दरजा दिया है। मशहूर है—मौलाना जामी बड़े प्रसिद्ध विद्वान हुए हैं। उनकी ग़ज़लोंका मुसलमानोंमें बड़ा सम्मान है और उनका स्थान भी बहुत उच्चकोटिके तत्त्ववेत्ताओं-में माना जाता है। वही अपनी पुस्तकमें मस्नवी रूमके बारेमें लिखते हैं। जामीका यह पद्य कि—

मस्नवीए मौलवीए मानवी
हस्त क़ुर आं दर ज़ुबाने पहलवी।
मन चिगोयम वस्फ़ आं आली जनाब
नेस्त पैग़म्बर वले दारद् किताब।

भाव यह है, कि मौलाना रूमकी 'मस्नवी मानवी' जो है सो पहलवी--फ़ारसी भाषाका क़ुरान है। मैं मौलानाकी क्या तारीफ़ करूँ? मैं तो यह समझता हूं, कि वह यद्यपि पैग़म्बर नहीं थे, तथापि वह ईश्वरीय शक्ति रखते थे।

मस्नवीको क़ुरानका दर्जा देकर एक कट्टर मुसलमानने सचमुच उदारता और गुण-गौरवका उचित तथा प्रशंसनीय भाव दिखाया है। यदि इसी तुलनाको कोई अन्य मतावलम्बी कहता, तो सम्भव है, कि मस्नवी इतना आदर न पाती।

मौलानाके सम्बन्धमें कुछ बातें

मस्नवीके बारेमें कुछ कह चुकनेपर आवश्यकता है, कि मौलानाके लिये भी कुछ कहा जावे। मौलाना अद्वैतवादके पक्के भक्त थे। उनके ग्रंथमें इस सिद्धान्तकी ख़ासतौरसे बू आती है और सच तो यह है, कि उनको यह वेदान्ततत्त्व भारतीय महात्माओंकी संगतिसे प्राप्त हुआ था, यद्यपि हमारी अत्यल्प अन्वेषणासे यह सिद्ध होना असम्भव नहीं, तो कठिन अवश्य है, तथापि हम कुछ इस प्रकारके अनुमान अवश्य देना चाहते हैं, जिनसे मौलानाका भारतसे सम्बन्ध सिद्ध हो।

(१) अद्वैतवाद और आत्मवादकी जन्म-भूमि अरब और कुरान नहीं है अपितु भारत और वैदिक साहित्य है। मौलानाके विचार वेदान्तसे सम्बन्ध रखते हैं। अतः आवश्यक है, कि वह भारतीय महात्माओं या उनके साहित्यसे परिचित हों। चुनांचे उनकी मस्नवीमें जो शेरकी कथा लिखी गई है, वह हूबहू संस्कृतके प्रसिद्ध नीतिग्रन्थ पञ्चतन्त्रसे उद्धृत की गई है। मस्नवीका जो लेखन-प्रकार है, वह भी पञ्चतन्त्रकी तरह है। तोतेकी कथा लिखकर भारतसे व्यापारका पता भी दिया गया है तथा वेदान्तके जिन पारिभाषिक शब्दोंका मौलानाने उल्लेख किया है, वह शब्द अरबी और कुरानके किसी व्याख्याकारने मौलानासे पूर्व प्रयुक्त नहीं किये हैं, वह शब्द यदि भाषा या साहित्यमें पाये जाते हैं, तो वह संस्कृत और वेदान्त-साहित्यके हैं। इनसे पता लगता है, कि मौलानाको यह वेदान्त-रत्न अवश्य भारतीय कृपासे प्राप्त हुआ था।

(२) मौलाना पुनर्जन्मके माननेवाले थे। उनका यह विचार भी भारतीय दर्शनशास्त्रसे सम्बन्ध रखता है। क्योंकि उनसे पहले अरबके कौरानिक विद्वान् यह विचार स्थिर नहीं कर पाये थे। यद्यपि मुसलमान पुनर्जन्मको नहीं मानते और इस सिद्धान्तको बुरा समझते हैं, तथापि मौलानाने अपनी उदारताका परिचय देते हुए इस सिद्धान्तकी सत्यता कई प्रकारसे स्वीकार की है। इन्हीं दो कारणों—अद्वैतवाद और पुनर्जन्मपर विश्वास रखनेसे मुसलमानोंने मौलानाको काफ़िरतक कह दिया था

और इसका खूब विरोध भी किया था। हमें स्मरण आता है, कि मौलाना रूमके गुरू शमस तबरेज़ भी इन्हीं उत्तम भावोंका उपदेश करनेके कारण क़तल कर दिये गये थे और इन महात्मा-के उपदेशोंको ही मौलानाके 'नै' शब्दका अर्थ मसनवीके टीका-कारोंने किया है। शमस महात्मा निश्चयसे भारतमें आये थे और यहांके योगी, वेदान्त-विशारद ज्ञानी सज्जनोंसे सत्संग कर गये थे। बस, इसीसे पता चल जाता है, कि मौलानाके विचार अद्वैतवाद और पुनर्जन्मकी तरफ़ क्यों झुके।

कई एक चालाकोंने अपनी मक्कारीसे मौलानाके विशेष २ विचारोंको, जो कुरानके ख़िलाफ़ थे, निकाल डालनेकी घृणित चेष्टा की है जैसे—

हफ्त सद हफ्ताद क़ालिब दीदा अम्।
(मैंने अनेक जन्म घूमे)

इत्यादि पद्य पुनर्जन्मपर आज कलकी छपी हुई मसनवीमें नहीं मिलते मगर पुरानी मसनवीमें यह वचन पाये जाते हैं। मौलाना-के सम्बन्धमें और अधिक न कहकर हम अपने इस कथनको जो प्रस्तावनाके रूपमें लिखा गया है, समाप्त करते हैं और आशा करते हैं, कि प्रेमी पाठक इस पुस्तकको ध्यानसे पढ़ेंगे।

विनीत—

जगदीश चन्द्र वाचस्पति

गोन्दवाला ज़ि० अमृतसर।

मौलाना रूम

और

उनका काव्य

प्रथम खण्ड

मौलानाका जीवनचरित्र

मौलाना रूम का पूरा नाम मौलाना मुहम्मद जलालुद्दीन रूमी है। मौलानाके पिताका नाम शेख़ बहाउद्दीन और जन्मस्थान बलख़ (वाह्लीक देश) था। मौलानाके पिता अपने समयके अद्वितीय विद्वान् हो गये हैं। ख़ुरासानसे लेकर बग़दाद और तातारतकसे इनके पास फ़तवे (व्यवस्थापत्र) आते थे। तत्कालीन राजा भी समयानुसार सेवामें उपस्थित होता था। प्रसिद्ध भाष्यकार इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी कभी २ मुहम्मद ख़्वारज़मशाहके साथ शेख़ महोदयका उपदेश सुनने जाया करते थे और उनसे धर्म-चर्चा किया करते थे। इमाम महाशयके विचार यूनानके वैज्ञानिकोंसे मिलते

जलते थे पर शेख साहिब कट्टर धार्मिक थे, वह कभी धर्ममें विज्ञानका प्रवेश न होने देना चाहते थे। इसी कारण एक दूसरे-के मतका प्रतिवाद करते रहते थे।

एक दिनकी बात है कि शेख़ अपने व्याख्यान-कौशलसे लाखों मनुष्योंको एकत्रित कर धर्मके किसी तत्त्वका मनोहर उपदेश कर रहे थे कि इमामके साथ ख़्वारज़मशाह आ निकले, देखा तो अद्भुत दृश्य है। राजाको बड़ा शोक तथा आश्चर्य हुआ। इमाम साहिब भी ऐसे समयकी ताकमें रहते थे, झट बोल उठे कि—'यदि अभीसे रोक थाम न की तो भविष्यत्में कठिनाई पड़ेगी। राजाने इमामका भाव समझ लिया और तत्काल खज़ानेकी कुञ्जियां शेख़ साहिबके पास भेज दीं और कहला भेजा कि राज्यकी सामग्रीमेंसे मेरे पास केवल यही रह गया है सो वह भी आप ही रखिये। शेख बहाउद्दीनने उत्तर दिया कि बहुत अच्छा! बृहस्पतिवारको उपदेश देकर चला जाऊंगा। अगले दिन अपने प्रतिज्ञानुसार शेख़ने शहरको त्याग दिया, ३०० विद्वान् साथ थे। राजा बड़ा पछताया पर यह नहीं माने और बराबर अपने प्रणपर दृढ़ बने रहे। जहां जहां गये लोग दर्शनोंको आते थे। इसी प्रकार चलते चलते ६१० हिजरीमें नेशापुर पहुंचे। ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन अत्तारने जब सुना तो मिलनेके लिये आये। बालक जलालुद्दीन (मौलाना रूम) की आयु उस समय छः वर्षकी थी। ख़्वाजा साहिबने जो इस बालकका सुन्दर मुखड़ा और भव्य मस्तक देखा तो अत्यन्त प्रसन्न

हुए और शेख़ साहिबसे बोले—'इस अनमोल रत्नकी रक्षा करना। इतना कह अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ 'मस्नवी अत्तार' बालकको भेंट किया।

शेख़ पुत्रसहित नेशापुरसे चलकर बग़दाद पहुंचे। बग़दादसे हजाज़ और शाम होते हुए आक़ शहरमें एक वर्ष निवास किया और वहांसे आगे बढ़कर लारन्दा नगरमें सात वर्ष निरन्तर रहे। जहां कहीं जाते थे जिज्ञासु लोग धर्म-ज्ञानके लिये बराबर आते थे और अपनी तृप्ति कर अन्यत्र प्रसिद्धके कारण बनते थे। बालक जलालुद्दीनका पठन-पाठन भी निर्विघ्न चल रहा था। जलालुद्दीनकी आयु जब १८ वर्षकी हुई तो इसी नगरके एक विद्वान्‌की कन्यासे विवाह भी हो गया। कुछ दिनोंके पश्चात् मौलाना जलालुद्दीन रूमीके घर सन्तान उत्पन्न हुई जिसका नाम सुल्तान वलद रखा गया।

ख़्वारज़मशाहके पश्चात् बल्ख़का राजा इलाउद्दीन केक़बाद राजसिंहासनपर बैठा। उसको जब शेख़ बहाउद्दीनके अपमानका पता लगा तो बहुत दुःखी हुआ और दूत भेजे कि महाराजको यहां बुला लावें। ६२४ हिजरीमें पुत्र-पौत्र सहित शेख़ साहिब अपनी जन्मभूमि क़ौनियामें आ गये। राजाने बड़ा आदर-सत्कार किया, यहांतक कि सदा उनको प्रसन्न रखता रहा, और उनके धर्म-उपदेशोंसे लाभ उठाता रहा।

शेख़ साहिबका जीवन-काल ६२८ हिजरीमें समाप्त हो गया। मृत्युसे पहले शेख़ने अपने पुत्र मौलाना रूमको सैयद बुर्हानु-

द्दीनके हवाले कर दिया और यह कहकर कि इसकी रक्षा करते रहना अपनी अन्तिम सांस ले प्राण त्याग दिये।

पिताकी मृत्युके पश्चात् मौलानाने सैयद बुर्हानुद्दीनसे सम्बन्ध जोड़ा और पिताके आज्ञानुसार ही सैयद साहिबकी सेवामें लगे रहे। एक दिन मौलानाकी परीक्षा ली गयी तो पता लगा कि वे सांसारिक विद्याओंके पूरे पण्डित हैं। यह जान सैयद महाशय बड़े प्रसन्न हुए और बोले कि व्यावहारिक विज्ञान तुम अच्छी प्रकार जान गये हो। अब तुम्हारी इच्छा हो तो परमार्थ विज्ञान भी तुम्हें सिखाऊं क्योंकि यही विद्या है जो तुम्हारे पिताने मुझे अमानत दी थी। मौलाना यह सुन इस अद्भुत पैतृक सम्पत्तिको प्राप्त करनेके लिये बड़े ही लालायित हुए और सानुरोध कहने लगे कि यह तो मुझे अवश्य दीजिये। इसके पश्चात् मौलाना सैयद साहिबके पास नौ वर्षतक ब्रह्मविद्याका अध्ययन करते रहे। जब यहांसे निवृत्त हुए तो गुरुकी आज्ञासे दमिश्क और हलबके प्रसिद्ध विद्यापीठोंमें अध्यात्म विद्याके पूर्ण विद्वान् होनेके लिये चले गये और बड़ी सावधानीसे विद्या प्राप्त करके सद्गुरु-के दर्शनार्थ उनके स्थानपर पहुंचे। सैयदने जब देखा और परीक्षा ली तो आश्चर्य-चकित रह गये और सहसा बोल उठे कि तू तो पितासे भी बढ़ गया! यह सुन सैयद गुरुको मौलानाने साष्टाङ्ग प्रणामकर अपनी नम्रताका परिचय दिया।

सैयद साहिबने जो कुछ अध्यात्म विद्यामें प्राप्त किया था वह मौलानाके पितासे ही प्राप्त किया था। इस सम्बन्धसे सैयद

और मौलाना परस्पर भाई होते हैं। और मौलानाने जो प्राप्त किया वह सैयद साहिबसे, इस विचारसे गुरु शिष्यका सम्बन्ध भी निश्चित होता है। इन दोनों सम्बन्धोंका ही यह परिणाम था कि दोनोंमें अत्यन्त प्रेम था। कहीं २ तो ऐसा प्रतीत होने लगता है कि यह घनिष्ठ मित्र हैं। परस्पर सत्कार बहुत ही विलक्षण प्रकारका प्रतीत होता है—यदि सैयदको पता लगता कि मौलाना चले आते हैं तो अपना स्थान छोड़ उनके लिये अगुवाईको आते और गले लगाते। इसी तरह मौलानाको पता लगता कि सैयद आ रहे हैं तो आसन छोड़ जिस अवस्थामें होते वैसे उठ पड़ते और चरण स्पर्श करते।

मौलानाकी विद्या और सदाचारने इतनी ख्याति प्राप्त की कि ४०० कोसतकसे लोग विद्याध्ययन और व्यवस्था लेने इनके पास आते थे—बड़े २ विद्वान्, धनी और विद्यार्थियोंका आना जाना बना रहता था।

मौलानाने यद्यपि व्यावहारिक तथा पारमार्थिक दोनों विद्यायें पढ़ी थीं और पाठन भी कई विद्यालयोंमें किया था पर सत्य यह है कि अध्यात्म विद्या पढ़के भी उस मार्गमें प्रवृत्त नहीं हुए थे, दिन रात संसारके धन्धों और व्यवस्थापत्रोंमें ही लगे रहते थे और इस प्रकार अपने आचरणसे व्यावहारिक विद्याका ही सम्मान करते थे।

ब्रह्म-विद्याका ऐसा अपमान देख फारस देशके परम कारुणिक महात्मा 'बाबा कमालुद्दीन'ने अपने प्रख्यात शिष्य ब्रह्मनिष्ठ

"शमसतबरेज"को प्रेरणा की कि क़ौनिया (मौलानाका स्थान) जाकर मुर्देको जीवित कर आवे—मौलानाको संसारपङ्कसे निकाल लावे।

एक दिनकी बात है कि जब मौलानाकी आयु चालीस वर्षकी थी तब दूर २ देशोंसे अर्थार्थी प्रतिष्ठित लोग मौलानासे किसी विषयमें व्यवस्था लेने आये। अनुमानतः ५०० लोगोंकी सभा होगी। यह लोग ध्यानपूर्वक अपना २ कार्य कर रहे थे कि अचानक एक साधु वहां आ निकले, देखा तो सैकड़ों पुस्तकें लिये मौलाना बड़े अभिमानमें अकड़े बैठे हैं और शिष्यजनोंकी मूर्खताका अनुचित लाभ उठा धन-देवताकी उपासना कर रहे हैं। झटपट भीड़को चीरकर देखते २ आगे बढ़ गये और मौलानाके पास जा खड़े हुए। मौलानाने देखा कि पांवमें धूल और गोबर लगा है, वस्त्र फटे हुए और मैले हैं, बोले—कोई है, इस पागलको धक्के देकर निकालो। इस दुर्व्यवहारसे साधुको पता लग गया कि यही वह मुर्दा है जिसे जिन्दा करनेको मैं भेजा गया हूं। मौलाना बड़ी घृणाकी दृष्टिसे देख रहा था इतनेमें पुस्तकोंकी ओर हाथ बढ़ाकर साधुने पूछा कि यह क्या है। मौलानाने क्रोधपूर्वक उत्तर दिया—'यह वह है जिसे तुम नहीं जानते,—मौलानाका यह विचार था कि यह असभ्य क्या जाने कि यह क्या है। यदि कोई शिक्षित होता तो पूछता ही क्यों! यह मूर्ख है, इसी कारण पागलपनसे बहकी सी बातें करता और कपड़ोंको खराब करता यहांतक बढ़ आया है।

शिष्योंने जब देखा कि मौलाना क्रोधमें हैं उठकर साधुको बाहर निकालनेको उद्यत हुए, उसी समय क्या देखते हैं कि सब किताबोंमें आग लग गयी है। लोग बुझानेको दौड़ेपर उनके आने-तक सब पुस्तकें भस्म हो चुकी थीं। सबने हाय तोबा मचाना आरम्भ किया। मौलाना रो रहे थे कि सारी उमरका पढ़ा-पढ़ाया सत्यानाश कर डाला। उसी समय साधुने धरतीपर पांव मारा। लोग चौंके तो क्या देखते हैं कि पुस्तकें ज्योंकी त्यों पड़ी हैं। मौलानाने आश्चर्य-चकित हो साधुसे पूछा कि यह क्या? साधुने कहा कि 'यह वह है जिसे तुम नहीं जानते?' यह कह साधु तो वहांसे चले आये पर मौलानाकी अद्भुत ही दशा हो गयी—उसे खाना-पीना और दूसरे कार्योंसे घृणा हो गई, व्यवस्थापत्र देनेका कार्य बन्द हो गया। लोगोंने पूछा कि महाराज! कोई कष्ट हो तो औषधि करें, योग्य वैद्य बुलावें, जो आज्ञा हो कहिये वैसा ही करें। जो आता यही कहता पर मौलाना सबको एक ही शब्द कहते, "शमस"।

चारों तरफ मशहूर हो गया कि शमस तबरेज़ने मौलानापर जादू कर दिया है। इधर शमसको ढूंढ़ने मौलानाके सेवक लोग भी देश-देशान्तरोंमें पहुंचे पर किसीको भी पता न लगा।

शमस तबरेज़ यह कृत्यकर सीधे फारिस देशमें अपने गुरुके पास जा पहुंचे और सब बातें सुनायीं। गुरुने यह सुन प्रेममय आशीर्वाद दिया।

मौलानाके वैराग्यका उपरोक्त वर्णन प्रसिद्ध प्रामाणिक ग्रन्थ

'जवाहिरे मजिया' के आधारपर लिखा गया है। पर इसी बारेमें और भी बहुतसी कथायें दन्तकथाओंके रूपमें प्रचलित हैं। प्रसिद्ध यात्री 'इब्न बतूता' ने अपनी यात्रा-पुस्तकमें कई और भी बातें इसके सम्बन्धमें लिखी हैं। पर सबसे प्रामाणिक निर्णय 'सिपह-सालार' का माना जाता है। यह वह व्यक्ति है जिसने चालीस वर्ष निरन्तर मौलानाका सहवास किया है। इसलिये उसकी सम्मति प्रामाणिक और युक्तियुक्त भी प्रतीत होती है। उसने इस विषयमें यह लिखा है कि—

शमसुद्दीनके पिताका नाम इलाउद्दीन था और इनकी जन्मभूमि फारिस देशका प्रसिद्ध नगर तबरेज़ था। शमसने व्यावहारिक विद्याका अच्छी प्रकार अध्ययन करके ब्रह्म-विद्याकी प्राप्तिके लिये बाबा कमालुद्दीन जुन्दीकी शरण ली और आत्म-विद्याके सब रहस्योंका परिज्ञान प्राप्त किया। जब वे वहांसे निवृत्त हुए तो पर्यटन आरम्भ किया। साधारण साधुओंके समान वे भिक्षा वृत्तिसे निर्वाह नहीं करते थे प्रत्युत व्यापारियोंके रूपमें नगर नगर घूमा करते थे। जहां कहीं जाते धर्मशाला या सरायमें ठहरते और अपने कमरेमें रातभर समाधि लगाये रहते, आजी-विकाके लिये आजारबन्द आदि बुन लेते और बेचकर अपना निर्वाह कर लिया करते। एक समय उन्होंने प्रार्थना की कि हे प्रभो! कोई ऐसा व्यक्ति मिले जिसे परमार्थकी उत्कट अभिलाषा हो ताकि मैं उसका उद्धारकर पुण्यका भागी बनूं और ऋषि ऋणसे उऋण होऊं। कहते हैं कि इतनेमें परोक्षसे आकाशवाणी

हुई कि 'रूमको जावो !' वे यह सुन उसी समय रूमकी ओर चल दिये। कुछ कालके पश्चात् जब वे क़ौनिया पहुंचे तो रात हो गई। जिस सरायमें वे उतरे थे उसके आगे एक पक्का चबूतरा था। नगरके विद्वान् तथा धनपति सायंकाल आनन्द मनानेके लिये प्रायः यहीं आया करते थे। शमस तबरेज़ अभी आकर बैठे ही थे कि एक महा विद्वान् चबूतरेको ओर आता दिखायी दिया। लोगोंने देखा तो चरण-वन्दनाके लिये दौड़ पड़े। शमसने देखकर अनुमान किया कि अवश्य यह वही व्यक्ति है जिसके लिये मैं यहां आया हूं। ज्योंही मौलाना आगे बढ़े, देखा तो कोई विलक्षण मूर्ति प्रतीत हुई। शमसने भी देखा। इस प्रकार इन दोनों प्रतिभाशाली विद्वानोंकी जब चार आंखें हुई तो चुपसे रह गये। कुछ देर बराबर ऐसाही रहा मानों आंखोंसेही बातें हो रही थीं। जब यह हो चुका तो शमसने मौलानाके परीक्षास्वरूप यह प्रश्न किया कि "हजरत बायुजेद बुस्तामी" के इन दो विरुद्ध वाक्योंका क्या समन्वय है ? एक तरफ तो यह हाल था कि खरबूजा नहीं खाया इस ख्यालसे कि मुहम्मद नबीने इसे कैसे खाया होगा अर्थात् एक तरफ़ हज़रत मुहम्मदके इतने अनुयायी हैं कि जिसको उसने नहीं खाया उसे खानेसे इन्कार करते हैं और दूसरी ओर यह दृश्य है कि "सुबहानी मा आजम शानी" का नारा लगा रहे हैं। हालांकि हजरत साहिब कहते हैं कि मैं दिनमें सत्तर दफा तोबा (क्षमाप्रार्थना) किया करता हूं।

मौलानाने उत्तर दिया कि यद्यपि बायुजेद बड़े भारी महा-

त्मा थे पर तोभी वह एक जगहपर ठहर गये थे। यही कारण है कि वह "सुबहानी—आहा! मेरी कैसी शान है" यह शब्द कह दिया करते। पर हजरत मुहम्मद किसी विशेष स्थानपर नहीं ठहरे थे प्रत्युत ज्यों २ आगेके स्थानोंको प्राप्त करते थे त्यों २ पहिलेके स्थानोंको तुच्छ समझते थे। यही कारण था कि ऊंचे मुकामको पाकर नीचो जगहसे तोबा करते थे। इसी प्रकार बराबर बढ़े जाते थे।

शमसने यह सुनकर मौलानाको अध्यात्म-विद्याके क्रियात्मक गुप्त रहस्य बतलाये और उसी रातसे लेकर ६ मासतक बराबर उसी कोठरीमें समाधिका अभ्यास कराते रहे।

इस कालमें अन्नजलका सर्वथा त्याग रहा और सिवा 'सलाहुद्दीन ज़रकोब' के और कोई नहीं आ जा सकता था।

यही दिन उनके संसार त्यागकर संन्यासधारणके कहे जाते हैं। 'मनाकिबुल् आरिफ़ीन'के कर्ताका कहना है कि यह घटना ६४२ हिजरीकी है। इस हिसाबसे मौलानाकी आयु ३८ वर्षकी होती है। पर कई एकका कथन है कि शमसका दर्शन चालीस वर्षकी आयुमें हुआ। अस्तु!

मौलानाने शमस तबरेज़से जब दीक्षा ग्रहण की तो सर्वत्र प्रसिद्ध हो गया कि शमसने मौलानाको पागल बना दिया है और उसे दीन दुनिया कहींका रहने नहीं दिया, लोगोंने निश्चय कर लिया कि शमसको क़तल कर दें। कहते हैं कि ऐसा ही हुआ भी अर्थात् कुछ कालके पश्चात् शमसको मार डाला गया और मारा भी मौलानाके कट्टर भक्तने!

सच है, जौहरका मूल्य जौहरी ही जानता है, गड़ेरिया क्या जाने ? शमसकी मृत्यु सुन मौलानाका क्या हाल हुआ यह वह ही लोग जानते सकते हैं जिनको सद्गुरुके दर्शन और श्रद्धा प्राप्त हुए हों—मौलाना ऐसे तड़पे जैसे बिना पानीके मछली !

प्रकृति-पूजक स्वार्थान्ध मूर्खोंके इस कृत्यसे मौलानाको महती घृणा, परम वैराग्य उत्पन्न हुआ और तबसे वे सर्वथा एकान्त सेवन करने और अध्यात्म-चिन्तनमें ही लग गये।

मौलानाको जब पता लगा कि लोग शमसको मारना चाहते हैं तो उन्होंने किसी अन्य स्थानमें चले जानेकी कष्टमयी सम्मति दी थी। शमस वहांसे जाकर बाबा साहिबके पास जा पहुंचे। कहते हैं कि इसके कुछ दिन पश्चात् मौलानाने कई आग्रहपूर्ण पत्र लिखे कि दर्शन दें और ऐतिहासिकोंका कहना है कि दो बार शमस फिर भी दर्शन दे गये थे। जब भी आते थे मौलानापर अद्भुत प्रभाव डालते थे मानों मौलानाको उज्ज्वलसे उज्ज्वलतम बना रहे थे।

यद्यपि मौलानाने बहुतसी विद्यायें पढ़ीं और पढ़ायी थीं तथा गुरु भी बहुतसे धारण किये थे पर सच तो यह है कि वह अभी-तक बिल्कुल तिफ्लेमकतब ही थे। हज़रत शमस तबरेज़की कृपादृष्टिसे उनको परमविद्याकी प्राप्ति हुई और मनुष्य-जन्मकी सफलता हुई। इस महान् उपकारको मौलाना सदा स्मरण करते रहे। उन्होंने स्वयं इस वास्तविक उपकारका श्रद्धा-भक्तिसे सम्पन्न होकर एक पत्रमें उल्लेख किया है कि—

मौलानाका ख़त शमसके नाम

"अनादि अनन्त परमात्माका नाम लेकर जिसके ज्ञानरूप प्रकाशकी किरणें सहस्रों गुप्त रहस्योंको खोलनेमें समर्थ हैं यह निवेदन करता हूं कि शमस तबरेज़ीकी कृपासे ऐसे स्थानपर पहुंच गया हूं कि जहांकी हर बात विचित्र और विलक्षण प्रकारकी है। जिस घड़ीसे आप जुदा हुए हैं मैं पतङ्गेकी तरह तड़प रहा हूँ। तेरे प्रकाशकी किरणें जबसे मेरे शरीरपर नहीं पड़ीं शरीर वीरान (अंधकारमय) हो गया है, बाक़ी रहा आत्मा सो उसकी यह हालत है कि उसमें जीवन ही नहीं रहा—मोमके समान हो गया है। जो आप आज्ञा कर गये थे उसी प्रकारसे अभ्यासमें बैठता हूँ और शैतानसे बचता हूं। ऐ शमस! (सूर्य) तेरे प्रकाशसे शाम (शमसका गुरुद्वारा), अरम और दूसरे देश तो सूर्यके न होनेपर भी प्रकाशित रहते हैं पर मेरे इस रूम देशमें तो सूर्यके होनेपर भी तेरे बिना अंधकार ही छाया रहता है। जल्दी आ और मेरे हृदयको अशान्तिके पंजेसे छुड़ा।"

तेरा आज्ञाधारी

मुहम्मद रूम

यह उस पत्रका अनुवाद है जो मौलानाने फ़ारसी भाषामें क़ौनियासे शमसके पास दमिश्क नगर भेजा था जिसे सुलतान वलदकी अध्यक्षतामें एक क़ाफ़ला लेकर गया था।

कहते हैं जब यह लोग शमसके पास पहुंचे तो ऐसी नम्रता-

से प्रार्थना की कि शमसको अपना आनन्द छोड़ उनके साथ चल पड़नेके सिवा कुछ न बन पड़ा।

इसके बाद एक बार मौलाना स्वयं शमसकी सेवामें उपस्थित हुए थे जिसका वर्णन उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तकमें किया है।

सब ऐतिहासिक इस निर्णयपर पहुंचे हैं कि ६४५ हिजरीमें शमसका बलिदान हुआ। इस हिसाबसे मौलानाने दो या तीन वर्षतक गुरुसहवासकर आत्मतृप्तिका लाभ किया।

कुछ दिनके पश्चात् किसीकी ज़ुबानसे 'शमस' शब्द सुनायी दिया। ज्योंही कानमें पड़ा विह्वल हो घरसे निकल खड़े हुए। चलते २ एक स्थानपर रुक गये—क्या देखते हैं कि उनके मित्र शेख़ सलाहुद्दीन ज़रकोब अपनी दूकानपर बैठे चांदीके वर्क़ कूट रहे हैं। मौलानापर इस कूटकी आवाज़का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वहीं खड़े २ छाती कूटने लगे और ऐसे मस्त हो गये कि तन मनकी कुछ सुध न रही। दूसरी ओर शेख़ सदरुद्दीनकी यह हालत हुई कि मौलानाकी यह दशा देख चांदीको बराबर कूटते चले गये और हाथको न रोक सके। ऐसा करनेसे शेख़की बहुतसी चांदी नष्ट हो गयी। जब होशमें आये तो मौलानासे प्रेमालाप किया और सारी दुपहर दूकानपर खड़े २ व्यतीत कर डाली। इसी बीचमें मौलानाके मुखसे यह वाक्य निकले—

यके गञ्जे पदीद आमद अज़ीं दुकाने ज़रकोबी
ज़हे सूरत ज़हे माना ज़हे खूबी ज़ेह खूबी।

शेखने यह सुनते ही अपनी दूकान लुटवानेको कह दिया। दूकान लूट ली गयी और शेख़ साहिब पल्ला झाड़कर मौलानाके पीछे हो लिये।

शमसके पश्चात् मौलानाके सच्चे मित्र यही शेख़ थे जिन्होंने मौलानाको यदि शमस भुलवा नहीं दिया तो याद भी नहीं आने दी। मौलानाका शेख़से वैसाही बर्ताव था जैसा कि शमससे। यही कारण था कि शमसकी जगह शेख़से सलाह ली जाती थी।

जब लोगोंको पता लगा कि आजकल मौलानाने एक निपट मूर्ख ज़रकोबको न केवल मित्र ही बना रखा है अपितु उससे ऐसे पेश आते हैं जैसे शिष्य गुरुसे, तो धूर्तोंने इस बेचारेको भी मार डालनेका निश्चय किया; क्योंकि यह लोग नहीं चाहते थे कि मौलाना जैसा महाविद्वान् एक महामूर्खको मित्र और पूज्य गुरुके समान समझे। वे इसी कारण मौलानाके आध्यात्मिक आनन्दको धूलमें मिलानेके लिये तैयार हो गये। ठीक है—दुनिया नहीं चाहती कि कोई आत्मा परमात्म-शक्तिसे प्रेम करे।

मौलानाने जब सुना कि ज़रकोबको हानि पहुंचानेका निश्चय कर लिया गया है तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ। सबको बुलाकर सत्यकी महिमापर धर्मोपदेश दिया जिसका ऐसा प्रभाव पड़ा कि उनका निश्चय किया कराया दीमक खा गयी। इस प्रकार बेचारे शेख़की जान बची। इसके उपरान्त मौलानाने शेख़से अटूट सम्बन्ध बनानेके लिये एक बड़ा सुगम उपाय ढूंढ़ नि-

काला जिसका परिणाम यह हुआ कि शेख़ ज़रकोबकी कन्यासे मौलानाके ज्येष्ठ पुत्रका विवाह हो गया। इस सम्बन्धके होनेसे परस्पर प्रेममें जहां वृद्धि हुई वहां लोगोंको ज़रकोबको हानि पहुंचानेसे रोक दिया।

इस प्रकार इन दोनोंके दिन आनन्दसे और रातें चैनसे गुज़रती रहीं। एक दिन किसी अकास्मिक घटनाके हो जानेसे शेख़ ज़रकोब रोगग्रस्त हो गये और मौलानासे कहने लगे कि मुझ ग़रीबके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करें कि जिससे यह पक्षी इस पञ्चभौतिक पिञ्जरेसे छूटे। इसी प्रकारकी और बातें करते हुए शेख़की मृत्यु हो गयी और यह क़ैदी आत्मा बड़े उल्लाससे अपने वतनको चला गया।

शमसके बाद मौलानाका यही एक सहायक था। जब यह भी चल बसा तो मौलानाको ऐसा कष्ट हुआ कि जैसा जलके सूख जानेसे मछलीको होता है। जब कभी शेख़की याद आती चिल्ला उठते और बहुत दुःखी होते। एक बार ऐसे ही शेख़का स्मरण हो आया फिर क्या था ख़ूनके आंसू बह निकले। रोते थे और यह वाक्य मुंहसे निकल रहे थे कि—

ऐ ज़ हिज्रां दर फ़िराक़त आस्मां वगुरेस्तह
दिल मियाने खून निशिस्तह अक़्ो जांबगुरेस्तह।

जैसे शमसके साथ दो तीन बरस सुखसे कटे थे वैसे ही शेख़की संगतिमें यह १० वर्ष भी बहुत ही अच्छे कटे।

शेख़ सलाहुद्दीन ज़रकोबकी मृत्युके पश्चात् मौलानाने अपना

साथी हसामुद्दीन चिल्पीको बनाया जो कि मौलानाका प्रधान शिष्य और बड़ा पुण्यात्मा था। यह ऐसा साथी हुआ कि मौलानाकी मृत्युतक बराबर बना रहा और अपने शुभ गुणोंसे अपने पूज्य गुरुको सदा आनन्दित करता रहा। मौलाना इस साथीसे भी ऐसा ही बर्ताव करते थे जैसा ज़रकोबसे। अजनबी कोई देखता तो यही कहता कि चिल्पी गुरु हैं और मौलाना शिष्य। कितना ऊंचा इख़लाक़ है!

इसी जिज्ञासु भक्त (हसामुद्दीन चिल्पी) की प्रार्थना और विशेष आग्रहपर मौलानाने अपना सुप्रसिद्ध मसनवी (काव्य) ग्रन्थ लिखा, इसीको समर्पण किया और इसी धर्मात्माकी बदौलत संसारमें विख्यात हुआ।

जब मसनवीका पहला दफ्तर समाप्त हुआ तो चिल्पीकी विदुषी धर्मपत्नीका देहान्त हो गया। चिल्पी महाशयपर इस मोह और शोकका ऐसा प्रभाव पड़ा कि दो वर्षतक बड़े ही बेचैन और दुःखी रहे। इसी कारणसे इन दो वर्षोंमें मसनवी बिल्कुल बन्द रही। जब चिल्पीको निश्चलता प्राप्त हुई तो मौलानाने भी ग्रन्थ लिखना आरम्भ कर दिया।

एक दिन इसी प्रकार लिखते २ जब छठे दफ्तरपर पहुंचे तब मौलाना ऐसे रोगग्रस्त हो गये कि बचनेकी कोई आशा न रही। उस समय उनके ज्येष्ठ पुत्रने पूछा कि महाराज! ग्रन्थ अपूर्ण रह गया है। बोले, कि इसके आगे अब कोई और पूर्ण करेगा। पर ईश्वरकी कृपासे आप राज़ी हो गये और ग्रन्थको स्वयं ही पूर्ण किया।

इन्हीं दिनों ६७२ हिजरीमें क़ौनियामें बड़ा भारी भूचाल आया जिससे डेढ़ मास बराबर पृथ्वी हिलती रही। लोगोंने समझा कि प्रलय आया चाहती है। आख़िर इकट्ठे होकर मौलानाके पास आये और पूछा कि यह क्या बला है? बोले कि पृथ्वी भूखी है तर लुक़मा खाना चाहती है और ईश्वरने चाहा तो सफल होगी! उन्हीं दिनोंमें कई भजन बनाये जो कि दीवानके नामसे मशहूर हैं।

कुछ दिन बाद बीमार हो गये और बीमार भी ऐसे हुए कि धन्वन्तरि सरीखे वैद्य भी राज़ी न कर सके। इस दुर्घटनाको सुन सब ओरसे मित्र, शिष्य तथा अन्य परिचित लोग एकत्रित हो अन्तिम दर्शन करने आने लगे।

एक दिन रूम और शाम आदिमें प्रख्यातिप्राप्त श्रीयुक्त शेख़ सदरुद्दीन मौलानाके दर्शनोंको आये। उनके साथ उनके सेवक और शिष्य भी ४०० की संख्यामें मौलानाकी सेवामें अन्तिम उपदेश लेनेके लिये उपस्थित हुए। जब सदरुद्दीन क़ौनिया पहुंचे और मौलानाके पास दर्शनार्थ आये तो उनकी अस्वस्थता देख बेक़ाबू हो गये और रोते २ मौलानाके चरणोंपर गिर पड़े। जब होश आया तो पूछा कि महाराज! कैसी हालत है? उत्तर मिला कि बहुत अच्छी! यह सुन शेख़ने रोते रोते ईश्वरसे करबद्ध प्रार्थना की कि मौलानाको स्वस्थता प्राप्त हो। मौलाना बोले कि स्वस्थता आपके लिये स्वीकार हो गई! इधर तो आशिक़ (प्रेमी) और माशूक़में एक पर्दा रह गया है, क्या तुम नहीं चाहते कि यह

भी उठ जावे और प्रकाश प्रकाशमें मिल जावे। शेख़ यह सुन रो पड़े और वहांसे यह निश्चय कर कि कोई दमके मेहमान हैं उठ खड़े हुए। मौलानाने जब शेख़ जैसे विद्वान्के मुंहसे यह शब्द सुने तो बड़े आश्चर्यकारक स्वरमें यह वाक्य बोलने लगे और बराबर बोलते रहे—

चे दानी तू कि दर बातन चे शाहे हमनशीं दारम
रुखे ज़र्रीने मन मङ्गर कि पाये आहिनी दारम।

लोगोंने पूछा कि महाराज! श्रीचरणोंकी स्वर्गयात्राके पश्चात् आत्मविद्याके भण्डारकी चाबी किसको मिलनी चाहिये? श्रीमान्का ज्येष्ठ पुत्र श्री सुल्तान बहाउद्दीन वलदके लिये आज्ञा करें तो बड़ा अच्छा हो! बोले कि सुल्तान तो स्वयं पहलवान है हसामुद्दीन चिलपीको ही यह सत्कार स्वीकार हो।

फिर पूछा कि आपको अन्त्येष्टि संस्कार कौन करावे, यह भी आज्ञा कर दीजिये! उत्तर दिया कि शेख़ सदरुद्दीन।

इतना कह परमात्माका स्मरण करते हुए सूर्यास्तके साथ प्राण त्याग दिये। जिस दिन यह जीवन-यात्रा समाप्त हुई उस दिन सारे क़ौनिया बया रूममें हाहाकार मच गया। कहते हैं रूमकी भूमिपर जैसी वह रात्रि भयानक और दुःखदायिनी थी उसकी नज़ीर इतिहासमें नहीं मिलेगी। प्रातःकाल जब सामग्री तैयार हुई तो अर्थीको उठा श्मशान-भूमिकी ओर जाते समय लाखों मनुष्योंका जन-समुदाय अर्थीके साथ था। बड़े बड़े

धनाढ्य और विद्वान बारी २ से अर्थीको अपने कन्धोंपर उठाते जा रहे थे, कुछ श्रद्धालु रुपये और अशर्फियां न्योछावर कर रहे थे, कुछ भक्त ईश्वरसे मृतककी आत्माको सद्गति प्राप्त करानेहारे मनोहर भजन गा रहे थे और उसके साथ ही शिष्य-मण्डल मौलानाकी परलोकयात्रासे दुःखी हुआ, हृदयविदारक शब्दोंमें रोता और मृतकके गुणोंको याद कराता जा रहा था। इस दृश्यको देखकर हज़ारों रोते २ अन्धे हो गये और सैकड़ोंने अपने वस्त्र फाड़ डाले। बहुतोंने अपने सिरोंपर मिट्टी डाली और बहुतोंने अपनी छातियां कूट डालीं। जब यह वीभत्स, करुणामय दृश्य अर्थीको लेकर श्मशानभूमिपर पहुंचा तो रोते चिल्लाते अर्थीको कन्धोंसे उतारकर नीचे रखा। अर्थीके साथ जहां साधारण लोग थे वहां सामयिक राजा भी था और यहूदी तथा ईसाई भी बराबर साथ थे। प्रत्युत सबसे आगे यहूदी अपनी पवित्र पुस्तक तौरेतका पाठ करते जाते थे। तत्पश्चात् ईसाई इञ्जील सुनाते जा रहे थे। जब सब लोग श्मशानभूमिपर पहुंचे तो राजाने यहूदियोंसे पूछा कि तुम्हारा मौलानासे क्या सम्बन्ध? बोले, कि यदि तुम्हारा (मुसलमानोंका) मुहम्मद था तो हमारा मूसा था। ईसाइयोंने कहा कि यदि तुम्हारा मुहम्मद और मूसा था तो हमारा ईसा था।

सच है—गुणाः पूजास्थानम्।

श्मशानमें सन्दूक बदल दिया गया। जिस सन्दूकमें मृतकके शवको लाये थे उसे तोड़कर पवित्रताके रूपमें लोगोंको भेंट

किया गया। अब सायंकाल हो चुका था। लोगोंने मौलानाकी वसीयतके अनुसार शेख़ सदरुद्दीनको प्रार्थना करने (जनाज़ेकी नमाज़ पढ़ाने) के लिये कहा। शेख़ बेचारेकी यह दशा थी कि काटो तो लहू नहीं—मौलानाकी मृत्युका उसपर यह असर हुआ कि अधमुआ क्या मुर्दा ही हो गया था। फिर भी जैसे तैसे उठा, पर शोकसे पांव लड़-खड़ा रहे थे। लोगोंने सहारा दिया तो हाथ उठाकर बड़े उच्च स्वरसे 'अल्लाह' कहते ही धड़ामसे गिर पड़ा और विलाप करने लगा जिससे सारी जनता सिसक २ कर रोने तथा चीखें मारने लगी। प्रार्थना तो अवश्य होनी थी आख़िर क़ाज़ी सिराजुद्दीनने कर्म कराया।

कहते हैं हज़ारों गुरुके प्यारे ४० दिनतक नित्य प्रति मौलानाकी समाधिपर ज़ियारत करने आते रहे।

यह समाधि आजतक कौनियामें बनी है। बड़ा भारी सदाव्रत (लङ्गर) लगा हुआ है जहां हज़ारों यात्रियों तथा अनाथ और अपाहिजोंको भोजन मिलता है।

मौलानाकी मृत्युके पश्चात् उनके आसनपर हसामुद्दीन चिल्पी आरूढ़ हुए और उनके कामको सम्भाला।

मौलानाके दो पुत्र थे। बड़ेने पिताके चरण-चिह्नोंपर चलते हुए अपना जीवन ईश्वराज्ञामें लगा दिया। इसका नाम सुल्तान वलद था। इसने एक मस्नवी लिखी जिसमें अपने पूज्य-पिताका पूरा जीवनचरित्र वर्णन किया। दूसरेने सूर्यस्वरूप महात्मा शमस तबरेज़की जीवनरश्मियोंको अस्तकर कुलकलङ्की

तिरस्कृत, लोकगर्हित, घृणित उपाधि प्राप्त की थी। इसका नाम इलाउद्दीन मुहम्मद था।

मौलानाके साथी और समकालीन विद्वान भी बड़े सौभाग्य-शाली थे जिनके समयमें रूमकी पवित्र भूमिमें शमससे जलाया हुआ धर्मात्मा रूमीका दीपक प्रकाश करता रहा।

१—संसारप्रसिद्ध शेख़सादी जिन्होंने अपने गुलिस्तां और बोस्तांमें नीतिविद्याका सर्वस्व भर दिया है और प्रसिद्ध प्रसिद्ध भाषाओंमें उनके ग्रन्थोंका अनुवाद भी हो चुका है, एक बार अपने पूज्यगुरु श्रीशहाबुद्दीन सहरवरदीकी दी हुई भेंट-पूजा लेकर मौलानाकी सेवामें उपस्थित हुए थे और मौलानाके चित्ता-कर्षक परमार्थ मार्ग-दीपकसे सदुपदेश लेकर वापस आये थे।

२—सहरवरदी महोदय स्वयं भी शिष्यमण्डल सहित कई बार मौलानाके दर्शनोंको आते थे।

३—प्रसिद्ध ब्रह्मनिष्ठ "बू अली क़लन्दर" जिनकी समाधि पानीपतमें अभीतक क़ायम है तथा जिनकी फ़ारसी भजन-माला लोकप्रसिद्ध है, वह भी कई बार मौलानाकी सेवामें पहुंचते रहते थे।

४—प्रसिद्ध फ़कीर 'श्रीनजमुद्दीन राज़ी' मौलानाके यहां महीनों पड़े रहते थे और परम आनन्दका लाभ उठाया करते थे।

५—प्रसिद्ध ग्रन्थकार 'सदरुद्दीन क़ौनवी' बड़े भारी विद्वान् हो गये हैं। वह भी मौलानाके उपदेशोंको सुनने आया करते थे।

६—उल्लामा 'कुतुबुद्दीन शीराज़ी' जिनका प्रसिद्ध ग्रन्थ दुर्र-

तुत्ताज—दर्शनशास्त्रके सभी तर्कों और रहस्योंसे परिपूर्ण, आज भी मिलता है—पीछे मौलानाके शिष्य हो गये थे।

इन अग्रगण्य महात्माओं तथा विद्वानोंके अतिरिक्त और भी लोग थे जो मौलानासे मिलते जुलते रहते थे तथा मौलाना उनके पास जाया करते थे।

आचार व्यवहार

मौलानाके शुभ गुणोंका स्मरण, श्रवण तथा दर्शनकर शतशः भक्तजन सेवामें आया करते थे। केवल मौलानाके सद्गुणोंसे ही क़ौनियाकी मरुभूमि तीर्थ बन गयी थी—कोई दिन न होता जिस दिन कि सहस्रों नर-नारी महात्माके दर्शनार्थ इस नगरमें न पधारते हों।

मौलानामें सर्वश्रेष्ठ गुण यह था कि वह पक्षपातसे रहित थे, किसी भी मतका क्यों न हो वह उससे घृणा नहीं करते थे। जैसा अपने लोगोंसे प्रेम था वैसा ही बल्कि उससे भी अधिक दूसरोंसे किया करते थे—न मुसलमानोंसे प्रेम और न ग़ैर मुस्लिमोंसे द्वेष ही था। उनके सत्संगमें ईसाई, यहूदी, मुसलमान और मजूसी एक ही निगाहसे देखे जाते थे तथा अमीर ग़रीब भी एक जैसा ही लाभ उठाते थे। यही नहीं अपितु, विद्वान और मूर्खोंसे भी एक ही जैसा बर्ताव करते थे। उनके सदाव्रतमें सबको यकसां भोजन-वस्त्र मिला करता था।

उदारता—उदारता ऐसी थी कि सैकड़ों विद्यार्थियोंको नित्य

विद्या-दान देते और हज़ारों यात्रियों तथा दीन-अनाथोंको भोजन और वस्त्रका दान करते थे। कोई भी बात प्राइवेट (छिपाकर) नहीं की जाती थी—अध्यात्म विद्याके गुप्तसे गुप्त रहस्य भी सरेआम खोले जाते तथा समझाये जाते थे।

भजन-कीर्तन—परमात्माके गुण-गान करनेमें चित्त इतना लगता था कि तन मनकी सुध न रहती थी—साथी गा-बजाकर सो जाते या चले जाते पर आप उसी आसनपर बैठे लीनावस्था-का प्रमाण देते रहते, सन्ध्या (नमाज़) में ऐसा मन लगता कि समय गुज़रता मालूम न होता—कभी २ ऐसा होता कि प्रातः-काल बैठे और सायंकाल हो गया तथा शामको ध्यानावस्थित हुए और सुबहको उठे। अपनी इस लग्नको मौलानाने स्वयं कहा है—

बखुदा ख़बर न दारम् चू नमाज़ मे गुज़ारम्।
कि तमाम शुद रुकूए कि इमाम शुद फ़लाने॥

भक्तिकी ऐसी उमंगें उठतीं कि रोने लग जाते। कई बार रो रोकर आंखें ख़राब कर लेते थे। एक दिन मालूम हुआ कि मौलाना कल शामसे ग़ायब हैं—सारी रात तलाश करते गुज़री मगर कहीं पता नहीं लगा। प्रातः जो ढूंढ़ते २ नदीपर गये तो देखा कि आप आसन जमाए पश्चिमाभिमुख बैठे रो रहे हैं। आंखोंकी बूंदें कपोलोंसे गुज़रकर दाढ़ीपर गिर रही थीं और सरदीके कारण जमती जाती थीं।

सर्व-हित-चिन्तन—एक दिन शिष्यजनोंके साथ बैठे थे कि किसी भक्तने एक मिठाईका थाल भेंट किया। थालको एक तरफ़ रखकर बैठ जावो—यह आदेशकर बात-चीत करने लगे। इसी सिलसिलेमें एक कुत्ता आया और थालमें धरी स्वादिष्ठ मिठाईको खाने लग गया। लोग बातें छोड़ कुत्तेको हटाने लगे। यह देख आप बोले—देखो इस कुत्तेकी भूख तुम्हारी भूखसे ज्यादा थी इसलिये उसने किसीकी भी परवा न कर खाना शुरू कर दिया, इसलिये यह वस्तु इसीकी थी।

एक दिन स्नान करने स्नानागारमें गये, देखा तो और लोग स्नान कर रहे हैं। स्नानाध्यक्षने जब देखा कि मौलाना आ रहे हैं तो एक मनुष्यको निकल जानेको कहने लगा ताकि मौलाना स्नान कर लें। मौलाना यह कहकर कि इनकी ख़ातिर हम निकल जाते हैं उल्टे क़दम वापस हो गये।

एक बारका ज़िक्र है कि वे कुछ शिष्योंके साथ एक तंग गलीसे जा रहे थे कि सामने एक कुत्ता सोते देखा। आप वहीं रुक गये और घण्टों खड़े रहे। आख़िर एक महाशय सामनेसे आये और कुत्तेको हटाया, तब भी आपने कह दिया कि 'नाहक़ इसे तकलीफ़ दी।'

एक दिन बाज़ारसे होकर गुज़रे तो लोग हाथ चूमने दौड़े, एक लड़का जो कुछ काम कर रहा था कहने लगा—मौलाना! ज़रा ठहरिये, मैं भी लाभ उठाऊंगा। आप तबतक बराबर वहीं खड़े रहे जबतक वह आ न गया और उसने सलामकर हाथ न

चूम लिये। संन्यास (फ़क़ीरी) धारणसे पहलेका ज़िक्र है कि एक दिन मौलानाकी धर्मपत्नीने एक दासीको पीट डाला। आपको जब इसकी सूचना मिली तो बड़े नाराज़ हुए और बोले कि अगर यह मालिकिन होती और तू दासी तो बता तू कैसा बुरा भला इसके लिये सोचती।

वे राजा-महाराजा वा अमीरोंके पास आने-जानेको अच्छा नहीं समझते थे। एक दिन कुछ अमीर एक राजाको साथ ले सेवामें उपस्थित हुए और प्रश्नोत्तर करने लगे। यह लोग शंका करते और मौलाना उत्तर देते। इतनेमें किसीने कहा कि महाराज उल्माओं (विद्वानों) को अमीरोंकी अताअत करनी चाहिये! अभिप्राय यह है कि विद्वानोंको मातहत होकर रहना चाहिये। एक बार कहा, दो बार कहा, मौलानाने उत्तर नहीं दिया—मौन साध गये। आख़िर तीसरी बार फिर कहा कि महाराज! कुरानमें लिखा है कि—

"अताअत करो अल्लाहकी, रसूलकी और अमीरों तथा राजाओंकी।"

यह सुन आपसे रहा न गया, बोले कि—मुझे तो अल्लाहकी अताअतसे ही फुरसत नहीं मिलती जो रसूलकी अताअत करूं, फिर अमीरोंका तो कहना ही क्या है।

ठीक है, अगर ग़ौरसे देखा जाय तोईश्वरकी आज्ञाका पालन करना ही महा कठिन है। जो ईश्वरकी आज्ञाओंका पालन कर चुके वह चाहे किसी औरकी मातहती करे पर जो अभी पहले

ही पाठको दुहरा रहा है वह तीसरेको कैसे पढ़ेगा। कैसा विचित्र उत्तर है!

लग्न—ईश्वरसे लौ लगानेवालोंमें इनका दरजा बहुत ऊंचा है। कभी वृत्ति जाग्रत हो जाती तो जिस हालतमें होते ऐसे ही चल पड़ते और महीनों बाहर रहते। यदि कहीं सुन्दर जंगल या एकान्त वीरान जगह देखते तो वहीं रह जाते, किसी ओरसे शब्द सुनायी देता तो रोने, गाने, चिल्लाने तथा नाचने लग जाते।

इन्हीं शुभ गुणोंकी बदौलत इस महात्माने अपने समयमें हज़ारों दुर्जनोंको सज्जन, मूर्खोंको विद्वान, प्रकृतिके दासोंको प्रभु-भक्त बनाया तथा भटकते हुए योगभ्रष्टोंको परमात्मातक पहुंचाया।

महान उपकार है उस दयालु परमकारुणिक परमात्माका जिसकी अपार कृपाका एक बिन्दु मौलाना रूमीके रूपमें रूमके देशमें हज़ारों प्यासोंकी प्यास शांत करके जगतमें प्रसिद्ध हो गया। परमात्मा दया करे कि इस प्रकारके धर्मात्मा प्रत्येक देशमें उत्पन्न हों तथा संसारका कल्याण करते हुए परमार्थके भागी बनें।

दूसरा खण्ड

मौलानाके विचार

मौलानाके विचार यद्यपि इस्लामसे सम्बन्ध रखते हैं तो भी वह इस योग्य नहीं कि उनकी उपेक्षा की जाय। बात वास्तवमें यह है कि मौलाना कई विषयोंमें सर्वथा स्वतन्त्र होकर विचार करते हैं। यही कारण है कि अध्यात्म-विद्याके कई रहस्य खोलकर प्राचीन वैदिक ऋषियोंका स्मरण करा पाते हैं, हमारी इच्छा है कि इस प्रकरणमें मौलानाके उन विचारोंका जो कि उनकी मस्नवीमें सिद्धान्त रूपमें वर्णन किये गये हैं उल्लेख करें जिससे कि सर्व-साधारणको मालूम हो सके कि मौलाना कितने उच्च स्थानपर पहुंचे हुए ब्रह्मनिष्ठ महात्मा थे।

ईश्वरका अस्तित्व

लेखनी लिख रही है मगर हाथ छिपा हुआ है। घोड़ा दौड़ रहा है मगर सवारका पता नहीं। हां! बुद्धिमान् यह समझ सकता है कि कोई भी क्रिया बिना कर्ताके नहीं हो सकती। यदि लेखनीके लिखने और घोड़ेके चलनेसे उनके चलानेवाले कर्ताका

निश्चय हो सकता है तो सूर्य चन्द्रादिका संचालक भी कोई मानना आवश्यक है, बस वह ईश्वर है (१)।

यदि तुम उसको आंखोंसे नहीं देखते हो तो क्या उसके किये हुए कर्मोंको भी नहीं देख सकते! बेशक वह छिपा है मगर उसके काम बिल्कुल जाहिर हैं (२)।

शरीर जो हरकत करता है वह आत्माके कारण ही करता है, यदि तुम आत्माको नहीं देख पाते तो शरीरकी चेष्टासे ही अनुमान करो।

संसारमें नियम पाया जाता है इसलिये इस नियम या तरतीबका कोई न कोई बुद्धिमान् कर्ता होना चाहिये। मौलानाके शब्द यह हैं—'गर हकीमे नेस्त ईं तरतीब चीस्त' अर्थात् यदि संसारका कोई बुद्धिमान् कर्ता नहीं है तो इसमें तरतीब क्यों पायी जाती है (३)।

---

(१) भारतीय नैय्यायिकोंने भी यही युक्ति रूपान्तरमें पेश की है यथा 'भू भूधरादिकं कर्तृजन्यं कार्यत्वात् घटादिवत्०।' वेदमन्त्रमें तो स्पष्ट ही उल्लेख पाया जाता है—'द्यावा भूमिं जनयन्देव एकः' अर्थात् एक परमात्माने ज़मीन आसमानको रचा है और उसीकी प्रेरणासे यह कार्य हो रहा है।

(२) 'विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे०' यजुर्वेद—महान् व्यापक परमात्माके कामोंको देखो कि किस २ प्रकारके व्रतों—अद्भुत कृत्यों—को धारण कर रहा है। एक और स्थानपर अथर्वका मन्त्र है कि—'विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचम्०' परमात्माके कौन २ आश्चर्यजनक काम गिनावें, देखनेवाला हो तो सब कुछ साफ़ मालूम हो सकता है।

(३) भगवान् उदयनाचार्यने अपनी लोकोत्तर पुस्तक न्यायकुसुमाञ्जलिमें इस युक्तिका जोरों समर्थन किया है, विशेषाभिलाषी उसे देखें।

देखो, तीर प्रत्यक्ष है पर कमान छिपा है, पानी छिपा है पर आग मालूम हो रही है। वायु छिपा है पर आंधी प्रतीत हो रही है। क्या कहें जैसे आगसे चिनगारियां पैदा होती हैं वैसे ही ईश्वरसे यह संसार प्रकट हुआ है।

संसारका सर्वोत्कृष्ट पदार्थ सदा अप्रत्यक्ष–छिपा हुआ–होता है। देखो शरीर प्रत्यक्ष है तो बुद्धि सूक्ष्म और छिपी है और आत्मा उससे भी अधिक उत्कृष्ट है और दिखायी नहीं देता तथा किसी इन्द्रियका विषय भी नहीं है (१)।

ऐ यार! जब यह शरीरका नियन्ता आत्मा नित्य है तो इस आत्माका भी नियन्ता परमात्मा क्योंकर नित्य न होगा और वह संसारमें व्यापक होकर क्यों कर न इसका आत्मा होगा (२)।

---

(१) कैसी अद्भुत युक्ति है। ईश्वर वास्तवमें सबसे उत्कृष्ट है यही कारण है कि वह सबसे अधिक सुरक्षित है। उसतक किसीकी न तो पहुंच हो सकती है और न उसको जाना ही जा सकता है क्योंकि हम जिन साधनोंसे जान सकते हैं वह सारेके सारे दुर्भाग्यवश प्राकृतिक हैं। यही कारण है कि उपनिषत्‌ने स्पष्ट कह दिया है कि–'नेदं यदिदमुपासते' अर्थात् इन्द्रियोंसे तुम जिसको जान रहे हो वह वास्तवमें ब्रह्म नहीं है।

(२) बृहदारण्यक उपनिषत्‌के अन्तर्यामि ब्राह्मणने बिल्कुल यही भाव प्रदर्शित किया है कि–'य आत्मनि तिष्ठन् आत्मन्यन्तर्यमपाति यस्यात्मा शरीरम्०' जो आत्मामें व्यापक है, आत्माके अन्दर होता हुआ आत्माको नियममें चलाता है तथा आत्मा जिसका शरीर है वह अन्तर्यामी महा प्रभु परमात्मा है।

ईश्वरका स्वरूप

सूर्यके प्रकाशके सिवा सूर्यकी सिद्धिमें कोई युक्ति नहीं है। सूर्य और कुछ नहीं सिवा प्रकाशपुञ्जके। परमात्मा भी ज्ञान-पुञ्ज है और कुछ नहीं।

हम ईश्वरको यही जान सकते हैं कि 'वह है' (१) यह नहीं जान सकते कि वह कैसा है। जब २ भी लोगोंने यह जानना चाहा तब २ संसारमें लड़ाई युद्ध रचा गया। कहते हैं कि एक एक दिन हज़रत मूसाने एक चरवाहेको यह कहते सुना कि हे प्रभो! तुम कहां हो? यदि तू मुझको मिल जावे तो मैं तेरे बालोंमें तेल डालकर कंघी करूँ, तेरे कपड़ोंसे जुएं निकालूं और तुझको तरह २ के स्वादिष्ठ भोजन खिलाऊं' इत्यादि। मूसा यह सुन चरवाहेको मारनेको दौड़े पर वह भाग निकला। फिर मूसापर वही आयी—अरे मूसा! तूने यह क्या किया कि हमारे प्रेमीको हमसे पृथक् कर दिया, क्या तू इसलिये आया है कि ज़ुदा करावे या इसलिये आया है कि मिलावे। ऐ मूसा! हमने हर एकको उसकी योग्यताके अनुसार बुद्धि और श्रद्धा दी है।

---

(१) कठोपनिषत्में आता है कि 'अस्तीत्येवोपलब्धस्य तत्वभावः प्रसीदति' वह अवश्य है (कोई वजह नहीं कि वह न हो)। इस प्रकारके निश्चित ज्ञानसे ही उसकी उपलब्धि होती है और जब उसकी प्राप्ति हो जाती है तो यह आत्मा भी तत्वभावको पाकर निहाल हो जाता है। और जो लोग यह जाननेमें लगे रहते हैं कि वह कहां है, कैसा है, कितना बड़ा है; वह सचमुच कुछ न पाकर इधर-उधर भटकते ही रहते हैं।

बुद्धिमानों और प्रेमियोंका नियम कुछ और प्रकारका होता है। प्रेमी यह नहीं देखता कि यह बात युक्ति-संगत है। वह तो यह देखता है कि मेरा प्रेमपात्र इससे प्रसन्न हो सकता है या नहीं ?

मेरे नजदीक प्रेमीका दरजा बहुत ऊंचा है। उसे न तो मक्का जाने और हज्ज करनेकी आवश्यकता है और न नमाज ही पढ़नेकी, बल्कि वह तो उस सूरतपर आशिक है जिसके सौन्दर्य-पर सारा संसार पतंगा हो रहा है। मनुष्य है, आज उत्पन्न होता है तो कल मर भी जाता है। लेकिन ईश्वर ऐसा नहीं है। वह न तो पैदा हुआ और न मरेगा तो फिर नित्यको यह मरण-धर्मी मनुष्य क्या समझ सकता है ! उसका तो इतना जानना ही पर्याप्त है कि वह कहां है, कैसा है, कितना है। इसकी आव-श्यकता नहीं क्योंकि यह बातें मनुष्यकी समझसे दूर हैं (१)।

ईश्वरीय ज्ञान

संसारमें तरह २ की वस्तुयें देखकर तरह २ की विद्या दिखायी देती है, कोई किसीके पास और कोई किसीके पास। अब

(१) ईश्वरके सम्बन्धमें यह विचार करना कि वह कहां है सिवा अपना समय बरबाद करनेके और कुछ नहीं है। वास्तवमें मुसलमानोंमें ईश्वर-को सातवें आसमानपर बैठा हुआ माना गया है और हाथ पर आदि माँगने गये हैं। मौलानाके समयमें इसपर बड़ा विवाद हुआ करता था। कुछ लोग जो उदार विचारके जिज्ञासु थे वह इसके विरुद्ध थे पर अन्य ऐसा ही मानते थे। मौलानाने बीचमें पड़कर रास्ता निकाला कि इस प्रकारकी कल्पना ही मत करो।

विचारना है कि यह विद्यायें कहांसे चलीं और किसने सिखायीं। हमारे समयके लोग किसी पूर्व समयवाले विद्वानोंको कहेंगे। इसी प्रकार वह लोग अपनेसे पूर्वके लोगोंको कहेंगे। तो यह सिलसिला जहां जाकर समाप्त होता है वही ईश्वर है और उसीसे सब विद्यायें प्रकाशित हुई हैं (१)। जिसको सबसे पहले ज्ञान मिला उसका शिक्षक—गुरु ईश्वर ही था अतएव आज जो विद्यायें दृष्टिगोचर हो रही हैं उनका आदिमूल आविष्कर्ता परमात्मा ही है (२)।

क्या किसी समय-विशेषमें इक बार ही ईश्वरीय ज्ञान प्रकट हो गया या समय २ पर प्रकट होता रहा। इसमें निश्चय यह है कि ईश्वरके सब काम समयानुसार ही होते हैं—गरमी, सरदी, फल, फूल सभी समय २ पर होते हैं। ईश्वरीय आज्ञायें भी इसी प्रकार समय २ पर आती हैं। देखो नबियों और वलियोंको किस किस समय ज्ञान मिलता रहा। हज़रत मूसाको तूरके पर्वतपर,

---

(१) महर्षि पतञ्जलिने अपने योगदर्शनमें इसी विषयपर बहस करते हुए कहा है कि 'स पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्' अर्थात् वही ईश्वर पहिले समयमें होनेवाले गुरुजनोंका भी गुरु है क्योंकि उससे आगे कालकी गति नहीं जो यह कहा जा सके कि उसका गुरु कौन है।

(२) इसी आशयपर ऋषि दयानन्द भी पंहुचे हैं। उन्होंने लिखा है कि सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्यासे जाने जाते हैं उन सबका आदिमूल परमेश्वर है। महर्षि व्यासने भी इसी सत्यताका निश्चय किया है और वेदान्त दर्शनमें लिखा है कि 'शास्त्रयोनित्वात्' अर्थात् सब शास्त्रोंकी जन्मभूमि परमेश्वर ही है।

हज़रत दाऊदको तख्तपर और हज़रत ईसा मसीहको जंगलोंमें घूमते तथा हज़रत मुहम्मदको हिराकी गुफा आदिमें इल्हाम होता रहा। (१) ।

देवदर्शन

जो ज्ञान ईश्वरकी ओरसे धर्मात्मा लोगोंपर उतरता है उसे देवता-फ़रिश्ते ही लाते और पहुंचाते हैं, आत्मा और परमात्मा-के मध्यमें देवताओंका स्थान है। यह लोग ईश्वरीय आज्ञाओंको लेकर आत्माके पास आते और आत्माके विचार ईश्वरतक पहुंचाते हैं। बस, इससे अधिक और इनका कुछ काम नहीं। इन देवताओंके दर्शन उसको प्राप्त होते हैं जिसपर ईश्वरका पूर्ण अनुग्रह होता है, हां इस अनुग्रहको पानेके लिये एक बात बहुत आवश्यक है अर्थात् अन्तःकरणकी पवित्रता। जिसका

(१) जो कोई भी पुस्तक ईश्वरीय ज्ञान मानी जाती है उस हर एकमें स्वभावतः यह बात पाई जाती है कि उसके प्रकट करनेवाले महानुभावोंको समय समयपर ज्ञानकी प्राप्ति हुई—बाईबिल और कुरानमें तो यह बात है ही पर आश्चर्य है कि वेदमें भी यह भाव छिप नहीं सके अपितु प्रकटरूपमें प्रकाशित हो गये हैं यथा १२ वर्षतक वर्षा न होनेसे किसी स्थान विशेषपर सभा होना और कई वर्षा लानेवाले मन्त्रोंकी प्राप्ति होना, नदीके वेगको कमकर पार जानेके लिये विश्वामित्रपर सूक्तोंका प्रकट होना, इत्यादि बातें पायी जाती हैं। वास्तवमें वेद कुछ ऐसी रचनायें हैं कि उनके सम्बन्धमें हमारा कुछ लिखना सचमुच अनाधिकार चेष्टा है। हां, इतना अवश्य है कि समयपर इनका प्रादुर्भाव मानते हुए अनित्य इतिहासका खण्डन ऋषिजन अपने मीमांसा आदि दर्शनोंमें कर गये हैं।

अन्तःकरण शुद्ध और पवित्र हो जायगा वह सब बातोंको भली भांति जान सकेगा और बिना रुकावटके देवताओंके दर्शन कर सकेगा (१)।

जिसको देव-दर्शन प्राप्त हों उसे बड़ा सौभाग्यशाली जानना चाहिये; पर इसका निश्चय करना कुछ कठिन है।

सत्यासत्यका निर्णय जैसा कठिन होता है ऐसे ही देवताओंसे सबन्ध रखनेवाले और असुरोंसे सम्बन्ध रखनेवालेमें बड़ा भेद होता है, इसका ठीक ठीक पता लगाना किसी बुद्धिमानहीका काम है (२)।

---

(१) देवताओंका दर्शन करना या फ़रिश्तोंसे मुलाक़ात करना एक ऐसा स्वाभाविक विचार है कि मनुष्य-जातिके प्रत्येक विभागपर उसका पर्याप्त अधिकार मालूम होता है। उच्चसे उच्च शिक्षा प्राप्त विद्वान तथा निकृष्टसे निकृष्ट जङ्गली असभ्य जातियां देवोंके दर्शनोंको चाहती हुई संसारके हर भागमें दिखाई देती हैं। वास्तवमें दोनोंको देखना मनुष्यकी अच्छीसे अच्छी कामनाका प्रतिबिम्ब है। वैदिक साहित्यमें जितना देवी-देवताओं—परी और फरिश्तोंका वर्णन पाया जाता है उतना और किसी साहित्यमें नहीं पाया जाता। इसका कारण यह है कि भारतीय लोग आदिसे आजतक बराबर दोनोंसे मिलनेके लिये यज्ञादि रूपमें उद्योग करते रहे हैं।

(२) ऐसे लोग भी संसारमें उत्पन्न हुए हैं जो लोगोंके मस्तिष्ककी न्यूनतासे पूरा पूरा लाभ उठाकर निरस्तपादपेदेशे एरण्डोऽपि द्रुमायते' जहां वृक्ष नहीं होते वहां एरण्ड ही सब कुछ बन बैठता है। इस उदाहरणके साक्षात् अनुभव हो चुके हैं और अब भी होते हैं। पर सत्य तो यह है कि जिसका आचार व्यवहार शुद्ध नहीं वह कभी देव-दर्शन नहीं कर सकता।

एक प्रकारकी लाखों वस्तुएं हैं लेकिन उनमें कोसोंका फासिला है। रूप-रङ्ग दोनों जलोंका एक ही सा होता है चाहे वह मीठा हो या नमकीन। मधुमक्खी और भिड़ एक ही बागसे फूल चूसती हैं मगर एकके पास शहद और दूसरीके पास डंग ही होता है। दोनों प्रकारके हरिण घास खाते और पानी पीते हैं मगर एकसे मींगनी तथा दूसरेसे कस्तूरी निकलती है। एक ही पदार्थको दो मनुष्य खाते हैं एकसे ईर्ष्या-द्वेष और कृपणता प्रकट होती है और दूसरा प्रेम, दया आदि दिव्य भावोंको प्रकाशित करता है। बहुतसी वस्तुएं शकरकी तरह मीठी हैं पर अन्दरसे निरा विष हैं।

खोटे और खरे रुपयेकी पहचान बिना कसौटीके नहीं हो सकती। ईश्वरने जिसको वह कसौटी दी है उसे ही पता लग सकता है दूसरेको नहीं। कड़ुवे और मीठे जलके पहचाननेको जिह्वा है न कि चक्षु। ईश्वरीय होनेकी भी पहचान है वह जिसके पास होगी वही जान सकता है। वह कसौटी है अन्तः-करणकी शुद्धि। बस, जिसका दिल साफ होगा वही पहचानेगा कि यह ईश्वरसे सम्बन्ध रखता है या शैतानसे (१)।

---

(१) श्रीकृष्णने अर्जुनको कहा है कि तू इन आंखोंसे नहीं देख सकेगा। उस जगहकी चीजोंको देखनेके लिये आवश्यकता है, वहांकी आंखोंकी, इसलिये 'दिव्यं ददामि ते चक्षु' मैं तुझको दिव्य चक्षु देता हूं। कहते हैं कि श्रीमहादेवजीके तीन आंखें हैं। उस तीसरीका स्थान माथा है और उस आंखका नाम दिव्य चक्षु है। इस माथेकी आंखको कोई दिलकी आंख भी कहते हैं, भाव

जिसको ईश्वरीय सम्बन्ध प्राप्त होगा उसका मुखमण्डल स्वयं गवाही देगा और उसकी जबानसे निकले हुए शब्द एक विशेष प्रकारका प्रभाव डालेंगे और उसकी सत्यताको प्रमाणित करेंगे (१)। अगर किसी प्यासेसे तुम यह कहो कि बर्तनमें पानी है तुम पी लो, तो क्या प्यासा यह कहेगा कि यह तो कहना ही कहना है तुमको चाहिये कि सिद्ध करो कि यह पीनेका पानी है जबतक यह सिद्ध न हो तबतक मैं पानी नहीं पी सकता। किसी स्त्रीने अपने बच्चेको पुकारा कि मेरे पास आओ, मैं तुम्हारी माता हूं, तो क्या वह बच्चा यह कहेगा कि तू पहले यह सिद्ध कर कि तू मेरी माता है फिर मैं तेरे पास आऊंगा। जिसके हृदयमें श्रद्धाकी बिजली चमक रही है उसके लिये तो महात्माओंका मुख-कमल ही सबसे बड़ी करामात है

सबका यही है कि यह आंख ज्ञान है। इसी ज्ञानरूपी नेत्रोंसे हर चीज देखी जा सकती है और पता लगाया जा सकता है कि इसका सम्बन्ध किस किस्मके लोगोंसे है देवोंसे या असुरोंसे। ईश्वरसे सम्बन्ध रखनेवाला दिव्य भावोंसे परिपूर्ण होगा और शैतान साहिब बहादुरसे हाथ मिलानेवाला अभिमान आदि दुर्वृत्तियोंका शिकार बना होगा।

(१) नीतिमें आता है कि 'आकृत्या भाषणेन च लक्ष्यतेऽन्तर्गत मनः' अर्थात् चेहरेकी शकलसे और जबानके शब्दोंसे हृदयके भाव व्यक्त हो जाते हैं। छान्दोग्योपनिषत्‌में लिखा है कि सत्य काम जाबालको देखते ही गोतम ऋषिने कह दिया था कि 'ब्रह्मविदिव सौम्य ते मुखं भाति' अर्थात् प्यारे! तेरे चेहरेसे यह जाहिर हो रहा है कि तू कोई ब्रह्मवेत्ता है। जैसे पाप और धर्मके स्वरूपमें भेद है वैसे ही पापी और धर्मात्माके चेहरेमें भी भेद है।

क्योंकि उससे ऐसी बातें निकलती हैं जिनको आध्यात्मिक कानोंने किसी प्राकृत पुरुषसे नहीं सुना।

सिद्धि प्राप्त करना

जो पानीमें हाथ डालता है वह अवश्य भींगता है। तो जो देवताओंके दर्शन करता है या ईश्वरकी ओर चलता है वह भी अवश्य कुछ पाता है। जो कुछ वह पाता है उसे सिद्धि कहना चाहिये (१)।

सिद्धि नाम है सर्वसाधारणसे विलक्षणताका। जिसको यह प्राप्त हो उसे सिद्ध कहते हैं। सिद्धियां या तो स्वाभाविक होती हैं या अस्वाभाविक। जो बिना इच्छा किये हों वह स्वाभाविक और जो इच्छा करनेपर हों वह नैमित्तिक कहलाती हैं। ईश्वरीय होनेकी एक युक्ति सिद्धियां भी हैं पर इन सिद्धियों-से सिवा दबाव डालनेके और कुछ नहीं। सच तो यह है कि

---

(१) महर्षि पतञ्जलिने अपने योगशास्त्रमें सिद्धियों या विभूतियोंका बड़ा यौक्तिक वर्णन किया है। उनकी सम्मति है कि योगाभ्यास करनेसे दिव्य भावोंकी प्राप्ति होती है यथा आकाशमें यथेच्छाचार हो जाना, कीचड़में चलना मगर धंस न सकना, पानीपर स्थलके समान चलना, संसारके प्रत्येक भागकी खबर पा लेना, पशु-पक्षियोंकी बोली समझ लेना आदि आदि इस्लामका अव्वल तो कोई योगशास्त्र ही नहीं, दूसरे कोई ऐसा आचार्य भी नहीं हुआ जिसने इस गहन विषयपर कुछ विचार किया हो। हां, जुनीद बग-दादी आदि बेशक कुछ पतेकी बातें बताते हैं जिनसे मालूम होता है कि यह अवश्य योगाभ्यास करते रहे हैं।

सिद्धियां धर्मात्मा होने या ईश्वरीय होनेका चिह्न नहीं है (१)। सिद्धियोंको देखकर शत्रु (न माननेवाला) दब अवश्य जाता है लेकिन मित्र नहीं हो पाता, भला वह आदमी क्या मित्र बनेगा जो गरदन पकड़कर लाया गया है।

सिद्धि यह नहीं कि प्रकृतिपर प्रभाव डाले बल्कि सच्ची सिद्धि तो यह है कि दिलोंपर प्रभाव डाले क्योंकि दिलोंपर प्रभाव डालना प्राकृतिक पदार्थोंपर प्रभाव डालनेकी अपेक्षा अधिक सुगम और हितकर है (२)।

जीवात्मा

आत्मा किस वस्तुका नाम है! उसका कि जो भले बुरेको

---

(१) सैकड़ों लोग शोबदेबाजी या पदार्थविद्याके द्वारा लोगोंको अपने सिद्धत्वका परिचय दिया करते हैं जिससे कि हजारों मनुष्य उनके चक्रमें आकर उनको सिद्ध मान बैठा करते हैं। पर इससे न तो वह स्वयं सिद्ध हो सकते हैं और न उनकी बातें ही सिद्धों जैसी सिद्ध हो सकती हैं। इतना अवश्य है कि ऐसे कृत्यसे झूठ और सत्य या नकल और असलमें कुछ दिनका मेल जरूर हो जाता है। सच तो यह है कि मोक्षाभिलाषीके लिये तो सिद्धियें पशु-पक्षियोंके कृत्यसे अधिक मूल्य नहीं रखतीं। इसीलिये योगशास्त्रमें लिखा है कि सिद्धियें मोक्षमार्गमें बड़ी भारी रुकावट हैं।

(२) प्रत्येक सिद्धि आत्माकी गुप्त शक्तियोंका प्रकाशित परिणाम है इसलिये सबसे पहले प्रभाव यदि किसी अङ्गपर पड़ सकता है तो वह मन और मुख है। इसपर प्रभाव न पड़ना ही उसकी सिद्धिके झूठ होनेका प्रमाण है।

जानता है तथा जो लाभसे प्रसन्न और हानिसे अप्रसन्न होता है। जब आत्माका स्वरूप 'जानना' या ज्ञान ठहरा तो जिसको अधिक ज्ञान है उसमें अधिक आत्मा है (१)। हमारी जान पशुओंसे अधिक है क्योंकि उनसे अधिक ज्ञान हमको है और हमारी जानसे अधिक देवताओंकी जान है क्योंकि वह हमसे अधिक ज्ञान रखते हैं और उनसे भी बढ़कर ईश्वरकी जान है जिससे बढ़कर और कोई जान नहीं। इसीलिये उसकी बुद्धिसे बढ़कर किसीकी अक्ल नहीं। मनुष्यकी अक्ल और जानसे पशुओंकी अक्ल और जानसे भेद है। वह और चीज है और यह और चीज है।

---

(१) यह विचार कि 'ज्ञान ही आत्मा है, हमारे प्राचीन ऋषियोंका भी विवादग्रस्त विषय रहा है। महर्षि गोतमके अनुयायी नैय्यायिक लोग आत्माको द्रव्य मान कर ज्ञानाधिकरण अर्थात् जिसमें ज्ञान रहता है ऐसा मानते हैं क्योंकि उनका कहना है कि कोई भी द्रव्य गुण नहीं होता और न कोई गुण ही द्रव्य बन सकता है। बात यह है कि हर द्रव्य गुणवाला और हर गुण किसी न किसी द्रव्यवाला जरूर होता है। वेदान्तकेसरी महात्मा व्यासका शिष्यमण्डल यह मानता है कि आत्मा सिवा ज्ञानके और कुछ है ही नहीं। कुछ हो, यदि आत्मा ज्ञान ही ज्ञान है तो उसे दूषित होना अवश्य होगा क्योंकि कोई ज्ञान ऐसा नहीं जो अदुष्ट हो। ज्ञान परिणामी है, संकोच विकासवान् है और ज्ञान माननेसे एक दोष यह भी आता है कि ज्ञान तो गुण है वह अवश्य किसी द्रव्य-गुणीका होना चाहिये। यदि बिना गुणीके किसी गुणकी सत्ता स्वीकार की जावे तो दृष्टान्ताभाव दोष है। कोई ऐसा

रूह जो है सो अम्रे रब्बी—ईश्वरकी एक आज्ञा है (१)। जैसे ईश्वरकी कोई उपमा नहीं इसी प्रकार जीवकी भी उपमा नहीं दी जा सकती (२)। आत्माके जाननेमें इतना ऊंचा उठना पड़ता है कि अरवाह आत्माओंके भी बाल और पर जलते हैं। सोचो, कि जहां आत्मा भी पर नहीं मार सकता वहां हमारी तुच्छ बुद्धि कैसे दम मार सकती है (३)।

गुण नहीं है जो कि किसी न किसी गुणीके आश्रित न हो—स्पर्श वायुके आश्रित, रस जलके आश्रित, शब्द आकाशके और रूप अग्निके आश्रित है। ऐसे ही यह जो ज्ञानगुण है वह किसी द्रव्यके आश्रित होना चाहिये चूंकि वायु आदिका हो नहीं सकता इसलिये जो शेष है उसीका होना चाहिये। इसी तत्वको महामुनि प्रशस्तपादने अपने वैशेषिक भाष्यमें यों लिखा है कि—परिशेषात्म ज्ञानम्' अर्थात् परिशेषसे आत्माका ज्ञान होता है। सच यह है कि आत्म-तत्वपर जितना हमारे ऋषिजनोंने विचारा है उतना और कोई नहीं पहुंच सका। विशेषाभिलाषी 'आत्मतत्व-विवेक देखें।

(१) यह कुरानका वाक्य है कि--रूह अम्रे रब्बी है अर्थात् ईश्वरकी आज्ञा है। इस वाक्यका बड़े बड़े विद्वानोंने अर्थ सोचा पर कुछ भी समझमें न आया—अन्तमें यही कह दिया कि आत्माको परमात्मा ही जानता है हम नहीं जान सकते।

(२) उपमा तो उसकी दी जावे जिसके समान कोई और वस्तु हो। यह निश्चित है कि आत्मासे भिन्न कोई उस जैसा नहीं।

(३) अरवाहके बाल और पर जलते हैं इसके अर्थ यही हैं कि वहांपर आत्माके भी होश उड़ते हैं, आत्मा जैसा दूर दूर की बातें जाननेवाला पक्षी भी नहीं पहुंच सकता, वहां बेचारी बुद्धिका क्या हौसिला हो सकता है कि कुछ कह सके। पाठको! यदि आत्मज्ञानकी कुछ भी इच्छा है तो सब तरफसे हटकर उपनिषत्का एकान्तमें गुरुमुखसे श्रवण करो।

सच तो यह है कि आत्माको न तो आत्मा जानता है और न हमारी बुद्धि ही; बल्कि यदि कोई यथार्थतया जानता है तो वह केवल परमात्मा—ईश्वर—ही जानता है कि आत्मा कैसा है, क्या है और किस प्रकार है। और किसीको क्या खबर! (१)

हे मनुष्य! तू कबतक फाख्ताकी तरह कू कू करके पूछता फिरेगा; छोड़ इस ख्यालको और चिन्तन कर प्रभु प्रीतमका ताकि तेरी प्रत्येक इच्छा पूर्ण होवे।

कर्मगति

कर्मोंकी गति न्यारी है। देखो, मनुष्य पहले वृक्ष वनस्पति आदिके रूपमें आया फिर पशु बना और उसके बाद मनुष्यका स्वरूप मिला (२)। उन्नतिके लिये उत्पत्ति तथा विनाश

---

(१) ईश्वर ही सर्वज्ञ है, जिसको कोई नहीं जानता उसे ईश्वर ही जानता है। जब हम आत्माको नहीं जानते और नहीं जान सकते तो कोई और होना चाहिये जो हमसे आगे पहुंचकर इस कठिन समस्याको हल कर सके। प्रेमियो! वह ईश्वर ही है जो आत्माके भीतर रम रहा है और इसी कारण इसके सब रहस्योंको जानता है।

(२) १८ वीं शताब्दीके शरीरतत्ववेत्ता डार्विनके भी यही विचार हैं। पुराणोंमें भी इसीसे मिलते जुलते विचार पाये जाते हैं। कई एक मौलानाके भक्त व्याख्याकारों और समालोचकोंने भी इन्हीं विचारोंका कुरान आदि ग्रन्थोंके प्रमाण देकर समर्थन किया है। आश्चर्य है कि डार्विनसे ५०० वर्ष पहिले मौलानाने यही विचार मस्नवीमें लिख दिये थे। कुछ भी हो, यह विचार तर्कशास्त्रके आधारपर स्थित नहीं हैं इसी कारण आज इनका कुछ भी

इन दो भावोंकी परमावश्यकता है। जबतक एक अवस्था-का नाश न हो जाय तबतक दूसरी अवस्था उत्पन्न नहीं होती, इसलिये सम्भव है कि हमारे इस शरीरके पश्चात् हमारी कुछ और प्रकारकी अवस्था हो। उत्पत्ति और नाशका नियम अच्छी प्रकार समझा जा सकता है—विद्यार्थी पहले सलेटको पोंछकर साफ करता है उसके बाद अक्षर या अङ्क लिखता है। जब नये घरको बनाना होता है तो पहिले नींव खोदनी पड़ती है, जब पहिले मिट्टी निकालते हैं तो पीछेसे पानी निकलता है। इससे यह सिद्ध हुआ कि पहिलेकी अवस्थाका बदलना ही नयी अवस्थाका उत्पन्न होना है। तुम जिस दिनसे वजूदमें (उत्पन्न) हुए हो इससे पहिले आग, हवा, मिट्टी थे (१)। अगर यही अवस्था तुम्हारी बनी रहती तो आज उन्नति कैसे होती। बदलनेवालेने पहिले सत्ता ही बदल दी, बादमें उसकी जगह दूसरी हस्ती कायम कर दी। इसी प्रकार हजारों हस्तियां

सम्मान नहीं रहा। बीसों पुस्तकें विकासवादके खण्डनमें लिखी जा चुकी हैं और सैकड़ों विद्वान् इस ऊटपटांग सिद्धान्तका प्रतिवाद कर रहे हैं।

(१) मनुष्य नाम शरीरका ही है इसीलिये कहा जाता है कि अमुक मनुष्य उत्पन्न हुआ अथवा अमुक मर गया या अमुक जला दिया गया। इसलिये यह शरीर पञ्चभूत—अग्नि, जल, पृथ्वी, वायु और आकाश इनका विकार है, इनसे ही उत्पन्न हुआ, इन्हींमें जीवित तथा इनमें ही नष्ट होकर मिल जावेगा। इसलिये हम यह कह सकते हैं कि यह शरीर पहिले पञ्च-भूतोंमें विभक्त था। दूसरे शब्दोंमें हम पहले पृथ्वी आदिके रूपमें थे।

बदलती चली गयीं और पिछलीसे अच्छी होती गयीं। जिस फनां—नाश—की बदौलत तुमने उत्तरोत्तर उन्नति पायी उससे अब क्यों घबराते हो? तुम्हें चाहिये कि इससे भी अच्छी हालतमें आनेका यत्न करो। अरे! उन फनाओंसे तुमको क्या हानि पहुंची जो तुम इस बका—वर्तमान् स्थितिसे चिमटे बैठे हो। जब पहिली अवस्थासे यह हालत अच्छी है तो इससे भी अच्छा होनेके लिये फनाको ढूंढ़ो और जो इस इनकिलाबका करने-वाला है अर्थात् ईश्वर, उसको पूजो।

तुम पहिले जमाद—पत्थर आदि—सर्वथा जड़ थे, फिर तुममें कुछ कुछ जीवन-शक्ति उत्पन्न हुई तो तुम लहराने लगे और वृक्षादिके स्वरूपमें दिखायी देने लगे। इसके बाद जब तुममें जान आने लगी तो तुमने पशुओंका स्वरूप धारण कर लिया और अब तुममें ज्ञान और बुद्धिका प्रवेश हो गया तो मनुष्य बने दिखायी दे रहे हो। भाई! जब तुमने पुरानोंसे नयोंको अच्छा देखा तो इस शरीरपर क्यों जान दे रहे हो। अरे! पुराना छोड़ो और नया लो क्योंकि तुम्हारा हर साल पिछले सालसे अच्छा है (१)।

---

(१) यद्यपि यह कोई नियम नहीं कि आगे आनेवाली हर अवस्था पहिलेकी अवस्थासे अच्छी हो क्योंकि सैकड़ों अवस्थायें ऐसी हैं कि जो पूर्वापेक्षया बहुत ही निकृष्ट हैं और यह साल पिछलेकी निस्बत घाटेमें है तथापि इस विचारसे कि अगले वर्षको तथा आनेवाली अवस्थाको अच्छा बनाना चाहिये मौलानाके भाव उपादेय हैं और अध्यात्म मार्गके यात्रीके लिये उत्साह दिलानेवाले हैं।

लोग कहते हैं कि इस तरह २ के स्थावर जंगम भावोंको पैदा करनेवाला कोई नहीं, यह स्वयमेव हो गये हैं। उनसे कहना चाहिये कि क्या कोई चित्र स्वयमेव बन जाता है और क्या कोई कूजा अपने आप पैदा हो जाता है? नहीं नहीं, (१) चित्रकारके बिना चित्र तथा कुम्हारके बिना कूजा कदापि नहीं बन सकता।

अच्छा तो यह संसार बनाया गया किस लिये है? क्या ऐसा सम्भव नहीं कि इसका कोई प्रयोजन ही न हो?

क्या कोई चित्रकार कोई उमदा चित्र बिना किसी प्रयोजनके खींचता है? नहीं! उसका अभिप्राय जरूर किसीको प्रसन्न करना और शोकसे छुड़ाना होगा। कोई कुम्हार कूजेके लिये कूजेको नहीं बनाता बल्कि इसलिये कि लोग इससे पानी पीयें। क्या कोई लेखक केवल लेखके लिये लिख सकता है? नहीं बल्कि इसलिये कि उससे अपने या दूसरोंको लाभ हो। संसारमें कोई कार्य इसलिये नहीं किया जाता कि 'वह है' बल्कि इसलिये कि उससे दूसरोंको लाभ हो। इससे सिद्ध हुआ कि संसारकी विचित्रता किसी जन-समुदायके लिये रची गयी है (२) यदि उसके कर्म

---

(१) यही भाव इस श्लोकमें वर्णित हुआ है—

जगतां यदि नो कर्ता कुलालेन विना घटः
चित्रकारं विना चित्रं स्वयमेव भवेत्तदा।

(२) जीवोंके कर्मफलके सम्बन्धमें सृष्टिके प्रयोजन दर्शनशास्त्रके अनुसार इसलिये है कि कर्मफल स्वरूप सृष्टि कर्मफल प्रदाता परमात्माने क्यों रची। इसी ग्रन्थिको खोलनेके लिये 'ईश्वरने इसलिये सृष्टि रची कि जीवोंको

न होते तो ईश्वर इसमें प्रवृत्त न होता। इस बातको कि कोई भी कार्य अपना कारण स्वयं नहीं होता समझानेके लिये हमें व्यवहार-का भी प्रमाण मिलता है। देखो! जब कोई किसी कार्यको करता रहता है तो तुम यह पूछा करते हो कि इस कार्यको क्यों करते हो, यदि इसे न करो तो तुम्हारा क्या बिगड़ेगा। तुम्हारा मन्शा भी यही होता है कि हर एक कार्यका कोई न कोई कारण अवश्य होता है, यदि कोई चीज़ अपना सबब आप होती तो गरज़—कारण—न पूछा जाता। यदि सृष्टि बिना कारणके होती अर्थात् संसारकी रचना रचनेका कोई भी प्रयोजन न होता तो इसके टुकड़ोंको खानेवाले मनुष्यके दिमागमें यह सवाल ही पैदा न होता कि इसका क्या कारण है।

कुछ लोग कहते हैं कि सब वस्तु ऐसी नहीं कि वे कारण-वाली हों और उनसे किसीको लाभ हो। उनसे कहना चाहिये कि एक वस्तु एकके लिये यदि बेकार या बेफायदा है तो सबके लिये बेकार नहीं हो सकती। अवश्य है कि किसी न किसीके लिये लाभदायक हो—जो मेरे लिये लाभदायक है, वह तेरे लिये बेकार है और जिसे तू अच्छा समझता है वह मुझे नापसन्द है।

कर्मफल प्राप्त हो पिछला बेबाक हो और अगला हिसाब नये सिरेसे चले। मौलाना रूमकी तरह महर्षि गोतमने भी न्यायदर्शनमें 'ईश्वरः कारणं कर्मा-फल्य दर्शात्' इत्यादि तत्कारितत्वादहेतुः इत्युक्त सूत्रोंमें यही प्रकरण इसी प्रकार लिखा है।
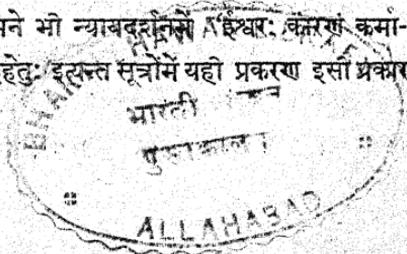
अतः कोई ऐसी वस्तु नहीं जो बिना कारणके हो या किसीको भी पसन्द न हो। मलको शूकर और खंगारको मुर्ग चाहते हैं। यहांतक कि पापको चाहनेवाले इस सृष्टिमें मौजूद हैं और वस्तुओंका तो कहना ही क्या है।

भाग्य और पुरुषार्थ

यदि छतके गिरनेसे किसीके सिर पैर टूट पड़े और वह उससे चोट खा जाये तो क्या वह छतपर क्रोध करने लग जाता है? नहीं! लेकिन यदि कोई मनुष्य उसको पत्थर खींच मारे तो वह उसपर अवश्य क्रोधित होगा? अच्छा यह क्यों? एकपर क्रोध करता है दूसरेपर नहीं इसका क्या कारण है? वह यह जानता है कि छत गिरनेके ख्यालसे नहीं गिरी और न उसकी इच्छा ही स्वयं गिरकर किसीको दबाने या मारनेकी थी। उसका कार्य सर्वथा परतन्त्र था इसीलिये उसपर क्रोध नहीं आता। दूसरेपर इसलिये क्रोध आता है कि वह पत्थर मारनेमें स्वतन्त्र था, उसने जानते हुए पत्थर मारा है। यदि वह भी छतकी तरह जड़—ज्ञान-शून्य—होता तो उसपर भी क्रोध न आता। और देखो! (१) पुरुषार्थ

(१) वेदमें भी कहा है—'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा' अर्थात् मनुष्यको चाहिये कि कर्म पुरुषार्थ करता हुआ ही इस संसारमें जीनेकी इच्छा करे। वास्तवमें इस सृष्टिमें जीवित रहनेका उपाय एकमात्र यह है कि कर्म किया जावे। भगवान् श्रीकृष्णने भी गीतामें कहा है कि 'क्षिप्रं हि मानुषेलोके सिद्धि र्भवति कर्मजा' अर्थात् इस मनुष्य लोकमें कर्म करनेसे शीघ्र कामयाबी

करना तो मनुष्यके स्वभावमें ही है। क्या नहीं देखते हो कि संसारके प्राणी इसी पुरुषार्थको सिद्ध करते हुए अपना अपना कार्य करते दृष्टिगोचर हो रहे हैं, प्रातःकालसे लेकर सायंकाल-तक भिन्न भिन्न प्रकारके कार्य कर रहे हैं? यदि पुरुषार्थ स्वाभाविक न होता तो कोई भी प्राणी कर्म करता हुआ न दिखायी पड़ता; प्रत्युत आलस्यका ही अन्धकारमय साम्राज्य दीखता। पर वास्तवमें ऐसा नहीं है, इसलिये पुरुषार्थ ही कर्तव्य है। यदि विचारकर देखो तो पशु-सृष्टिमें भी पुरुषार्थका स्वाभाविक होना स्पष्ट प्रतीत होगा, एक कुत्तेपर दूरसे पत्थर मारो और उससे चोट भी लगे तो तुम आश्चर्य करोगे कि कुत्ता यह जानते हुए भी कि चोट पत्थरसे लगी है कभी पत्थरपर वार न करेगा क्योंकि उसे मालूम है कि पत्थर तो केवल एक जड़ वस्तु है और साधन बनाकर इस्तेमाल किया गया है, मारनेवाला कोई और है जिसने इच्छा करके मुझे हानि पहुंचानेके लिये यह चेष्टा की है। कुत्ता उसीपर भूँकता या वार करता है जो पत्थरादिसे उसे मारता है न कि पत्थरादिपर।

हम किसीपर प्रसन्न होते हैं, किसीपर नाराज होते हैं, किसीको उत्साह दिलाते हैं और किसीको शर्मिन्दा करते हैं। क्या यह विचित्र प्रवृत्तियां हमारे पुरुषार्थका रूपान्तर नहीं हैं?

हो जाती है। 'कर्म कर्तुमिहार्हसि' हे अर्जुन! तुझे चाहिये कि इस संसारमें रहते हुए पुरुषार्थ करे। शरीर यात्रापि चे ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः—यदि तू पुरुषार्थ छोड़ दे तो तेरी शरीर यात्रा भी नहीं चल सकती।

हैं, और अवश्य हैं। यही सिद्ध करती हैं कि हम पुरुषार्थ करते हैं और पुरुषार्थ ही करना चाहिये (१)।

लोग कहते हैं कि ईश्वर हमारे कर्मों पर अधिकार रखता है इस लिये कर्ता हम नहीं हैं। विचारना चाहिये कि क्या कोई गुण अपने अधिष्ठान—द्रव्यसे निकला है। यदि द्रव्यके रहते गुण नहीं रहता तो ईश्वर भी हमारे किये कर्मोंका कर्ता हो सकता है नहीं तो नहीं। जिन कर्मोंको हमने किया है वह हमारे हैं उनका हमारे साथ ऐसा ही सम्बन्ध है जैसा प्रकाशका अग्निसे। इस-लिये हमारे कर्मों पर ईश्वरका अधिकार कहना मानों प्रकाशको दीपकका गुण मानना है जोकि किसी भी युक्तिसे साबित नहीं हो सकता। जैसे एक कारीगर अपने साधन (जिससे कि वस्तु बनानेमें सहायता ली जाती है जैसे कि हथौड़ी, छेनी आदि) से कार्य करता हुआ भी उसके गुणोंको नष्ट नहीं कर सकता और उसको लोहेके स्थान काष्ठादि या चेतन नहीं बना सकता हालां कि उसपर कारीगरका पूर्ण अधिकार है वैसे ही ईश्वरके वशमें होते हुए भी हम अपने गुणोंसे हाथ नहीं धो सकते और हमारा वह गुण जो हमारा अपना है वह है 'स्वतन्त्र होना' अर्थात् किसी भी कार्यको करते हुए इच्छानुकूल रहना।

---

(१) शेर कभी गोलीपर नहीं झपटता, जब झपटेगा तब गोली मारने वालेपर। इस प्रकार जीवमात्र यह जानता है कि पुरुषार्थका कितना साम्राज्य है और हमें क्यों पुरुषार्थ करना चाहिये।

कुदरतश बर इख़्तियारात आं चुनां,
नफ़ी न कुनद इख़्तियारे रा अज़ां।

अर्थात्—ईश्वरमें यह शक्ति नहीं कि कर्ताकी स्वतन्त्रताको छीन ले और जो अधिकार कि हमारे कर्मोंपर हमारे हैं उनको नष्ट कर सके। यदि तुम मुझको क़ाफ़िर—नास्तिक—कहो तो यह तुम्हारा कहना भी कुफ़र है क्योंकि इससे ईश्वरपर पाप-पुण्यका भोक्ता होनेका धब्बा आता है।

लोग कहते हैं कि ईश्वरके भरोसे बैठे रहना चाहिये क्योंकि जो कुछ भी होता है ईश्वरकी ही इच्छासे होता है आदमीके हाथमें कुछ नहीं, अपने इस कहनेमें प्रमाण देते हैं हदीसका—कि ईश्वर जिसे चाहता है वही होता है, जिसे नहीं चाहता वह नहीं होता।

उत्तर यह है कि इस हदीसका तात्पर्य यह है कि ऐ इन्सान! ईश्वरको ख़ुश रख क्योंकि उसकी ही प्रसन्नतामें काम ठीक सिद्ध होते हैं। यह नहीं कि बैठ जावो और कुछ करो ही नहीं। भला कुछ न करनेवालोंको ईश्वर क्यों चाह सकता है? कोई किसीसे कहे कि राज्यका सब कुछ वज़ीरपर ही है, तो इस वाक्यका यही उद्देश्य तथा तात्पर्य होगा कि राज्य-सम्बन्धी कार्योंके लिये वज़ीरको ख़ुश रखना चाहिये, ऐसे ही ईश्वरके हाथ सब कुछ है। इसका मतलब है कि ईश्वरको प्रसन्न रखना चाहिये ऐसा न हो कि वह नाराज़ हो जावे और तुम्हें लेनेके

देने पड़ जावें। यदि आदमीके हाथमें कुछ न होता तो आदमी कुछ कर भी न सकता।

लोग कहते हैं कि जो कुछ होना होता है लौहे महफ़ूज़—भाग्यकी तख़्तीपर पहिलेसे ही लिखा जा चुका है। ठीक है, पर इसका आशय यह नहीं कि हमें भाग्यके सहारे ही बैठे रहना चाहिये बल्कि इसका तात्पर्य तो यह है कि प्रत्येक कर्मका जो फल है वह निश्चित है—अच्छेका अच्छा और बुरेका बुरा। अब यह तुम्हारे अधिकारमें है कि अच्छा फल लो या बुरा।

तीसरा खण्ड

कथा-संग्रह

मायाका जादू

एक दिनकी बात है कि एक प्रसिद्ध राजाने यह इच्छा की कि शिकार खेला जाय। ज्योंही इच्छा उत्पन्न हुई तत्काल मन्त्री आदिने प्रबन्ध कर दिया और बादशाहके साथ साथ चल दिये। शिकारकी तलाशमें जा रहे थे कि एक स्थान-पर किसी उत्तम वृक्षके नीचे एक महासुन्दरी युवती कन्याके दर्शन हो गये। देखा और देखते ही बादशाह गुलाम हो गये--शिकार करने आये थे पर स्वयं शिकार हो गये। मन्त्री आदि कर्मचारी-मण्डलको पता लगा तो उन्होंने राजाको यह अजीब हालत देखकर उस स्त्रीको साथ ले लिया। जब स्त्री मिली तो ईश्वरकी कुदरत देखो कि वह आते ही बीमार हो गई। संसार-की यह दशा है कि जब एक बात होती है तो दूसरी नहीं होती, जब स्त्री मिली तो बीमारी आ गयी। एकके पास गधा था मगर पालान न था, जब पालान मिला तो गधा गुम हो गया। प्यासेके पास कूज़ा था मगर पानी नहीं था, जब पानी मिला

तो कूजा न रहा। अन्ततः बादशाहने निश्चय किया कि इस स्त्रीके इलाजके लिये वैद्य, हकीम बुलाये जायँ। बादशाहका कहना था कि हर यत्नसे शीघ्रातिशीघ्र आरोग्य प्राप्त कराया जाय, इसीलिये दूर दूरके देशोंसे प्रसिद्ध प्रसिद्ध हकीम एकत्रित होने लगे। जब सब जमा हो गये तो एक सभाकर बादशाहके हजूरमें पहुंचे और कहने लगे कि महाराज! हममेंसे प्रत्येक धन्वन्तरि (लुकमान) कीसी योग्यता रखता है। हम अपनी सारी ताक़त दवादारूमें लगा देंगे और इसको राज़ी कर देंगे। बादशाहने यह सुनकर बहुत हर्ष प्रकट किया और कहने लगा कि यदि तुम मेरी जानको राज़ो कर दोगे तो मैं तुमको बहुत पुरस्कार दूंगा। इलाज शुरू हुआ, औषधियां दी जाने लगीं पर आरामका कहीं पता न चला। दिनबदिन हालत बिगड़ने लगी—अब वह पहिलेसे भी कमज़ोर हो गयी थी, ऐसा समझो जैसा कि बाल। जब क़ज़ा ही आ पहुंची तो वैद्य बेचारा क्या करे; जो भी दवा देगा उससे रोग बढ़ने ही लगेगा। सिकञ्जबीनके पीनेसे पित्त बढ़ने लगा और रोग़न बादामसे क़ब्ज़ हो गया, हरड़ने भी विरुद्ध असर किया और तो क्या पानी भी बजाय शान्त करनेके आग लगाने लगा। स्त्री सूखकर कांटा हो गयी। बादशाहको बड़ी चिन्ता लगी और यह जानकर कि हकीमोंकी ग़लतीसे यह दुष्परिणाम निकला, रोता हुआ परमात्माके दरबारमें हाज़िर हुआ और मस्तक नवा बड़े ही करुणाकर शब्दोंमें सिसकियां भरकर कहने लगा—हे संसारकी इच्छाओंके पूर्ण करनेवाले दयालु

प्रभो ! मैं तुझसे क्या कहूं, तू तो स्वयं मेरे दिलकी हालतको जानता है। हे मेरी त्रुटियोंको पूरा करनेवाले भगवन् ! मैंने तुझको छोड़कर उल्टा मार्ग स्वीकार कर लिया है, तू जानता है कि हकीमोंकी सब कोशिशें तेरी इच्छाके बिना व्यर्थ सिद्ध हुई हैं। जब इस प्रकार वह बादशाह आहोज़ारी कर रहा था तो दयामय भगवान्के दयासागरमें क्षोभ उत्पन्न हुआ और बादशाहको निद्रा आ गयी। निद्रामें क्या देखता है कि एक महात्मा उससे यह कह रहे हैं कि कल प्रातःकाल तुझको एक धर्मात्मा दिखायी देगा, तू उसकी सेवा करना और फिर देखना कि उसकी सेवासे क्या मेवा मिलता है। ज्यों त्यों करके रात गुज़ारी—प्रातःकाल हुआ तो सूर्यके उदय होते ही एक सूर्य-समान महात्मा आते हुए दिखायी दिये। जैसे ही सूर्यका प्रकाश बढ़ रहा था वैसे ही महात्माका प्रदीप्त मुखमण्डल प्रकाशित होता जा रहा था। बादशाहने देखा तो समझ लिया कि यह वही है, जिसका रात्रिमें स्वप्न देखता था—बस, फिर क्या था आगे बढ़ा और स्वागतके लिये पास पहुंचा और कहने लगा कि तू मुस्तफ़ाकी जगह है और मैं उमर हूं और तेरी आज्ञाओंके पालनके लिये सर्वदा कटिबद्ध हूं—जो कहोगे वही करूंगा। परमात्मासे यही इच्छा है कि सबको अदब (विनय) प्राप्त हो जिससे सबको ईश्वर-कृपा प्राप्त हो। जो विनयसे शून्य होता है न केवल वही कष्ट पाता है बल्कि उसके साथ लाखों और मनुष्योंको भी कष्ट सहने पड़ते हैं। देखो ! माइदा मूसाको

क़ौमपर ईश्वर-कृपासे प्राप्त होता था। न तो किसीको यही ख्याल था कि कौन भेजता है और न यह विचार था कि कैसे आता है। एक दिन क्या सूझा कि मूसाकी आज्ञाओंको भुलाकर उसकी जातिके कुछ लोगोंने इच्छा प्रकट की कि अच्छी अच्छी तरकारियां और लहसन प्याज आदि भी हमको प्राप्त हों। ऐसे विचारोंका आना था कि जो साधारण भोजन आता था वह भी आना बन्द हो गया और अगलेके लालचमें पिछलेको भी खो बैठे। इसलिये चाहिये कि सन्तोष करे न कि विनय-शून्य हो बेअदब बन जावे। बादशाह बड़े अदबसे पेश आया और तन मन धनसे महात्माकी सेवा करने लगा। जब सेवासे छुट्टी पायी तो महात्माने कहा कि कोई इच्छा हो तो कहो, हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं। बादशाहने इन अमृतमय शब्दोंको सुनकर बड़े ही विनयसे प्रार्थना की कि एक बीमार है उसे राज़ी कर दीजिये। स्त्रीको महात्माके रूबरू पेश किया गया और नब्ज़ नाड़ी आदि आवश्यक बातें मालूम की गयीं। जब महात्मा देख चुके तो विस्मयकारक शब्दोंमें यों बोले—इसको कोई विशेष रोग नहीं है। केवल इतना है कि शोकको वजहसे सूखती जाती है इसके शरीरपर ख़ुशी है पर दिलपर बीमारीका पूरा पूरा असर है ऐसा मालूम होता है कि इसको इश्क़—प्रेमने मार डाला है और इसी लिये इसका दिल हमेशा अपने प्यारेके ध्यानमें रहता है। आप सब लोग यदि यहांसे चले जायँ तो मैं इससे पूरा पूरा हाल सुन सकूंगा। वरना बीमारीका इलाज कठिन है।

बादशाहने यह सुन सब वैद्योंको जानेकी आज्ञा दी तथा स्वयं भी उनके साथ साथ चला गया। अब उस मकानकी ऐसी हालत थी कि सिवा रोगी और चारागर—वैद्यके तीसरे-का नाम न था। अब सर्वथा एकान्त हो जानेपर वैद्यने पूछा कि तू यह बता कि किसकी अदाओंने तेरे दिलपर तीर चलाये हैं, और वह कौन है जिसने तेरे हृदयपर अधिकार कर लिया है? महात्माके कई बार पूछनेपर भी स्त्रीने कोई उत्तर जब न दिया तो, हृदयगत प्रभावका पुनः निरीक्षण करनेके लिये दिलपर हाथ रक्खा और कुछ देर हृदयकी गतिका ज्ञान प्राप्त करके कहने लगा कि मालूम होता है कि तेरा दिल समरक़न्दके एक सुनारसे लगा हुआ है, तू उससे प्रेम करती है और उसीको याद करती है। आज हम उसको यहीं बुलाते हैं और बिछड़ोंको मिलाकर पुण्य कमाते हैं। इन शब्दोंने जादूका काम किया। जो काम सहस्रों दवायें न कर सकी थीं वह काम इन शब्दोंसे हुआ। यह समझिये कि सूखी बेल हरी होने लगी।

महात्माने बादशाहको सब हाल सुना दिया और कह दिया कि समरक़न्द नगरके उस सुनारको बुलाया जावे ताकि इसकी इच्छाओंपर प्यारेकी प्यारी नज़रोंका अमृत छिड़का जाय। बादशाहने तत्काल अपने विशेष कर्मचारियोंको समरक़न्दकी ओर भेजा और ताकीद कर दी कि शीघ्रसे शीघ्र सुनारदेवताको लेकर आवो। बादशाहकी आज्ञा पाकर भृत्यवर्ग वहां जा पहुंचा और सुनारका पता लगाकर अपने साथ चलनेके लिये तय्यार

करने लगा। जब सुनार बादशाहके पास लाया गया तो उसकी वही दशा थी जो उसकी माशूक़ाकी थी। बड़ा आश्वासन दिया, धन दिया और सत्कारपूर्वक स्थान दिया। इतना हो चुकनेपर महात्माने स्पष्ट कह दिया कि यदि आप उसको प्रसन्न देखना चाहते हैं तो उसको सुनारके पास रहनेकी आज्ञा दें ताकि वह दोनों एक दूसरेसे मिलकर शाद हों।

बादशाहने आज्ञा दे दी और वह स्त्री सुनारके पास जा पहुंची। अब शमअ (दीपक) और परवाने (पतङ्गा) का फिर समागम हुआ। छ मास जब इस प्रकार इन दोनोंको इकट्ठे रहते हो गये तो स्त्रीको पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त हो गया और वह हर तरहसे हृष्ट पुष्ट दीखने लगी। स्त्रीकी बीमारी और उसका यह विचित्र इलाज देखकर बादशाहने सोचा कि इस सुनारको मरवा डालना चाहिये ताकि स्त्रीका प्रेम उधरसे हटकर मेरी तरफ़ हो जाय। चुनांचे ऐसा ही हुआ,—सुनारको कोई ऐसी ओषधि खिला दी गयी कि वह दिनबदिन सूखने लगा और आखिरकार मर गया। अब बादशाहके मार्गमें कोई कण्टक न रहा जो उसकी आशाओंपर धूल डाले।

तात्पर्य यह कि आत्मा ही बादशाह है, स्त्री माया है, सुनार प्रतिद्वन्द्वी है। सत्संगसे आशायें पूर्ण होती हैं। मायाके लिये मनुष्य तरह तरहके पाप करता है। चाहिये कि इसका प्रेम परमात्मासे हो जिससे स्थायी आनन्द मिले।

—

दुष्ट मन्त्री और धर्मपरायणा देवी

एक यहूदी बादशाह था। उसने अपने यहूदी धर्मके पक्षपातमें आकर अपने राज्यमें रहनेवाले ईसाइयोंको मरवा डालना चाहा और एक दिन इस इच्छासे प्रेरित होकर एक प्रसिद्ध ईसाईका खून भी कर डाला। ईसाइयोंमें बड़ी खलबली मची। वह लोग सोचने लगे कि क्या किया जावे जिससे ईसाइयोंकी रक्षा हो।

बादशाहको जब मालूम हुआ कि एक ईसाईकी मृत्युपर सब ईसाई एकत्रित होकर अपनी रक्षाका सलाह-मशवरा कर रहे हैं तो उसने अपनी इच्छाओंको पूर्ण करनेके लिये अपने प्राइवेट सेक्रेटरी—मन्त्री—को बुलाया और कहा कि इस कार्यकी सिद्धिमें आप मुझे कोई अच्छा मशवरा दीजिये।

मन्त्रीने कुछ देर सोचनेके बाद कहा कि एक तरकीब है। यदि उसपर अमल किया जावे तो निस्सन्देह कामयाबी होगी। तरकीब भी अपने ढंगकी निराली है। मैं यह चाहता हूं कि आप मुझपर ईसाई होनेका दोष लगाकर मुझे राज्यच्युत कर दें और मेरे हाथ, कान तथा नाक कटवा डालें। यह सजा पाकर मैं ईसाइयोंमें जा मिलूंगा और उनमें फ़साद करा आपसमें ही लड़ाई करवा दूंगा जिससे वह एक दूसरेके शत्रु हो जायँगे और लड़ मरेंगे।

बादशाहको यह तजवीज़ बहुत पसन्द आयी। उसने अगले दिन ही भरी सभामें मन्त्रीपर दोष लगाकर, उसके नाक कान और हाथ काट लिये और राज्यसे निकल जानेको कहा।

इस विचित्र दशामें निकलकर उसने ईसाइयोंको तरफ जाना उचित समझा। उधर ईसाई लोग भी अपने दीन-धर्मका ऐसा अपमान समझकर उसीके दुःख-दर्दमें शरीक होनेको आ रहे थे। जब एकने दूसरेको देखा तो एक प्रकारकी बिजलीसी दौड़ गयी। ईसाइयोंने कहा कि हममें धर्मका लेश भी बाकी नहीं रहा! यदि हम पक्के ईसाई होते तो क्या यह सम्भव था कि बादशाह हमारे नेताका इस प्रकार अङ्गच्छेद करता? हमको उचित है कि आजसे इस धर्मात्माको जिसने कि अपने धर्मके लिये न केवल राज्य-सुखपर ही लात मारी है अपितु अपने नाक कान और हाथ तक कटवाना स्वीकार किया है, अपना आचार्य्य—रहबर मान लें और इसकी अध्यक्षतामें अपना भारी संगठन करें। सबने बड़े उत्साहसे इसका समर्थन किया और उसको अपना धर्माचार्य्य मान लिया।

हाथ-कान कटवाकर जब यह उनकी सारी जातिका नेता बन गया तो अब इसने स्थान स्थानपर जाकर धर्मोपदेश देना आरम्भ कर दिया। उसकी मधुर भाषा और ओजस्वी शब्दोंने जादूका काम किया—सारे ईसाई मुट्ठीमें आ गये। एक दिन सब नेताओंको एकत्रित कर कहने लगा कि अब मैं अपना कल्याण करनेके लिये एकान्तवास करना चाहता हूं। मेरी इच्छा है कि किसी गुहामें ४० दिन निवासकर परमात्माको प्रसन्न करूं। लोगोंने बड़ा शोरगुल मचाया कि आपकी बड़ी आवश्यकता है आप अभी एकान्तमें न जाइये, अभी आप मौन-

व्रत न धारण कीजिये, पर उसका तो कार्य्य-क्रम बन चुका था इसलिये उसने किसीकी न सुनी और सबको पृथक् पृथक् बुलाकर कह दिया कि मेरे बाद तू ही मेरा उत्तराधिकारी बनना। जब चालीस दिन गुफामें घुसे हो गये तो सब ईसाई इस बदमाशके दर्शनोंको आये। जब बहुत देरतक प्रतीक्षा करनेपर भी अन्दरसे कोई न निकला तो एक व्यक्ति अन्दर घुसा, देखा तो आचार्य्य महाराजकी राम राम सत् हो चुकी है। उसी गुफामें उसकी समाधि बनायी गयी और प्रश्न उठाया गया कि अब इनका उत्तराधिकारी कौन बनाया जाय? सैकड़ों खड़े हो गये और कहने लगे कि मुझसे कहा था कि उत्तराधिकारी तुम बनना, सभी स्वार्थके पुतले बने हुए थे। इस प्रकार उसकी मृत्युके साथ इन उत्तराधिकारियोंमें भी जूता चला, नौबत यहांतक पहुंची कि हर एक अपनी ज़िद्दपर अड़ गया और तलवार ले आया। फिर क्या था वह घमसान मची कि ढेर हो गये—आपसके वैरसे ही मारे गये, बादशाहको किसी क़ानून या अस्त्रप्रयोगकी आवश्यकता ही न हुई।

इस प्रकार जब यह बादशाह अपने स्वामिभक्त मन्त्री द्वारा यह अत्याचारकर ईसाइयोंका सर्वनाश कर चुका तो एक विचित्र घटना हो गयी। उसी बादशाहके राज्यके पासवाले देशोंके और यहूदी बादशाहने यह उपद्रव मचाया कि एक खाई खुदवाकर उसमें एक मूर्ति रखवा दी और यह हुक्म जारी कर दिया कि हर एकका फ़र्ज है कि इस बुतके

आगे सिर झुकाकर नमस्कार करे। यदि कोई नहीं करेगा तो वह आगमें डाल दिया जावेगा। यह आग उस बुतके पास ही प्रदीप्त कर दी गयी थी। इस मूर्खको यह पता नहीं कि ईश्वरको हटानेवाला असली बुत तो इसका नफ्स-मन ही है जिसकी अभिलाषाओंको पूर्ण करनेमें ही इसको दिन-रात लगना पड़ता है। बुतोंका तोड़ना आसान है—यह तो हर एक कर सकता है। कठिन है! मनरूपी राक्षसका मारना और इस चित्त-बुतकी इच्छाओंको तोड़ना। जब बुतको सिर झुकानेका हुक्म सब जगह फैल गया तो लोगोंको राजदण्डके भयसे सिर झुकाते ही बना। पर सब कोई एकसे नहीं होते—एक स्त्री तथा एक बच्चा यह दो प्राणी बुतके आगे पेश किये गये और कहा गया कि यदि तुम इसको नमस्कार नहीं करोगे तो इस जलती हुई आगमें डलवा दिये जावोगे। यह सुनकर उस धर्मनिष्ठा सती देवीने कहा कि सिवा ईश्वरके और किसीके आगे सिर नहीं झुकाऊंगी। देवीके ऐसे आग्रहपूर्ण वाक्यको सुनकर बादशाहने बच्चेको आगमें डाल दिया। इस अत्याचारमय पापकृत्यको देख देवीका हृदय सहम गया और भयभीत हो चाहा कि बुतको नमस्कार कर दें मगर ज्योंही कदम बढ़ाया बच्चेने आगमें जलते हुए यह वचन कहे कि—ऐ मेरी प्यारी अम्मां! मैं यद्यपि आगमें हूं तथापि आज़ाद हूं, यह ज़ुल्मत नहीं रहमत है, दुःख नहीं सुख है, आग नहीं शीतल जल है, मातृप्रेमसे खिंची हुई तू भी मेरे पास ही आ जा। माता! यहांपर इकबाल है और माला-

माल है, अन्दर आकर इसके सुखको देख और खुदाके लुत्फको देख। इस तरहसे आ जा जैसे परवाना दीपकपर आता है। यह प्यारी प्यारी उत्साहभरी बच्चेकी धर्मपूर्ण बातें सुनकर माताने भी आगमें छलांग मारी और झट बच्चेको गोदमें ले लिया। इस देवीको औरत नहीं समझना, यह देखनेमें तो बेशक औरत थी पर वास्तवमें इसका दिल और गुर्दा मरदाना था। धिक्कार है उन कायरोंपर जो थोड़ेसे सुखके लिये आगसे डर कर धर्म-नाश कर गये। जब यह दोनों मां-बेटा आगमें गिरे तो आग सचमुच ठण्डी बरफ हो गयी और उसने इन दोनोंको ऐसे ऊपरको उछाला कि यहूदी शाह हैरान हो गया और अपने इस पापपर परेशान होकर आगसे यों कहने लगा—हे अग्नि देवता! क्या कारण है कि तूने इनको नहीं जलाया? तूने अपना जलाने-का धर्म क्यों त्याग दिया? तूने अग्नि-पूजक मुझ यहूदीकी इच्छा पूर्ण करनेके लिये क्यों न इनको भस्म कर दिया? क्या इन पापी विधर्मियोंको नाश करनेकी तुझमें शक्ति नहीं रही?

अग्निने जब यह बातें सुनी तो वह कहने लगा कि—सुन! पापी सुन! मैं वही आग हूं जिसने सेकड़ोंको जलाकर खाक कर डाला है, मुझमें वही शक्ति है जो पहले मौजूद थी। बात इतनी है कि मैं परमात्माकी आज्ञाको मानता हूं और किसीकी नहीं, यदि वह कहे तो जलाऊं और कहे तो न जलाऊं। यदि ईश्वर चाहे तो मैं शान्तिमय हूं और वह नाराज हो तो आगबबूला हूं। इतनेमें ४० गज ऊंची ज्वाला हो गयी और बादशाह समेत सब

पापी जल गये। तात्पर्य यह कि दूसरोंको कष्ट पहुंचानेके लिये अपने हाथ-पैर कटवाने पड़ते हैं। संसारके अधिकारोंकी प्राप्तिके लिये शत्रुता और पाप करना अच्छा कर्म नहीं है। धर्मकी रक्षाके लिये यदि आगमें भी जलना पड़े तो सहर्ष जल मरना चाहिये। अग्नि आदि सकल भौतिक पदार्थ ईश्वरकी आज्ञा पालन करते हैं। यदि ईश्वरकी कृपा हो तो आग न जलावेगी और न पानी डुबोवेगा। पापीके मारनेको पाप महाबली है।

खरगोशने शेर मारा

(१) कलेलाको पढ़ो तो तुमको एक मनोरञ्जक कहानी मिलेगी। उसको ध्यानसे देखो और शिक्षा ग्रहण करो। एक वनमें बहुतसे पशु रहते थे। एक बार उनका उस जङ्गलके राजा शेरसे मनमुटाव हो गया। शेर यह चाहता था कि वह स्वच्छन्दतासे घूमा करें, बल्कि मेरा ख्याल रखते हुए अपना कार्य किया करें, पशुओंको यह अभीष्ट था कि हमारे भोजन-गृह—चरागाहमें कोई उपद्रव न हुआ करे और इसमें हमलोग स्वतन्त्रतापूर्वक विचरा करें। एक दिन इसी कशमकशमें पशु महासभाका अधिवेशन हुआ और निश्चय करके प्रतिनिधिगण महाराज सिंहदेवके पास पहुंचे और कहने लगे कि आपके कृत्यों-से हमको भी क्लेश होता है और आप भी कुढ़ते रहते हैं। इस-

(१) कलेला दमना नामकी एक अरबी पुस्तक है जो पंचतत्रका भावा-नुवाद है (ले०)।

लिये यदि आप ऐसा करें कि हममें एक पशु वारी वारीसे नित्यप्रति आपकी सेवामें आहारस्वरूप आ जाया करे तो बहुत अच्छा हो—हम भी स्वतन्त्रतासे विचरें और आप भी अनायास ही भोजन प्राप्त कर सकें। सिंहने जब यह सुना तो वह कहने लगा कि इसी प्रकारसे पहले भी कई एकने मुझको धोखा दिया है। यदि तुम भी धोखा देकर जलेको जलावोगे तो कियेका फल अवश्य पावोगे। जावो, कलसे एक पशु नित्य हमारे पास पहुंच जावे। सब पशु अपने २ घर आये और वह शेरके पास नित्यप्रति एक पशु भेजने लगे। एक दिन जब पशु घटते घटते रौनक कम होने लगी तो सबने मिलकर फिर एक कानफरेंस की और निश्चय किया, कि किसी प्रकार शेरको मारा जाये और इस महती आपत्तिसे अपनी जातिको बचाया जाये। सर्वसम्मतिसे ऐसी युक्तिका ढूंढ़ना एक नवयुवक शशिकुल-भूषण खरगोशके ऊपर अर्पित किया गया। खरगोश मनुष्य तो नहीं था पर बुद्धि रखता था, अपने देश और जातिका शुभचिन्तक था। कहा है कि जिसने संसारमें जन्म लेकर अपनी जातिकी रक्षा नहीं की उसका जन्म ही वृथा है। खरगोश ऐसी युक्ति सोच रहा था कि जिससे उसकी भी जान बचे और जातिका भी कल्याण हो। आखिर सोच विचारकर चल खड़ा हुआ। चलते चलते बहुत देर लग गई, वह नियत समयके बहुत बाद पहुंचा। शेर बहुत भूखा था उसे प्रतीक्षा करते क्रोध उत्पन्न हो रहा था। इतनेमें खरगोश भागता हुआ आया। शेरने देखते ही कहा कि ठीक ठीक सब हाल बताओ

वरना तुम्हारे सब जातिवालोंको आज ही यमपुर पहुंचाऊंगा। खरगोशने भयभीत हो बड़े विनयसे यह कहा कि महाराज! मैं आपकी क्षुधा शान्त करनेके लिये आ रहा था कि मार्गमें एक और शेर मिल गया। उसने झपटकर मेरे एक साथीपर हमला किया और कहने लगा कि मेरे सिवा और कौन है जो खायेगा। मैं तो जल्दीसे भागा और आपके पास आ पहुंचा हूं पर मेरा दूसरा साथी उसीके कब्जेमें है, यदि आपको विश्वास न हो तो चलकर देख लीजिये, वरना जो इच्छा हो कीजिये। शेरका पारा चढ़ गया और कहने लगा कि चल, जल्दी चल! मुझे दिखा वह कहां है, मैं उस दुष्टके पापकृत्यका बदला चुकाऊं। इतना कह दोनों वहांसे चले और चलते चलते एक कूपके पास पहुंचे। खरगोशने लपककर कहा—हे दीन-रक्षक! मेरे साथी खरगोशको पकड़कर वह शेर इसी गुफामें बैठा है। आइये और देखिये। शेर और खरगोशकी छाया कूपके जलमें पड़ रही थी। शेरने जब देखा कि कोई और शेर एक खरगोशको पकड़े छिपा बैठा है तो बड़े जोरसे गुर्राया। उसका गुर्राना था कि कुएंके अन्दरसे भी उसी प्रकारका स्वर निकला। बस, फिर क्या था शेरको पूरा पूरा निश्चय हो गया कि इसी दुष्टने मेरे अधिकार छीननेकी पापमयी चेष्टा की है। झटसे छलांग मार कुएंमें कूद पड़ा। पाप करनेकी कैसी अच्छी सजा मिली! बुद्धि भ्रष्ट हुई और अपने ही आपको और समझ कष्टमें पड़ गया। ऐ मनुष्य! तू आप ही अपनेको मारता है और

अपने ऊपर लानतके तार स्वयं ही तानता है। इस प्रकार खरगोशने अपने देश और जातिके शत्रु शेरको महा अन्धकारमय कूपमें डालकर अपने भाइयोंको हर्ष-समाचार सुनानेके लिये घरका रास्ता लिया। जब लोगोंने देखा कि उत्साही नवयुवक खरगोश बड़ी प्रसन्नतासे चला आ रहा है तो सब एकत्रित हो उससे सब बीती बात सुनानेका आग्रह करने लगे। खरगोशने जैसा बीता था कह सुनाया—ज्योंही पशुओंको पता लगा कि हमारे वीर भ्राता खरगोशने जाति-शत्रु शेरको अपने बुद्धि-कौशल द्वारा कुएमें गिराकर मार डाला है तो उनकी खुशीका पारावार न रहा। सबने बड़े प्रेमसे खरगोशकी वीरताकी प्रशंसा की। अब पशु लोग इस हर्षसे फूले न समाते थे। खरगोशने उनको शिक्षा देने और सचेत रहनेके लिये मधुर वाक्य कहना आरम्भ किया।

मनुष्यको चाहिये कि विपत्तिमें अपने धैर्यको न त्याग दे अपितु उसको दूर करनेका सदैव प्रबल प्रयत्न करता रहे। जिसने अपने मनको मार लिया समझो कि उसने शेर मार लिया।

स्वाधीनता और तोता

एक व्यापारीने एक तोता पाल रक्खा था। बड़े प्रेमके साथ उसको खिलाता पिलाता था, जहाँ भी जाता उसे अपने साथ ले जाता था। एकबार उसका किसी व्यापारिक उद्देश्यसे भारतवर्षकी ओर जानेका संकल्प हो गया। जब उधर चलने लगा तो उसने उस तोतेको भी पिञ्जरेमें बन्दकर साथ ले लिया। पर जब चलने

लगा तो यात्राके कष्टोंको स्मरणकर अपने इरादेसे बाज़ रहा और तोतेको छोड़ कर ही चला। तोतेने देखा कि मुझे भी साथ ले चलनेकी इच्छा करके फिर क्यों छोड़ जाता है, क्या कारण है कि मुझे छोड़कर जाना चाहता है। इतनेमें सेठ व्यापारीने पूछा कि—ऐ मेरे प्यारे तोता! मैं भारतवर्षको जाता हूं यदि तुझको कुछ कहना हो अथवा कोई आवश्यकता हो तो कह दे ताकि मैं लेता आऊं।

तोता बोला—जब तू तोतोंके घोंसलोंके पाससे गुज़रे तो उनको मेरी तरफ़से यह कह देना कि मैं मुसीबतका मारा पिञ्जरेमें कैद हूं और तुम स्वतन्त्रतापूर्वक बागोंकी सैर करते फिरते हो। मुझे शुद्ध वायु भी नहीं मिलती और तुम उत्तमसे उत्तम स्वादिष्ट फलोंका आस्वादन करते हो, मैं अपनी जातिके पास नहीं पहुँच सकता और तुम नित्य प्रति भाइयोंसे मिलते हो। क्या मित्रों और भाइयोंका यही धर्म है कि अपने एक साथीको कैदमें फंसा देख छुड़ानेका कोई यत्न न करें और उसके दुःख दूर करनेका प्रबल प्रयत्न न करें? भाइयो! जब यार यारोंसे जुदा हो तो बताओ उसका क्या हाल होगा? मैं यदि अपनी मूर्खतासे कैद-में फंस दुःख उठा रहा हूं तो क्या तुम्हारा यही कर्तव्य है कि तुम मुझे भूल जाओ। मैं गरीब हूं, मुसीबतोंका मारा हूं; भाइयो, तुम्हारी यादमें कष्ट भोग रहा हूं। तुम लोग इधर आओ और मुझे छुड़ावो। इस तोतेको पक्षी नहीं समझना चाहिये, क्योंकि इसके दिलमें सुलेमानका आधिपत्य है। तोतेका

सन्देश ले व्यापारी भारतकी यात्राको चल खड़ा हुआ। जब भारतवर्षमें पहुँचा तो एक बड़ा भारी बाग देखा तो उसे ख्याल आया कि शायद यही वह बाग है जिसमें मेरे तोतेके भाई-बन्धु रहते हैं। ज्योंही आगे बढ़ा, देखता क्या है कि तोतोंका बड़ा भारी झुण्ड एक विशाल वृक्ष-शिखरपर बैठा हुआ है। मालूम होता है कि यह सब लोग उस तोतेके साथी मित्रगण ही हैं। बस, वहीं व्यापारीने अपने घोड़ेको रोक लिया और आगे बढ़कर तोतेका सन्देश उन सबको सुनाया। एक तोतेपर उस सन्देशका ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह वृक्षकी शाखासे कांपकर गिर पड़ा और गिरते समय 'मर गया' यह शब्द कहा और मर गया। वास्तवमें अपने भाईके दुःखोंको सुननेसे ही उसपर ऐसा वज्र पड़ा कि उसने अपने जीवनसे हाथ धो बैठा। व्यापारीने यह देखकर कहा कि व्यर्थमें मैंने यह सन्देश सुनाकर इस गरीबके दिलपर चोट लगाई और मैं व्यर्थ हत्याका भागी बना। वाणीका विचित्र प्रभाव है। एकके लिये तीरका काम करती है और दूसरेके लिये अमृतका। व्यापार न कर वह सीधा अपने घरको वापिस हुआ और जाकर तोतेसे सब माजरा कह सुनाया और कहा कि किसी प्रकार वह तोता जी उठे तो मेरा चित्त प्रसन्न हो। तोता कहने लगा कि मुझको उसके पास ले चलो मैं ऐसी कोई युक्ति लगाऊंगा कि वह जी उठे। व्यापारी फिरसे तय्यार हुआ और पिञ्जरे समेत तोतेको उठा भारतवर्षकी तरफ चल खड़ा हुआ। जब उस स्थानमें पहुंचा तो मरे हुए तोतेकी तरफ इशारा करके

कहने लगा कि यह वही प्राणी है जिसपर तेरे सन्देशका मृत्युके रूपमें प्रभाव पड़ा है। तोतेने कहा कि मुझको पिञ्जरेसे बाहर निकाल ताकि मैं इसको देखभालकर चंगा करूं। सेठने तोतेको बाहर निकाला। ज्योंही तोता बाहर निकला, उसे बहुत प्रसन्नता हुई। न जाने कितने सालके बाद उसको यह स्वतन्त्रतापूर्ण वायु मिली थी। निकलते ही पर फैलाये और अपने भाई गिरे हुए तोतेके पास जाकर जोरसे शब्द किया।

शब्दके सुनते ही वह तोता होशमें आ गया और अपने प्यारेसे मिलकर बेहद खुश हुआ। कुछ कालतक एक दूसरेकी ओर प्रेम-भरी दृष्टिसे देखते रहे और बादमें दोनों ही पर फैलाकर आकाश-में विचरण करने लगे। अब मित्रसे मित्र मिल गया और सब इच्छायें पूर्ण हो गयीं। व्यापारी इस अद्भुत कृत्यको देख बड़ा हैरान हुआ और अपने तोतेको पुकारकर कहने लगा कि यदि अब तू मुझको छोड़ना चाहता है, बेशक छोड़ दे पर इतना तो कर कि मुझे कुछ उपदेश मिल जावे। तोतेने फिर ऊपरसे ही उपदेश दिया और व्यापारी सुनकर शिक्षा ग्रहणकर अपने कार्य-को चला गया।

मनुष्यको चाहिये कि अपनी इस मादी जिन्दगी (प्रकृति-मय जीवन) से खुश न रहे और सदा प्रयत्न करता रहे कि किसी तरह इस दुःखी जीवनसे छूटकर स्वतन्त्र जीवनको हासिल करूं। संसारके ऐश-आराममें फंसकर आज़ादीके जीवनको भुला नहीं देना चाहिये।

मिले खुश्क रोटी जो आज़ाद रह कर
तो वह खौफ़ जिल्लतके हलुएसे बेहतर ।

सुदामाकी मूर्ति

बग़दादमें एक ख़लीफ़ा था जिसने उदारता और दानशीलतामें हातमताईको भी पछाड़ डाला था। उसने अपने दयाके दरियाको हलब और अजमके मशहूर मैदानोंमें बहा रक्खा था। एक दिन एक स्त्रीने अपने पतिसे कहा कि हमें इस प्रकार कष्ट उठाते और दरिद्रतामें दिन काटते बहुत समय गुजर गया। अब चाहिये कि कोई ऐसी युक्ति सोची जावे कि भविष्यत्में सुखमय जीवन व्यतीत करें। पतिने जब सुना तो कहने लगा कि इस दरिद्रतापर शोक मत कर। जहां इतनी उमर गुजरी है वहां बाक़ी भी गुज़र जावेगी, क्यों चिन्ता करती हो और विह्वल हुई जाती हो? ईश्वरने सबका भोग निश्चित कर रक्खा है, घबरानेकी क्या आवश्यकता? देखो पशु-पक्षी अपने अपने स्थानपर उसीके दिये हुए भोगोंको भोगते धन्यवाद कर रहे हैं। जिसने अपना जीवन मीठा—ऐशपरस्त—बनाया है वह आख़िरको कड़वा होकर मरता है। बात यह है कि जिसने शरीर पाला वही कड़वा होकर मरा, इस मोटे-ताजे सुखमय जीवनको त्यागते समय रोता हुआ चला। रात गुज़रती है तो सुबह भी हो ही जाती है। आदमी कबतक शिकायत किया करे। तू अपनी हालत तो देख कि किस प्रकार अपनी युवावस्थामें

सन्तोष करती रही और आज बेसब्र होकर दरिद्रताकी दुहाई मचा रही है। मेरी तरफ़ देख कि किस प्रकार संतोष धारण किया हूं और हर विपत्तिका स्वागत करनेके लिये तय्यार हूं। जब मेरी यह हालत है तो तू क्यों इस मार्गसे विचलित हो रही है। अब स्त्री फिर बोली और कहने लगी कि तू अहंकारवश सन्तोषकी डींग मार रहा है नहीं तो क्या यह सम्भव था कि तू भी ऐसी बातें कर सकता।

पतिने अपमानमय जो यह शब्द अपनी पत्नीके मुखसे सुने तो बड़े व्यग्रभावसे बोला कि ताने मत मार। मैं अहं-कारसे प्रेरित होकर यह नहीं कह रहा हूँ बल्कि यह सत्य है और मैं अपने अन्दर ऐसा दिल रखता हूँ कि विपत्तिसे विपत्ति-को भी सह लूं पर यह कभी न होगा कि ऐहिक भोगोंके लिये मैं किसीके आगे हाथ फैलाऊं। यदि तुझको विश्वास न हो तो मैं मरकर सबूत भी दे सकता हूँ। स्त्रीने यह सुनते ही अपना सिर पतिदेवके चरणोंपर रख दिया और कहने लगी कि महाराज! मैं तो आपकी दासी हूँ, केवल आपके भाव देखना चाहती थी, अब तो मैं पूर्णरूपसे आपकी सहायक रहूँगी और आपके चरण-चिह्नोंपर चलती हुई यह कभी न कहूंगी कि मेरे लिये सन्तोषकी मर्यादाको भंग कर डालिये। और जो आपने मरकर सबूत देनेकी बात कही है सो महाराज, ऐसा मत करिये, मैं तो आपकी कृपाकी भिखारिन हूं, ईश्वर आपको इससे अधिक सं-तोष प्रदान करे और मुझे आपकी दासी बनाये रक्खे।

तात्पर्य्य—दानवीर बनना चाहिये। दुःखसे घबराकर भागने-पर उतारू होजाना कायरोंका काम है। कायर न बनकर धीर ही बनना चाहिये।

हजरत मुहम्मद्का मरते समय उपदेश

जब हजरत मुस्तफा-मुहम्मद् साहिब यमपुरके पास पहुंचने लगे तो मृत्यु निकट जान अपने प्यारे उत्तराधिकारी हज़रत-अलीको बुलाया और अन्तिम समयमें उपदेश किया कि यद्यपि तुम पुरुषसिंह हो और वीरवर भी हो तथापि अपने वीरत्व और पराक्रमपर अभिमान न करना बल्कि आशाकी छायामें बैठकर सदा उन्नत होनेका दृढ़ संकल्प रखना। तुमको चाहिये कि निष्कपट धर्मात्मा सज्जनका सदा सत्संग करते रहो और उसकी संगतिसे ईश्वरतक पहुंचनेका प्रयत्न करो। अपने मनको सदा वशमें रक्खो और जब वह ख़राबी करे तो युद्धकर उसे ठीक मार्गपर लानेकी चेष्टा करो। वृद्ध और गुरु-जनोंकी आज्ञाओंको श्रद्धासे सुनो तथा उनपर आचरण करो। हरएक प्राणीसे प्रेमका बर्ताव करना चाहिये और किसीको भी अपनी तरफसे कष्ट नहीं होने देना चाहिये।

पैगम्बरकी पहचान

हजरत नूहने अपने भाई-बन्धुओंको उपदेश दिया है कि जब मुझमें स्वार्थ और सकाम कर्मोंकी इच्छा नष्ट हो गई और मैंने मनको ईश्वरकी तरफ लगा दिया तो मैं इस योग्य हुआ कि

ईश्वरका पैग़ाम—सन्देश—ला सकूं। नूह यदि ईश्वरकी तरफसे न होते तो किश्तीको किस प्रकार सही सलामत ले जाते ?

स्वामि-भक्त लोमड़ी

एक जंगलमें बड़ा भारी पराक्रमी शेर रहता था जिसके आगे केसरी भी कुछ हैसियत नहीं रखता था। कहते हैं कि एक दिन उसने अपने पञ्जोंसे जो हाथीको भी फाड़ डालनेकी शक्ति रखते थे, एक बकरी, एक गाय और एक श्वेत खरगोशका शिकार किया। शेरका महामंत्री भेड़िया था, शेरने उससे सलाह लेनेके अभिप्रायसे पूछा कि ऐ मेरे दोस्त, मुझको बता कि मैं कैसे—किस प्रकार—से इन तीनोंका भक्षण करूं। भेड़ियेने सुनकर कहा कि महाराज! आपके लिये तो गाय ही सर्वश्रेष्ठ भोजन है, शेष दो जो हैं वह हम गुलामोंको मिल जाने चाहिये। शेरने क्रोधपूर्ण शब्दोंमें कहा कि ऐ बेअदब, उद्धत और उद्दण्ड! क्या तुझको लज्जा नहीं आती कि मेरा साझीदार बन रहा है! इतना कह भेड़ियेको फाड़ डाला। इतनेमें एक लोमड़ी आगे बढ़ी और कहने लगी कि अन्नदाता! आज्ञा हो तो मैं कुछ निवेदन करूं। शेरने कहा बहुत अच्छा; तुम ही बताओ कि इन तीनोंका किस प्रकार भक्षण करूं। लोमड़ी बोली, महाराज! प्रातःकालका आहार तो गायका करिये और दोपहरको बकरीका तथा शामको खरगोशका आस्वादन करिये। शेरने सुना और बड़ी प्रसन्नतासे खरगोशका आहार उसीको इनाम दिया।

तात्पर्य्य—जो अपनी चिन्ता करता है वह फाड़ा जाता है और जो दूसरेका ही ख्याल करता तथा अपने आपसे बिल्कुल खुदीको निकाल डालता है वह इनाम पाता है। हे मनुष्य! तू अपने स्वामी जगदीश्वरको प्रसन्न करनेकी सदा कोशिश किया कर और अपने अन्दरसे स्वार्थ-भावोंका नाश कर दे।

हजरत अलीकी क्षमाशीलता

हजरत अली एक बार किसी युद्धमें सम्मिलित हुए। जाते ही काफिरोंकी सफ़ोंको गाजर-मूलीकी तरह काटने लगे। काटते २ एक ऐसे स्थानपर पहुंचे कि जहां एक बड़ा नामी योद्धा-पहलवान—था! ज्योंही अलीने उस महावीरपर हमला करनेका इरादा किया त्योंही उसने झटसे अलीके मुंहपर थूक दिया। मुंह साफ करके अलीने दूसरी तरफको रुख फेरा और उस पहलवानको क्षमाकर छोड़ दिया। पहलवान आगे बढ़ा और कहने लगा कि क्या कारण है कि आपने मुझको छोड़ दिया, मारा नहीं? अली बोले कि ऐ नामी जवान! मैंने इसलिये तेरी जान बख़शी है कि तुझको याद रहे कि मैं ईश्वरकी आज्ञा पालन करनेके लिये ही युद्ध करता हूं। इस समय तूने मेरा अपमान करनेके लिये यह कृत्य (थूकना) किया है। मैंने ऐसे समय यही उचित समझा कि अपमान करनेवालेको क्षमा कर दूं। अब तुम चाहे जैसा मेरे साथ सलूक करो। वह अलीके चरणोंपर गिर पड़ा और सदाके लिये उनका दास हो गया।

तात्पर्य्य—अपमान करनेवालेको क्षमा करना चाहिये। क्षमा इसीका नाम है कि शक्ति होते दण्ड न देना बल्कि अपनी सुजनतासे अपने वशमें कर लेना।

सूफीका गधा

एक दिन एक सूफी यात्रा करता हुआ सूफियोंके एक समुदायमें पहुंचा और कहने लगा कि मेरे गधेके लिये दाना और घासका प्रबन्ध करो। उन्होंने जब सुना कि गधेके लिये घास-चारा मांगता हैं तो 'लाहौल' (१) कह दिया और दाना-घास कुछ न दिया। थोड़ी देर बाद फिर कहा कि गधेके लिये घास लाओ तो फिर उत्तर लाहौलमें ही मिला। सारी रात यही हालत रही—वह गधेके लिये दाना घास मांगता रहा और वह लोग लाहौल कह देते रहे। आखिर ज्यों-त्यों करके रात गुज़री और सुबह हुई। सूफीने अपने गधेको खोला और पालान बांधकर चलनेको हुआ। इतनेमें लदा-लदाया गधा धड़ामसे गिर पड़ा। लोगोंने सूफ़ीसे पूछा कि इसको क्या हुआ जो यह गिर पड़ा? सूफ़ीने कहा कि मेरा गधा तो

(१) सुना होगा कि जब किसी अनिष्टकी सम्भावना होती है तो मुसलमान लोग लाहौल कह दिया करते हैं। पूरा यह वाक्य इस प्रकार है कि—लाहौलुन् व लाकुव्वतुन् इल्ला बिल्ला है। भाव यह है कि ईश्वर ऐसा न करे। गधेको शैतान माना गया है और शैतानके लिये ही विशेष कर लाहौल कही जाती हैं। ले०।

बड़ा शक्तिशाली है पर रातभर चूंकि इस बेचारेको घास-दानेकी जगह "लाहौलवला"की ही ख़ुराक खानेको मिली, भला कैसे चले। दाना जब खाता तो चलता। बादमें दाना मिला और उस गरीबकी जानमें जान आयी।

तात्पर्य्य—अपने नफ़्सको गधा समझो और सदा उसको डण्डेसे सीधा करो। कभी भरपेट मत खिलाओ। कहीं ऐसा न हो कि शरारत सूझे और दुलत्ती झाड़ दे। अनशन व्रत करो और मनको वशमें करो।

स्वर्ग छोड़ नरकमें क्यों गया था

एक बादशाह अपने साथ एक बाज रखता था। एक दिन न जाने उस बाजके दिलमें क्या समायी कि बादशाहको छोड़ चल दिया। बादशाहको बड़ा आश्चर्य हुआ, पर उसने उसका ख्याल ही छोड़ दिया। बाज छूटकर एक ऐसे व्यक्तिके हाथ पड़ गया कि जिसने पहले तो उसके पर काट लिये और नाख़ून बड़े २ समझकर तराश दिया और एक रस्सीमें बांधकर उसके आगे घास डाल दी और कहने लगा कि वह कैसा मूर्ख था जिसने अभीतक नाख़ून भी न साफ कराये; बल्कि उलटे बढ़ा दिये। देख! मैं आज तेरी कैसी सेवा-शुश्रूषा कर रहा हूं। तेरे बाल बढ़ गये थे सो मैंने कतर डाले और तुम्हारी हजामत बना दी तथा नाख़ून बढ़ गये थे सो भी काट दिये। तुम अपनी बदक़िस्मतीसे ऐसे जाहिलके हाथ पड़ गये थे जो तुम्हारी देख-माल करना

नहीं जानता था। अब तुम यहीं रहो और देखो कि मैं कैसी बुद्धिमत्तासे तुमको घास चरा चराकर हृष्ट-पुष्ट बनाता हूं।

जब बादशाहने बाज़को बहुत ढुंढ़वाया और कहीं न मिला तो पहिले उसका ख्यालतक छोड़ना चाहा पर मित्रताने विवश कर दिया और बादशाह स्वयं बाज़के ढूंढ़नेको बाहर निकला। चलते चलते वह भी उसी स्थानपर पहुंचा जहां कि बाज़ अपने पर कटवाये रस्सीमें बंधा घासपर मुंह मार रहा था। ऐसी विचित्र दशा देखकर बादशाहको बड़ा क्लेश हुआ और अपने तथा बाज़ और उस मूर्खके हालपर शोक करता हुआ बाज़को लेकर चला आया। रास्तेमें बार बार यह कह रहा था कि 'स्वर्गसे नरक' में क्यों गया था।

तात्पर्य्य—आत्मा भी अपने मित्र, मालिक और बादशाह परमात्माको छोड़कर अपने गुणोंसे भी हाथ धो डालता है। प्रकृति-माया सबके पर काट लेती है। मूर्ख लोग अपनी मूर्खता-से अपने हर कृत्यको विद्वत्तामय ही समझा करते हैं।

ईश्वर जब देता है तो छप्पर फाड़कर देता है

शेख मुहम्मद अपने दानके कारण सदा करज़दार रहते थे, अगरचे अमीरों, शाहों और धनपात्रोंसे बहुत धन भेंटमें पाते थे। वह यह समझकर दान करते थे कि यहांका बोया वहां काटा जायगा तथा यहांका लिया वहां काम आयगा। जितना आता था गरीबों, मुहताजों और अपाहजोंमें तकसीम कर देते थे।

इसी प्रकार दान करते २ शरीरने कार्य करनेसे इस्तीफ़ा पेश कर दिया—वृद्ध हो गये। ऋण देनेवालोंने देखा कि इनकी मृत्यु निकट ही मालूम पड़ती है, अब क्या आशा है जो यह अपना ऋण अदा करेंगे। वह सर्वथा निराश हो गये और इसी निराशाकी हालतमें शेख़के पास पहुंचे। शेख़ने देखा तो कहने लगे कि ऐ धनियो! क्या तुमको लज्जा नहीं आती कि तुम निराश होकर परमात्माके द्वारको कृपणताका मरुस्थल समझ रहे हो। याद रक्खो—

उसे फ़ज़ल करते नहीं लगती बार।
न मायूस उससे हो उम्मेदवार॥

इतनेमें एक बालक निहायत नफ़ीस-अत्युत्तम हलुआ लेकर बेचता २ शेख़के घरकी तरफ़ आ निकला। शेख़ने हलुवाफ़रोशको भीतर बुलवाया और आधे दीनारमें साराका सारा ख़रीद लिया और जितने लोग उपस्थित थे उनमें बांट दिया। लोगोंने भी बड़े मज़ेसे खाया। जब लड़केने दाम मांगे तो कहने लगे कि मेरे पास तो कुछ भी नहीं। लड़केने थाली ज़मींनपर दे मारी और सिर पीटकर रोने लगा। जब यह तक़ाज़ेपर तक़ाज़ा हो रहा था एक तरफ़ ऋण देनेवाले ऋण वापस चाहते थे और लड़का हलु-एका दाम मांग रहा था उसी समय एक धर्मात्मा सेठ यह सुन-कर कि महात्मा शेख़ अहमद मृत्यु-शय्यापर लेटे अन्तिम श्वास लिया चाहते हैं दर्शनार्थ आ पहुंचा और चरणोंपर सिर रखकर विनयपूर्वक कहने लगा कि महाराज, कुछ आज्ञा हो तो सेवकको

सेवाका सौभाग्य प्राप्त हो। शेख़ने कुछ नहीं कहा, केवल हाथसे बैठे हुए लोगोंकी तरफ़ इशारा कर दिया। सेठने झटसे चार सौ दीनारकी थैली आगे धर दी और कहने लगा इसको अपने काममें लाइये। शेख़ने लिया और क़रज़दारोंका क़रज़ निपटा तथा सेठके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करता हुआ श्वास छोड़ चल बसा।

तात्पर्य्य—कभी निराश नहीं होना चाहिये। सदा ग़रीबों और अनाथोंके दुःख दूर करते रहना चाहिये। जो दीनोंके दुःख हरता है परमात्मा उसके दुःख हरता है।

बाज़की दुर्गति

एक बाज एक दिन चुग़्दोंके जंगलकी तरफ़ जा निकला। जब उस स्थानपर पहुंचा और उसने चुग़्द ही चुग़्द देखे तो इस वीरान जगहमें पहुंचनेसे घबराया, पर क्या करता रास्ता भूल गया था, इसीलिये यहां आ निकला था अब सिवा अफ़सोसके और क्या करता। बाजकी तो यह हालत थी उधर चुग़्दोंने उसे देखा तो वह आगबबूला हो गये। यह समझा कि हमारे इस सुरम्य स्थानपर अधिकार करने आया है। इस विचारके आते ही सब चुग़्द इकट्ठे हो कुत्तोंकी तरह बाजपर टूट पड़े और उस मार्गसे विचलित पक्षीको नोचने लगे। बाज एक तो पहिले ही इस भयानक स्थानसे घबरा रहा था दूसरे जब इस तरह घेरा गया तो बहुत ही शोकाकुल हुआ। आख़िर सबको सम्बोधित कर कहने लगा कि मुझे क्यों मारते हो, मैं बदनसीब भूला-भटका इधर आ लगा हूं,

मेरे हृदयमें तो स्वप्नमें भी यह इच्छा नहीं कि मैं तुम्हारे स्थान पर अधिकार करूं। मैं तो बादशाहके हाथपर बैठा करता हूं भला मैं तुम्हारे इस रद्दी स्थानको कब पसन्द करूंगा? तुम मुझपर मेहरबानी करो और छोड़ दो। चुग़दोंने सुना तो वह बोले कि तू बड़ा मक्कार है, अपने छल कपटसे हमारे घरपर अधिकार करना चाहता है। भला यह कैसे हो सकता है कि एक साधारण पक्षी बादशाहका मित्र हो और उसके हाथपर बैठता हो? बाज़ने जो इस प्रकार चुग़दोंकी बातें सुनीं तो वह कड़ककर बोला कि ख़बरदार, मुझको अकेला न समझना, यदि बादशाहको पता लगा कि तुमने मेरा एक बाल भी बांका किया है तो याद रखना कि तुम्हारा सब घर बरबाद कर दिया जायगा और तुममें एक भी बच न सकेगा। अगर तुम मुझको छोड़ दोगे तो बादशाह तुमको इनाम देगा। अब तुम निश्चय कर लो कि सदाकी बरबादी पसन्द करते हो या यह चाहते हो कि तुम्हें इनाम इकरामसे सरफ़राज़ किया जावे। चुग़दोंने ज्योंही सुना अपने इरादेसे बाज आये और उसको छोड़ दिया।

तात्पर्य—ऐ इन्सान अगर तू शाहंशाहे जहां परमात्मासे मित्रता पैदा कर ले तो दुनियांके काम क्रोधादि चुग़द तेरा बाल तक बांका नहीं कर सकते।

कृपापात्र शिष्य

एक विद्वान् मौलवीके पास एक शिष्य था। उसमें

यह गुण था कि दूर २ के नामी विद्वान् उसके नामसे डरते थे—जिस सभामें पहुंच जाता, किसीकी हिम्मत न होती कि उसका मुक़ाबिला करे। सचमुच वह शास्त्रार्थी—तर्कशास्त्री—था। इस गुणके कारण गुरुकी उसपर बड़ी कृपा रहती थी। इसी लिये वह उसको अपने पास रखा करता था। गुरुजीकी एक सुन्दरी युवती कन्या भी थी जो कभी २ आते-जाते शिष्यकी आंखोंमें चका-चौंध पैदा कर दिया करती थी। शिष्यके हृदयमें गुरु-पुत्री-के लिये प्रेम पैदा हो गया था। प्रेमका ऐसा सबक़ है कि जिसने इसको पढ़ लिया उसको दूसरा कोई सबक याद ही नहीं रहता है। शिष्यकी भी यही हालत हुई। प्रेमके चक्करमें वह सब शास्त्रार्थ करना भूल गया। अब तो दिन रात उसके दिलमें परीके समान उस युवतीका ही ध्यान रहने लगा। प्रेममें एक और ख़राबी है कि जिसको यह रोग लग जाता है वह निश्चय ही सूखकर कांटा हो जाता है। उसकी हालत दिनबदिन बिगड़ती ही जाती है। उसका इलाज है उम्मेदका बर आना—इच्छाका पूर्ण होना। प्रेम तो पैदा हो गया पर उसकी इच्छाकी पूर्ति नहीं हुई, इसीलिये वह सूखने लगा। गुरुजी जमानासाज थे, उनकी तजरबाकार निगाहोंने जान लिया कि शिष्य प्रेमके हाथों घायल हो गया है। तुरन्त युवतीको बुलाया और वह कहने लगा कि सुन्दरी, तूने उसका दिल तो ले लिया मगर दिलदारी न की, आशिक़े बेदिलकी कुछ भी ग़मख्वारी न की। जा! जाकर उसको अपने प्रेमसे शादकर और इस प्रकार उस ग़रीब आशिक़

की तीमार कर। पर इतना है कि मुझसे पूछे बिना उससे वादा नहीं करना। इसपर सुन्दरीने कहा कि तीन बार मैं वादे कर चुकी हूं। पर अभीतक उसकी इच्छा पूर्ण नहीं होने पायी। अब मैंने चौथी रातका भी वादा कर दिया है, देखें क्या होता है। शिष्यकी यह हालत थी कि बिना देखे तड़प रहा था। आख़िर चौथी रात भी आ पहुंची। अब तो वादेपर जान फ़िदा होने लगी —ज़रासा भी ख़याल आता और घण्टों बेहोशी रहती थी। उधर युवतीको गुरु महाराजने रोक रखा था, वह बेचारी भी दिलपर पत्थर रक्खे क़ैदमें पड़ी थी। रात गुजर गयी और सूर्य्य उदय होने लगा उधर वह दोनों एक दूसरेके मारे उछलकर एक दूसरेसे आ मिले। गुरुने सच्चा प्रेम जानकर दोनोंकी शादी कर दी।

तात्पर्य्य-जो पुरुष मुक्तिके सौन्दर्यपर लट्टू हो जाता है और सच्चे दिलसे उसकी अदाओंपर फ़िदा होनेको तय्यार हो जाता है, वह जगद्गुरु श्रीपरमप्रभुकी कृपाका पात्र बनता है। कैसा अच्छा होता कि मैं मुक्तिपर फ़िदा होता और सदाका आनन्द पाता।

उपदेश करनेका विचित्र ढंग

हजरत ज़ुन्नून जो कि अपनी तपोनिष्ठामें अत्यन्त प्रसिद्ध थे, यकायक एक दिन पागल हो गये और इधर-उधरकी बातें कहने लगे। बात ठीक ही थी—जब महा मूर्ख चतुर बने अपनी दूकान चला रहे हों तो विद्वान्‌का काम हो जाता है कि वह पागल हो जावे ताकि लोगोंकी दृष्टिमें वह सदा खटकता रहे, अपने आपको

विचित्र स्वरूपमें याद कराये रक्खे। उन्होंने जब विद्वानोंकी ईश्वर-विमुखता देखी तो सिवा पागल बननेके और कोई मार्ग दिखायी न दिया। क्योंकि जब मक्कारके हाथमें क़लम हो तो मनसूर जैसे ईश्वर-भक्त विज्ञानी महात्माको फांसी क्यों न मिले? जब कमीनोंके पास धन और प्रतिष्ठा आ जावे तो नबियों और ईश्वरभक्तोंको क्यों न क़त्ल किया जावे? व्यभिचारियोंका बदन दुर्गन्धसे पूर्ण होता है और शराबीका मुंह सदा गन्दा होता है।

इन्सानका शरीर एक जंगलके समान है जिसमें फाड़ खानेवाले पाप-स्वरूप सैकड़ों भेड़िये हैं। जो बदक़िस्मत इनके फेरमें आ जाते हैं वह नरकमें जाते हैं और जो चौकन्ना रहते हैं वह जमीनपर रहते आस्मानपर पांव रखते हैं। जुन्नूनने अपनेको बचाया और यह मार्ग निरुपद्रव जान स्वीकार किया। जब हजरतके इष्टमित्र तथा सेवकगणको पता लगा कि जुन्नून पागल हो गये हैं तो सब इकट्ठे होकर सेवामें उपस्थित हुए और उनसे इस पागलपनका कारण पूछा। महात्माने कोई उत्तर नहीं दिया, पर लोगोंने साथ नहीं छोड़ा, सदा ही सेवा करते रहे।

तात्पर्य्य—मित्र-सेवककी परीक्षा कष्टके समय ही होती है।

लुकमानका बादशाहको उपदेश

लुकमान हकीम बड़ा विज्ञानवेत्ता था, पर देखनेमें साधारण मनुष्योंके समान रहता था। बाहरी टीप टाप कुछ न थी, बिलकुल सादा था। उनकी विद्या, योग्यता तथा प्रतिष्ठाका सिक्का

सर्वत्र फैला हुआ था। एक दिन किसी बादशाहने यह इच्छा की कि लुकमानको बुलाया जावे और उसकी योग्यताकी परीक्षा ली जावे। देर क्या थी, हुक्म दिया गया और लुकमानको दरबारमें बुलाया गया। जब अच्छी प्रकार बातचीत हुई, बादशाहने जान लिया कि हां, बेशक लुकमान लुकमान ही है, इसके समान दूसरा मनुष्य नहीं मिल सकता। बादशाहके ऊपर लुकमान की योग्यताका ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह उसकी स्तुति करने लग गया और कहने लगा कि मैं आपपर बहुत प्रसन्न हूं, आप मुझसे कुछ मांगें। मैं आपकी इच्छा पूर्ण करूंगा। लुकमान कहने लगा कि तुझको शर्म नहीं आती कि मुझको कमीना समझ रहा है और अपने आपको शाह माने बैठा है। देख, मैंने अभिमान और लोभ इन दोनोंको अपने वशमें किया है। यह मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते, प्रत्युत सदैव नौकरके समान आज्ञा पालन करते हैं। इसीलिये मैं शाह हूं और तेरा यह हाल है कि अभिमान और लोभकी आज्ञासे जहां तहाँ मारा मारा फिरता है। तुझमें अभिमानकी मात्रा पूरी पूरी है और तुझपर लोभका तो पूर्ण अधिकार ही है क्योंकि सदा तू दूसरे देशोंको लोभभरी दृष्टिसे देखा करता है। जो मेरे दास हैं वह तेरे मालिक हैं। तू शाह कैसा है, जा, मैं तुझसे कुछ नहीं मांगता।

शिक्षा—बड़े मूजीको मारा नफ़से अम्माराको गर मारा
निहङ्गो अजदहाओ शेर नर मारा तो क्या मारा ॥

"मनके हारे हार है मनके जीते जीत"

कुरान मनवानेका अजीब तरीका

एक कुरान-पाठकने यह आयत पढ़ी कि—ऐ मुहम्मद! कह दे कि क्या तुमने देखा! यदि तुम्हारा चलता पानी ठहरा दिया जावे और उसको तरी खुश्कीकी सूरत इख्तयार कर जाये, तो कौन है जो फिर उसको जारी और तर कर दे। इतनेमें एक स्वतन्त्रमस्तक कोई विचारवान् वहां आ गया। जब उसने कुरानकी इस आयतका अर्थ सोचा और कहने लगा कि—यदि पानीसे तरी और हरकत निकाली जा सकती है और फिर भी वह पानी कहला सकता है तो ऐसे पानीको तर तथा जारी करना असम्भव नहीं—ऐसे पानीको मैं ले आऊंगा। जब वह रातको सोया तो किसीने उसके गालपर जोरसे एक तमांचा मारा जिससे उसकी आंखें अन्धी हो गईं—सुबह उठा तो कुछ नहीं देख सकता था। जिसने तमांचा मारा था वह आया और कहने लगा कि जा, अब ले आया आंखकी रोशनीको। वह बेचारा हाय तोबा करने लगा। जब इस प्रकार तोबा करते, रोते धोते देर हो गई तो उसकी आंखोंमें रोशनी आ गई। तब उसने उपरोक्त आयतकी सत्यता मान ली और कुरानपर ईमान ले आया।

तात्पर्य्य—सत्यको सत्य ही मानना चाहिये। असत्यको कभी नहीं मानना चाहिये। तमांचा, मुक्का और लड़ाई-दंगेसे असत्यको सत्य सिद्ध नहीं किया जा सकता।

हजरत मूसा और प्रभुभक्त चरवाहा

एक चरवाहा मुसीबतका मारा एक दिन किसी पहाड़के शिखरपर बैठा प्रार्थना कर रहा था कि—हे भगवन्! यदि तू मिल जावे और तेरा इधर आना हो जावे तो मैं तेरी चाकरी करूं, तेरे बालोंको धोऊं और उनसे जुएं निकालूं, तुझको मल-मलकर स्नान कराऊं। हे परमात्मन्! मैं अपनी जान तुझपर कुरबान करूं, तेरे पांवको अपनी दाढ़ीसे साफ करूं, तू सोना चाहे तो तेरे लिये बिस्तरा लगा दूं, अगर तू बीमार हो, तो मैं तेरी तीमारदारी करूं और तुझसे ऐसा पेश आऊं जैसा सेवक स्वामीसे। यह चरवाहा इस प्रकार बक रहा था कि इतनेमें मूसा भी आ निकले और कहने लगे कि ऐ नादान चरवाहे! तू किससे बातचीत कर रहा है और किसको बीमार समझकर तीमारदारी करना चाहता है?

चरवाहा बोला कि परमात्मासे ही बातें करता हूं और उसीकी ही सेवा करना चाहता हूं। मूसा बोला, ऐ बेहूदा दिमाग, यह क्या बकता है! तू तो काफिरोंसे भी बदतर हो गया है। वह परमात्मा इन सब खराबियोंसे पाक है उसको बालों और बीमारियोंसे क्या मतलब? उसकी तो यह शान है कि न वह किसीसे पैदा है और न उससे कोई उत्पन्न हुआ है—वह अजन्मा और नित्य बुद्ध शुद्ध है। उसका इन मनुष्योचित भावोंसे क्या सम्बन्ध?

मूसाकी इस प्रकारकी बातें सुनकर चरवाहा क्रोधातुर होकर अपने कपड़े फाड़कर उठ खड़ा हुआ और वह सिरपर मिट्टी डालकर यह कहता हुआ चला कि ऐ कलीम—ईश्वरसे दू-बदू बातें करनेका अभिमान रखनेवाले! तूने बड़ा पाप किया—मेरा दिल टुकड़े टुकड़े कर दिया।

जब चरवाहा यह कहकर जंगलकी तरफ चला तो कहते हैं कि उसके बाद हजरतको आकाशवाणी सुनाई दी कि—ऐ मूसा! तूने बुरा किया जो मेरे प्यारेको मुझसे जुदा कर दिया। क्या तू इसलिये आया है कि मेरे पास किसीको पहुंचने ही न दे और जुदाईका ही पाठ पढ़ावे या तुझे इसलिये भेजा गया है कि प्रभुप्यारोंको प्रेमालापका संदेश दे। शोक है तुझपर। मैंने हरएकको एक प्रकारके स्तोत्र दिये हैं, उन उनसे ही वह मेरी स्तुति-प्रार्थना करते हैं। यदि उनके विशेष प्रकारके शब्द तेरी समझमें नहीं आते तो तू क्यों उनपर दोषारोप करता है। उस बेचारेने तो मेरी स्तुति की और तूने समझा कि पाप हुआ, उसने शहद परोसा पर तूने जहर समझ लिया, उसने प्रकाश कहा तूने अंधकार समझा, उसने फूल दिया तूने कांटा जाना, उसने अच्छा किया तूने बुरा माना।

मूसिया आदाबे दाना दीगरन्द
सोख्ता जां दर्द दाना दीगरन्द।
मिल्लते इश्क अज हमा दींहा जुदास्त
आशिकां रा मजहबो मिल्लत खुदास्त।
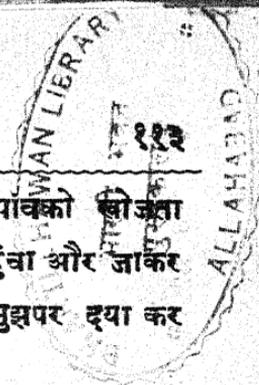
मूसाने जब फटकार सुनी तो चरवाहेके पांवको खोजता हुआ जङ्गलोंको पार करता हुआ उसके पीछे पहुंचा और जाकर चरवाहेको कहने लगा कि ऐ प्रभुप्यारे! मुझपर दया कर क्योंकि मैंने तुझे गंवार चरवाहा समझा था।

मूर्ख मित्रसे बुद्धिमान शत्रु अच्छा है

एक मनुष्य जिस्ममें दिल और दिलमें दर्द रखता था। एक दिन किसी कार्यवश जङ्गलको देखा तो उसे दिखाई दिया कि एक बड़े अजदहा सांपने एक रीछको बुरी तरहसे जकड़ रखा है और रीछ जोर जोरसे चिल्ला रहा है। इसने जो यह दृश्य देखा तो उसका दिल दर्दसे भर आया और सोचने लगा कि वह किस प्रकार इस सांपको मारे और बेचारे रीछको इस दुष्टके पंजेसे छुड़ावे। बाज आदमी ऐसे दर्दमन्द होते हैं कि दुःखियोंकी आहें जब उनके दिलपर पड़ती हैं और आतुरोंके आर्तनाद जब उनके कानोंमें सुनाई पड़ते हैं तो वे तुरन्त दुःखियोंके दुःख दूर करनेकी फिक्र किया करते हैं। आखिर उसको एक साधन मिल गया और उसने सांपको मारकर रीछकी जान बचाई। रीछने प्रेमभरी दृष्टिसे उसकी ओर देखा और सहस्र मुखसे धन्यवाद दिया। यह आदमी अब जहां जाता था रीछ भी स्वयं ही उसके पीछे हो लेता था और वह उसकी रक्षा करता था। जब बहुत दिन व्यतीत हो गये तो एक पुरुषने पूछा कि दोस्त, इस रीछको तुमने क्यों पाल रखा है? उसने उससे उसकी

मुसीबतकी बात कह सुनायी और कहा कि जबसे मैंने उसको मुसीबतसे छुड़ाया है वह मेरा गुलाम हो गया है, अब मुझे इससे कोई भय नहीं है। आगन्तुकने कहा—ऐ नादान! इस दरिन्दे—फाड़खानेवाले जानवर—का विश्वास मतकर। अगर तूने इसको दूर न किया और इसका साथ न छोड़ा तो बहुत जल्द इसीके पंजोंसे कष्ट पावेगा। उसने अक्लमन्दकी बात न मानी और कुछ दिनके बाद वह रीछके हाथों फाड़ डाला गया।

तात्पर्य्य—नादानकी दोस्ती आफते जान हुआ करती है।

"मूर्ख मित्रसे बुद्धिमान शत्रु अच्छा है।"

भेद-नीतिका विलक्षण उपयोग

एक माली अपने बागमें बैठा हुआ था कि उसको तीन आदमी बागमें घूमते दिखाई दिये—एक मौलवी, दूसरा सैयद और तीसरा सूफी। इन तीनोंको देखकर पहले तो वह डरा पर बादमें संभल गया। उसने यह निश्चय किया कि सूफीको इन दोनोंसे जुदा करो और खूब खबर लो। धीरे धीरे उधर चला और पास जा कहने लगा कि मौलवी साहिब! आप तो कुरानके आलिम फाजिल हैं, सुशील हैं और धर्मात्मा प्रतीत होते हैं। मैं आपको सलाम करता हूं। सैयदको देखकर कहने लगा कि सैयद साहिब! आप भी खानदानी मालूम होते हैं, आपकी सभ्यता भी साफ साफ कपड़ोंसे झलक रही है, इसलिये आपको भी मेरा सलाम पहुंचे। दोनोंने जब अपनी तारीफ सुनी तो बड़े

प्रसन्न हुए। अब रह गया सूफी, उसकी भी बारी आ गई और उसकी तरफ देख कहने लगा कि ऐ मुफ्तखोर! तू कौन है जो चोरोंकी तरह इस बागमें घूम रहा है? किस नालायकने तुझको चेला बनाया है? क्या चोरी करनेके लिये ही तूने यह स्वांग रचा है? इतना कह पड़ापड़ जूते मारने लगा। उसे इतना मारा कि गंजा कर दिया। यह कृत्य कर अब उन दोनोंके पास गया और कहने लगा कि मौलवी साहिब! आप तो खैर आलिम आदमी हैं, मगर यह कमोना कैसा सैयद बनता है जो नबीके खानदानमें होकर चोरी करता है। मालूम होता है कि यह दुष्ट चोर ही है, छिपनेके लिये सैयद बना अपनी सभ्यता दिखा रहा है। इतना कह लात, घूंसा, थप्पड़ आदि विविध प्रकारके अर्घ्यपाद्यसे सैयद साहिबकी भी अच्छी मरम्मत हुई। दोनोंको यथायोग्य दान देकर अब मौलवीको दक्षिणा देनेके लिये आया और कहने लगा कि क्यों बे मौलवी! कुरानमें कहां लिखा है कि इस तरह बागमें जाकर चोरी करनी चाहिये। तुझे लज्जा नहीं आती कि अपनी धर्मपुस्तकके विरुद्ध आचरण करके ईमानदार बना फिर रहा है? इतना कह उसपर भी टूट पड़ा और लगा ताबड़तोड़ कोड़ा चलाने। इस प्रकार अकेले एक मालीने तीनोंको जुदा जुदा करके मार भगाया।

तात्पर्य—अपनी प्रशंसा सुनकर साथीकी अवहेलना नहीं करनी चाहिये। सदा परस्पर मिल जुलकर रहना चाहिये, जिससे कोई तुमको जुदाकर मारनेका दुस्साहस ही न कर सके।

सच्चा हज्ज गुरुसेवा है

हजरत तैमूर बुस्तामी जब कभी यात्रामें जाते तो सदा ऐसे सज्जनोंकी तलाशमें रहते कि जो अपना दिल ईश्वरसे लगाये हों और दुनियासे विरक्त हों। एक बार आप हज्ज—मक्काकी तीर्थयात्रा—को चले। रास्तेमें एक साधु मिल गये। खूब सत्संग हुआ। साधुने पूछा—बुस्तामी कहां जा रहे हो? बुस्तामीने उत्तर दिया—हज्ज करने जा रहा हूं। महात्मा बोले—इतना कष्ट क्यों उठाता है? असली हज्ज क्यों नहीं करता? उठ और मेरी परिक्रमा कर। उस जड़ मकानमें क्या रखा है? चेतन काबेकी ओर क्यों नहीं आता? बुस्तामोकी अक्ल ठिकाने आ गई और सचे तीर्थस्थानको पा लिया।

मिस्रमें प्रह्लादका अवतार

फिरऊन मिस्रका बादशाह था। उसका राज्य ऐसा दोषपूर्ण और निकृष्ट था कि सब प्रजा उसके कुशासनसे तंग आ गई थी। हजारों ज्योतिषी उसकी आज्ञामें थे तथा सैकड़ों जादूगर उसके कहनेपर चलते थे। इन ज्योतिषियों तथा जादूगरोंके द्वारा फिरऊन बड़े बड़े पाप करता था और प्रजाको कष्टपर कष्ट देता था।

एक दिन उसने स्वप्न देखा कि बनी इस्राईलसे एक बालक उत्पन्न हुआ है जिसने कि न केवल मिस्रका राज्य नष्ट कर डाला तथा राज्यक्रान्ति हो कर डाली; बल्कि फिरऊनको भी मार

डाला है। इस स्वप्नको देखकर शाह फिरऊन बड़ा भयभीत हुआ तथा मन ही मन कुढ़ने लगा।

अगले दिन ज्योतिषियोंसे पूछा कि इस स्वप्नके सम्बन्धमें अपने विचार प्रकट करो और जहांतक बने प्रयत्न करो कि वह लड़का पैदा ही न हो। इसलिये जाओ और अपनी सम्मति स्थिर करके आओ। ज्योतिषियोंने जाकर एक जंगी सभा एकत्र की और निश्चय किया कि बहुत शीघ्र एक हुक्म निकालना चाहिये कि कोई पुरुष अपनी स्त्रीके पास न जाने पावे जिससे कि न तो गर्भ हो हो और न बच्चा ही पैदा हो। आखिर वह शाहके पास गये और उन्होंने अपना निश्चय बताया। शाहने जब यह सुना तो बहुत प्रसन्न हुआ और उसने ज्योतिषियोंको इनाम भी दिया। अब और अत्याचार हुआ। सारी बनी इस्राईल जातिके नाम हुक्म जारी हुआ कि कोई पुरुष स्त्रीके पास न जावे, यदि कोई आज्ञा उल्लङ्घन करेगा तो वह मृत्युदण्डका भागी होगा। कुछ कालतक यह आज्ञा भी चली पर आश्चर्य यह है कि इस मार्शलाके होते हुए भी गर्भ हो गया और समय पाकर बालक उत्पन्न हुआ जिसका नाम 'मूसा' रखा गया। बात यह थी कि बादशाहका एक खास विश्वस्त नौकर था जिसका नाम उमरान था। वह भी बनी इस्राईलसे ही था, उसपर राजप्रिय होनेसे किसीकी दृष्टि न थी। बस, उस पुरुषने सत्याग्रहकर कानून भंग कर दिया और ईश्वरकी आज्ञाको मान नियमपूर्वक स्त्री-सहवास किया जिससे 'मूसा' पैदा हुआ।

ज्योतिषियोंने जब कुछ समयके बाद फिर पत्रा पोथी खोली, उनको मालूम हो गया कि वह बालक पैदा हो गया। फिर उन्होंने उनको खबर की कि वह बालक तो पैदा हो गया। अब क्या करना चाहिये ? बादशाहने अब दूसरी आज्ञा निकाली कि अमुक स्थानपर प्रत्येक स्त्री हाजिर हो और वह अपने बच्चोंको साथ लावे। हुक्म था, बेचारी निरपराध प्रजा निःशस्त्र थी, आज्ञा माननी ही पड़ी। सबने अपनी अपनी स्त्रीको बच्चोंसमेत मैदानमें ला खड़ा किया। बादशाहने जब देखा कि लाखों बच्चे अपनी माताओं सहित आ हाजिर हुए हैं तो उसने सबपर एक एक दृष्टि डाली। देखते देखते थक गया—आखिर कहांतक देखता और किसको २ पहचानता। जब विवशता देखी तब उसने जल्लादोंको हुक्म दिया कि जितने लड़के बच्चे यहां मौजूद हैं सबको कतल करो। हुक्मकी देर थी, सब निरपराध बच्चे तलवारके घाट सबके देखते २ उतार दिये गये। बादशाहने अपनी समझमें पूरा २ बन्दोबस्त कर लिया मानों उसका शत्रु मारा गया। पर आसमान उसकी नादानीपर हंसता और अत्याचारका बदला लेनेके लिये मूसाको पालता जा रहा था। यद्यपि उमरान शाहका प्यारा था और विश्वस्त था पर किसी मुखबर—खुफिया—नीचने बादशाहके पास जाकर खबर दी कि उमरानका लड़का नहीं मारा गया। मूसाकी माताको जब पता लगा तो उसने मूसाको सन्दूकमें छिपा लिया। फिर हुक्म हुआ कि मूसाको आगमें डाल दिया जावे पर जब वह आगमें डाला गया तो आग हो

बुझ गयी। फिर कहा नील नदीमें फेंक दो। वहां फेंके गये पर वहां भी न डूबे। आखिर इसी मूसाके हाथों फिरऊनका सर्वनाश हुआ और इसी मूसाके हाथों मिस्रकी राज्य-क्रान्ति हुई तथा देश धर्मपरायण बना।

तात्पर्य्य—अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितं
सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति ॥
"जाको राखे साइयां मारि सके नहिं कोय।"

सालभर पानी नहीं पिया

एक दिन बुस्तामी उपासनाके लिये बैठे थे कि आलस्यने आ घेरा। बुस्तामीको कभी उपासनामें तन्द्रा आदि न आती थी। जब उस दिन यह हालत हुई तो बड़े चिन्तातुर हुए और सोचने लगे कि इस असाधारण आलस्यका क्या कारण है। जब बहुत देर तक सोचा तो मालूम हुआ कि आज पानी अधिक पी लिया है। कारणका पता लगना था कि प्रतिज्ञा कर ली कि सालभरतक पानी न पीऊंगा। ईश्वरने इस भक्तशिरोमणिको ऐसा सन्तोष प्रदान किया कि सालभरतक पानी न पिया। यही कारण है कि इस द्वारा ही वह ज्ञानी हो गये। उस मर्दने अपने शरीरको खूब प्यासा रखकर वशमें किया। एक हम हैं कि जो नाना प्रकारके खाद्यादि देकर इसको उद्दण्ड बना रहे हैं—कहां उनकी तपस्या और कहां हमारी बहिर्मुखता।

रसूलने हदीसमें कहा है कि 'संसार स्वप्नमात्र है' इसलिये

इस स्वप्नपर ही सब कुछ नहीं छोड़ देना चाहिये बल्कि जागृति प्राप्त करनी चाहिये। आदमी जब सोता है तो स्वप्नमें अपना सिर कटा हुआ देखता है मगर जब जागता है तो सिर मौजूद पाता है। इस प्रकार जब तू संसारस्वप्नको त्यागकर जागेगा तो अपनेको सही सलामत पायगा।

देख, ईश्वरने बच्चेको कैसी जान दी है कि हर खानेको हजम करती है, युवावस्थामें सब काम करती है। इसी प्रकार अगर तू सोचे तो जिसने यह जान दी है वह फिर भी जान दे सकता है। जिसने बिना तागा और सुईके तुम्हारे जोड़ बन्द सिये हैं वह फिर भी तुम्हारे बिखरे हुए शीराजेको एकत्रित कर सकता और उसमें जान डाल सकता है। क्या तुम कुम्हारको नहीं देखते कि अगर वह कूजाको तोड़ दे तो फिर बना सकता है। यही हाल तुम्हारे जिस्मका है। अगर टुकड़े २ हो जावे तो भी ईश्वर उसे उसी रूपमें खड़ा कर सकता है।

तात्पर्य्य—संसार सचमुच स्वप्न है। इसमें रहते हुए अपनेको सोता हुआ ही जानना चाहिये।

सूफीकी पहुंच

बहलोल महात्माने एक सूफीसे कहा कि तू मुझे अपनी दशा-अवस्था या स्थानसे परिचित करा दो। वह बोला कि उसका कैसा कारोबार होगा जिसके हुक्मसे जमीन आसमान घूम रहे हैं, जीवन और मृत्यु चाकरोंके समान दौड़ रहे हैं, हर्ष-

शोक जिसके आगे हाथ बांधे खड़े हैं, वह जिसको चाहे सत्कार दे और जिसको चाहे सीधा मार्ग दिखा दे, जबतक उस दोनों जहानके मालिककी इच्छा न हो मुंहमें दाँत नहीं हिल सकते। यह सुनकर बहलोल बोले कि हे ज्ञानिन्! तेरा ज्ञान इससे भी अधिक है क्योंकि तेरे प्रकाशमय उजले चेहरेसे यह सिद्ध हो रहा है कि तू कोई पहुंचा हुआ महात्मा है।

तात्पर्य—जिसने अपनेको उसकी राहमें फना कर दिया उसने अपनेको बचा लिया।

सुलेमानके दरबारमें मच्छरका मुकदमा

एक सुलेमानके दरबारमें मच्छरने आकर दुहाई मचायी—कहने लगा कि हवाने हमपर ऐसे ऐसे अत्याचार किये हैं कि हम गरीब बागकी सैर भी नहीं कर सकते। जब फूलोंके पास जाते हैं तो वायु आकर हमें उड़ा ले जाता है जिससे हमारे सुख-साम्राज्यपर वायुके अन्यायकी बिजली गिर पड़ती है और हम गरीब आनन्दसे वञ्चित कर दिये जाते हैं।

हे पशु-पक्षियोंपर न्याय करनेवाले, दीनोंके दुःख हरनेवाले हर दो जहानमें तेरे न्याय-शासनकी प्रसिद्ध है, हम तेरे पास इसीलिये आये हैं कि तू हमारा न्याय कर।

पैगम्बर सुलेमानने जब यह अरज सुनी तो कहने लगे कि ऐ न्यायकी अभिलाषा करनेवाले मच्छर! तुझको पता नहीं कि मेरे समयमें अन्यायको कहीं भी निवास नहीं दिया गया?

मेरे राज्यमें जालिमका काम ही क्या ? क्या तुमको मालूम नहीं कि जिस दिन मैं पैदा हुआ था अन्यायकी कबर उसी दिन खोदी गयी थी ? प्रकाशके सामने अन्धेरा कब ठहर सकता है ? मच्छर बोला कि, बेशक, आपका कथन सत्य है, पर हमारे ऊपर कृपादृष्टि रखना भी तो श्रीमान्‌हीका काम है। कृपा करिये और दुष्ट वायुके अत्याचारोंसे हमारी जातिको बचाइये। सुलेमानने कहा कि, बहुत अच्छा, हम तुम्हारा न्याय करते हैं, मगर दूसरे फरीकका होना अत्यन्तावश्यक है। जबतक मुद्दालेह मौजूद न हो और दो जानिबके बयानात लेखबद्ध न किये जावें तबतक तहकीकात नहीं हो सकती, इसलिये वायुको बुलाना आवश्यक है।

दरबारसे जब वायुके नाम हुक्म पहुंचा तो वह बड़े वेगसे दौड़ता हुआ सुलेमानके सामने आ हाजिर हुआ। वायुके आते ही मच्छर न ठहर सके—उन्हें भागते ही बना। जब मच्छर भाग ही रहे थे उस समय उनसे सुलेमानने कहा—यदि तुम न्याय चाहते हो तो भाग क्यों रहे हो ? क्या इसी बलबूते-पर न्यायकी पुकार कर रहे हो ? मच्छर बोले कि—महाराज, वायुसे हमारा जीवन ही नहीं रहता। जब वह आता है तो हमें भागना पड़ता है। यदि जान न बचावें तो मरना पड़ता है।

तात्पर्य—यही दशा मनुष्यकी है। जब मनुष्य आता है तो ईश्वर नहीं मिलता और जब ईश्वर मिलता है तो मनुष्यकी बू नहीं रहती—"प्रेम गली अति सांकरी तामें दो न समायँ।"

नेक कमाईका नेक परिणाम

मुझसे एक साधुने यह कहा कि मैंने एक बार एक विद्वान्-से पूछा कि निर्दोष अन्न कौनसा है। वह बोला कि अगर तुझको निर्दोष अन्न खानेकी इच्छा है तो जा, पर्वत-स्थानपर चला जा, वहां तुझे बड़े स्वादिष्ट फल मिलेंगे, वही शुद्ध अन्न है। जब मैं उधर चला तो क्या देखता हूं कि एक गरीब आदमी लकड़ियोंका भार सिरपर लादे चला आ रहा है। मैंने दिलमें सोचा कि मेरे पास जो एक रुपया है वह अब मेरे किस कामका है क्योंकि मुझे अच्छेसे अच्छे फल मिलते हैं जिनसे बढ़कर कोई और स्वच्छ अन्न नहीं मिल सकता। यह बेचारा निर्धन है, लकड़ियां काट काटकर मजदूरी करता है, क्यों न इसीको यह रुपया दे दूँ। इधर मेरे दिलमें यह भाव आया ही था कि उस लकड़हारेने अपना बोझ नीचे रख दिया और मुझपर घृणाकी दृष्टिसे ताकने लगा, साथ ही कुछ कह भी रहा था। मुझे नहीं मालूम कि वह क्या कहता था पर इतना अवश्य प्रतीत होता था कि वह मेरे हृद्गत भावोंसे परिचित हो गया है और उनसे सहमत नहीं है। जब उसने लकड़ियां नीचे रखीं तो विचित्रता यह हुई कि वह सोनेकी हो गयीं, जिसे देख मैं आश्चर्यसागरमें निमग्न हो गया और अपना बोझ उठा जल्दी जल्दी चल दिया। मैं ताड़ गया कि यह कोई धर्म-परायण महात्मा है। इसीलिये मैंने उसके पीछे दौड़ना शुरू किया मगर उसको न पा सका।

तात्पर्य—दिलकी सफाईके साथ नेक कमाई करना ईश्वरको बहुत प्यारा है इसीलिये इसमें करामात है ।

मजनूं और ऊँटनी

एक दिन मजनूं लैलीके वियोगसे क्लेशित हो यह निश्चय कर बैठा कि यह हिज्रका दरिया बेइन्तिहा है, वियोग नदीकी सीमा नहीं मालूम कितनी है, चलो अब अपनी प्यारी जानसे मिलें, इस तरह कबतक याद करते रहेंगे। जब देखा कि एक ऊंटनी है और उसपर कोई सवार नहीं है तो झट मजनूं उसीपर सवार हो गये और लैलीकी तरफ हांकना शुरू किया। ऊंटनीका एक बच्चा था जो पीछे पीछे आ रहा था। ऊंटनीने उसीकी तरफ टकटकी लगाई और उसी तरफ चलना शुरू किया। अब दोनोंमें कशमकश जारी हुई—ऊंटनी बच्चेकी तरफ चलना चाहती है और मजनूं लैलीकी तरफ जाना चाहता है। दोनों तरफ प्रेमका भिन्न स्वरूप है। मजनूं जिस स्थानपर जाना चाहता था वह तीन दिनका रास्ता था, मगर इस कशमकशमें पूरे तीन साल बीत गये। जब इतना समय व्यर्थमें चला गया तो मजनूंने ऊंटनीसे कहा कि, हम तो आशिके दिलबर हैं, सच्चे प्रेमी हैं यद्यपि हम बोलते नहीं तथापि तुझसे आज कुछ अवश्य कहेंगे। देख! तू मेरे रास्तेमें बड़ी भारी रुकावट है। अगर मेरे पास तेरे काबू करने लायक मुहार होती तो मैं अवश्य वहां पहुंच जाता। शैतानने आदिमको मिट्टी समझा हालांकि वह मिट्टीमें सोना था—

ईश्वरकी आज्ञा पालन करनेसे धर्मात्मा था। इतना कह उससे उतर पड़ा।

तात्पर्य—ज्ञानको अर्शपर जानेका शौक़ है अर्थात् आत्माको परमात्मासे मिलनेकी इच्छा है। शरीरको प्रकृतिके भोगोंमें लिप्त होनेकी इच्छा है, देखें, कौन अपने उद्देश्यपर पहुंचता है।

चुडैलका आशिक

एक बादशाहका एक बड़ा सुन्दर नवयुवक लड़का था। बादशाह जो एक दिन सोया तो उसने स्वप्नमें अपने लड़केको मरा हुआ पाया। एक ही लड़का, फिर ख़ूबसूरत, उसका मारा जाना बहुत बुरी तरह अखरा, खूब रोया और हाहाकार मचाने लगा। निद्रा भंग हो गयी, जागा तो सब मिथ्या था—लड़का बड़े आनन्दमें था। लड़केकी पैदाइशपर तो खुशी हुई ही थी पर अब मरकर जीनेकी खुशी उससे भी कई गुना बढ़कर हुई। ज्योतिषियोंको जब यह हाल मालूम हुआ तो दौड़े आये और कहने लगे कि यह स्वप्न शादीका सूचक है। जल्दी कहीं शादी होनी चाहिये।

बादशाहकी दृष्टिमें एक फ़क़ीर था जो अपनी तपस्या और विद्यामें प्रख्याति प्राप्त किये था। उस फ़क़ीरकी एक महा सुन्दरी कन्या थी। बस, उसीसे बादशाहने अपने राजकुमारकी शादी निश्चित की और फ़क़ीरके पास जाकर प्रार्थना की। फ़क़ीर भी बड़ा खुश हुआ और शादीसे रज़ामन्द हो गया। लड़का भी

सुन्दर, लड़की भी सुन्दरी, दोनोंको जोड़ी मानों देवी-देवताकी जोड़ी बना दी गयी। शादी हो गयी। बादशाहकी स्त्रीको जब मालूम हुआ कि यह कन्या एक साधारण फ़क़ीरकी है तो उसका पारा मारे क्रोधके बहुत ही ऊंचा चढ़ गया। शाहसे बोली कि तूने कुछ भी अपनी इज़्ज़तका ख़्याल न किया और फ़क़ीरके घर रिश्ता तै कर लिया। कहां राजा भोज और कहां भोजवा तेली--

"चेह निस्बत ख़ाकरा बा आलमे पाक"

बादशाहने जब रानीके भाव जान लिये तो बोला कि उसको फ़क़ीर मत जान, यह तो बादशाह है। जिसने अपनी इच्छाओंको वशमें कर लिया है वही बादशाह है। जो मनकी चाकरीमें दिन-रात लगा रहता है उसको कौन बुद्धिमान बादशाह कह सकता है? बस, अब चिन्ता न कर क्योंकि बादशाहने बादशाहसे रिश्ता जोड़ा है न कि फ़क़ीरसे। इधर तो यह हुआ उधर और ही कुछ हो बना। राजकुमारको वह कन्या जो कि सचमुच सौन्दर्यमें प्रलय स्वरूप थी पसन्द न आयी। उसका दिल किसी औरमें जा लगा। दिल तो दिल ही है उसे जहां लगना होता है वहीं जा लगता है। अब उस औरतका हाल भी सुन लो। वह थी बिलकुल चुड़ैल। हर एक उससे नफ़रत करता था पर राजकुमार उसकी अदाओंपर मस्त था, उसके चरणोंपर बार-बार माथा रगड़ता था और क़ुर्बान हो हो जाता था।

बादशाहको जब पता लगा तो मिट्टी हो गया—बार-बार राजकुमारके सौन्दर्यको देख और परी समान कन्याको यादकर उसकी किस्मतपर रोता था। यत्न करने लगा कि किसी प्रकार राजकुमारका मन सुन्दरीसे लगे और चुड़ैलसे पिण्ड छूटे। यत्न करनेसे कार्य सिद्ध होता है—बादशाहने जब यत्न करनेका बीड़ा उठाया तो काम भी बनता नजर आने लगा। बादशाहको एक जादूगर मिल गया उसने कहा कि मैं अपने बुद्धि-कौशलसे राजकुमारको चुड़ैलके चक्करसे निकालूंगा। महाराज! आप धैर्य रखें—घबरायें नहीं। यह कह जादूगर राजकुमारके पास पहुंचा और उसको अपनी जादूभरी जुबानसे उपदेश करने लगा। उपदेश सुनना था कि उसके होश हवास ठिकाने आ गये और चुड़ैलको फटकारकर कहने लगा कि जा हत्यारी! तूने मुझको इतनी देरतक भटकाये रखा। बस, चुडैल भाग गयी और राजकुमार उसके चंगुलसे छूटकर सीधा अपनी परी समान पत्नीके पास आ पहुंचा-जब उसे देवीके दर्शन हुए तो आपेसे बाहर हो गया, फूला न समाता था। अब वह अपनेको सचमुच धन्य समझता था।

तात्पर्य्य–दुनिया ही चुडैल है, यह अपने रूप-रङ्गसे सीधेसादे आत्माको मुक्तिपथसे विचलित कर देती है। चाहिये कि कोई ज्ञानी जादूगर मिले जो इस आत्माको परमात्मापर आशिक बना दे।

८ प्रेमी हो तो ऐसा ही

एक प्यारेका कोई प्रेमी था। एक दिन प्रेमके उल्लासमें वह

अपने प्यारेके पास गया और जाकर कहने लगा कि मैंने तेरे लिये ऐसे २ कष्ट उठाये हैं कि क्या कोई किसीके लिये उठावेगा। देख, मैं तेरे लिये उस युद्धमें गया और घायल हुआ, तेरी खातिर मैं अमुक काममें पड़ा था जिससे महाविपत्तिमें जा फंसा था।

प्यारेने जब सुना तो बोला कि—यह सब कुछ तो सहा पर अभीतक तो तू जीता है। मैं तो सच्चा प्रेमी तभी जानूंगा जब तु मरकर दिखायेगा।

आशिक़ने जब यह सुना तो सुनते ही उसपर ऐसी हालत तारी हो गयी कि वह बाहर और अन्दर दोनों तरफ़से तड़पने लगा। जब लेटा तो जिस्म ही जिस्म रह गया था—जान निकल चुकी थी।

प्यारेने जान लिया कि हां! यह मेरा सच्चा प्रेमी है।

तात्पर्य्य—हे आत्मन्! तू इन झूठे प्रेमोंमें फंसा जान तबाह कर रहा है। उठ और माशूक़े हक़ीक़ी—सच्चे प्रेम-पात्र परमात्मासे प्रेमका रिश्ता जोड़।

जो तुझे प्रेम खेलनका चाव।
सिरधर तली गली मोरी आव॥

विलासीका उद्धार

एक स्नान करनेवाला था। उसकी यह आदत थी कि सदा अपने वस्त्रोंको ठीक-ठाक करता रहता था। बाल भी औरतोंकी तरह संवारे रहता था। वह औरतोंके ही

समान प्रतीत होता था। उसके स्नानालयमें जो कोई आता, वह उससे औरतोंके समान पेश आता। यदि कोई स्त्री खूबसूरत आ जाती तो उसकी खुशीका पारावार न रहता, ऐसा प्रसन्न होता कि जामेमें फूला न समाता। बड़े बड़े अमीरोंकी स्त्रियां उसके स्नानालयमें आती थीं और उसको बहुत कुछ पुरस्कार दे जाती थीं। यह सब कुछ तो करता था पर अपने इस बुरे आचरणपर भी विचार कर लिया करता था। एक दिन उसने यह निश्चय किया कि यह कर्म अच्छा नहीं, इसको त्यागकर कुछ और धन्दा स्वीकार करना चाहिये। उसको इसी प्रकार सोचते सोचते बहुत समय व्यतीत हो गया पर न तो उसने यह कर्म छोड़ा और न कोई और काम ही आरम्भ किया।

एक दिन जब वृत्ति जागृत हुई तब वह उठा और उठकर चल दिया। कहां पहुंचा? वहां, जहां एक महात्मा अपने ध्यानमें मग्न थे। वह पास जाकर बैठ गया और उनके ध्यानभङ्ग होनेकी प्रतीक्षा करने लगा कि कब ध्यानसे हटें और कब मैं अपना हाल सुनाऊं। आखिर महात्माकी आंखें खुलीं, देखा तो वह हज़रत बैठे हैं। महात्मा पूछने लगे कि तुम यहां कैसे आये। हम्मामी बोला कि आपसे सहायताके लिये, क्योंकि मेरा मन वशमें नहीं होता है। मेरा विश्वास है कि आप जैसे ब्रह्मनिष्ठकी प्रार्थनासे यह अवश्य सुधर जायगा और आपके हाथों मुझ पापीका बेड़ा अवश्य पार हो जावेगा। महात्माने

जब यह सुना तो कहने लगे कि जा, तेरा भला हो जायगा। हम्मामी खुशी २ अपने स्थानमें आया।

अभी आकर बैठा ही था कि एक राजकुमारी स्नान करनेके लिये उसके यहां आयी। हम्मामीने बड़ी चतुरतासे उसका सब प्रबंध आनन् फानन् कर दिया। राजकुमारीने स्नान किया और वह चलने लगी पर ज्योंही पैर उठाया तो मालूम हुआ कि उसके गलेकी माला नहीं है। बहुत ढूंढ़ा पर न मिली, आखिर हम्मामीसे कहा कि हमारी २ लाख रुपये कीमतकी जड़ाऊ माला गुम हो गयी है। हम्मामीने सुना तो पांव तलेसे धरती सरक गयी, चेहरा फीका पड़ गया, हाथ कांपने लगे, पांव लड़खड़ाने लगे। राजकुमारीके मुंहसे यह शब्द नहीं निकले थे बल्कि आसमानसे बिजली गिरी थी। कुछ देरतक हम्मामीकी यही दशा रही। वह अपने पहिले किये कर्मोंको याद करता था और रो रहा था। बार २ परमेश्वरसे प्रार्थना करता था कि हे दयालु प्रभो! मैंने बड़े बड़े पाप किये हैं, सैकड़ों बार तोबाकर फिर मैंने वही काम किये हैं, आपकी आज्ञाओंका उल्लङ्घन किया है, आप इस बार मेरी तोबा कबूल करें, मैं आपसे सहस्र बार विनय-पूर्वक कहता हूं कि भविष्यत्में कदापि ऐसा कार्य न करूंगा, आप क्षमा करें! प्रभो! क्षमा करें।

जब इस प्रकार रो चुका तो आंखें खुलीं, देखा तो सामने इज्राईल फरिश्ता या देवदूत खड़ा है, वह और कुछ कह रहा है। वह और कुछ नहीं कह रहा था सिवा 'ऐ खुदा, ऐ खुदा'के।

इस मर्त्यलोकके सूनसान स्थानमें देवताके मुखसे परम प्यारे प्रभुका प्यारा नाम सुनना था कि सबके दिल हरे हो गये। सूखे हृदयके लिये यह शब्द नहीं—अमृतकी बून्दें थीं। उस स्त्रीने यह सुना तो अन्दरसे उत्तर दिया कि—

"सबको पाया तू फक़त बाक़ी रहा।"

स्त्रीके मुखसे यह शब्द और भी महत्वशाली बन गये और वह हम्मामीके कानमें घुसकर हृदयपर जा पहुंचे। किन्तु हम्मामी सुनते ही ऐसा गिरा जैसे बरसातमें पुरानी दीवार गिरती है। होश-हवास जाते रहे, मजनूंकी तरह हो गया। इसी बेहोशीकी हालतमें था कि 'माला मिल गयी'की ध्वनि कानमें पहुंची, वह जाग पड़ा।

राजकुमारीने कहा कि तूने व्यर्थमें अपनेको पापी समझा। हालां कि माला वस्त्रोंमें उलझी हुई मेरे ही पास थी, तेरी इस बेकसीपर मुझे रहम आता है, इच्छा है कि तुझे कुछ इनाम दूं। हम्मामीने कहा कि देवी, जा अपना रास्ता ले मुझे तो जो मिलना था मिल चुका। यह कह उसने सब कुछ त्यागकर जङ्गलकी राह ली।

तात्पर्य्य—उसे फजल करते नहीं लगती बार
न मायूस हो उससे उम्मेदवार।

गीदड़की चालाकीसे गधेकी मृत्यु

एक दिन एक यात्रीका छूटा हुआ बैल जङ्गलमें चला गया

और वहीं रहने लगा। वहांकी हरी-भरी घास और नदीका शीतल जल उसपर ऐसा लगा कि कुछ ही दिनमें मोटा-ताजा हो गया। जिधर जाता उधर ही पशुपक्षी मारे डरके सहम जाते थे। उस जङ्गलमें एक शेर भी था। एक दिन उससे मुठ-भेड़ हो गयी। शेर तो भला शेर ही था, बलवान था, पर बैल भी कुछ कम नहीं था, आखिर माताका दूध उस लालने भी पिया था और अगरचे उसके जीवनका बड़ा भारी हिस्सा दूसरी जातिकी गुलामी करते गुजरा था, तथापि उसने स्वतन्त्रता-देवीके दर्शन कर लिये थे। वह जानता था कि आज़ादी किसका नाम है और वह कितने क्लेशसे प्राप्त की जाती है तथा कितने महान् प्रयत्नोंसे सुरक्षित रक्खी जानी चाहिये। दोनोंका युद्ध आरंभ हुआ। आखिर अत्याचारी अभिमानी शेरका पक्ष गिरा और बैलने अपने पैने सींगोंसे ऐसा छिछोड़ा कि शेर अधमुआ हो गया, रही सही कसर पेटपर खुरचकर पूरी कर दी। कहां अस्त्र-शस्त्र-धारी शेर और कहां गरीब निरपराध बैल।

यद्यपि बैल कुछ न था पर सत्य तो उसकी ओर था। सत्य यह है कि प्रत्येक जीवको स्वतन्त्रतापूर्वक जीनेका अधिकार है। यदि उसके इस अधिकारको कोई अत्याचारी छीनना चाहता है तो उसका यह कर्तव्य हो जाता है कि आत्मरक्षार्थ अपने स्वत्वोंकी हिफ़ाज़तके लिये प्राणपनसे प्रयत्न करे। बैलने प्रयत्न किया और शेर घायल हो गया। घायल भी ऐसा हुआ कि उठ न सका और कई दिनतक वहीं पड़ा रहा।

शेरका एक आज्ञाकारी मित्र था, वह था एक गीदड़। गीदड़ने देखा कि शेरकी ऐसी दुर्गति हुई है तो बड़े आश्चर्यमें पड़ा और पास आकर कहने लगा कि हुजूरके लिये एक गधा देख आया हूं, वह बड़ा मोटा ताजा है। अगर आप फरमावें तो खिद-मतमें पेश करूं, ताकि हुजूरके दुश्मनोंकी भूख हटे। शेर इस चिकनी चुपड़ी बातोंसे ऐसा खुश हुआ कि जैसे फूला हुआ कुप्पा। बोला कि जल्दी लावो, हमें तीन रोजसे खाना नहीं मिला।

एक गधा चर रहा था उसके पास जाकर गीदड़ कहने लगा कि इस मलमय स्थानमें क्या रखा है। चल, मेरे जङ्गलमें तुझको ऐसी घास खिलाऊं कि जो तेरे बाप-दादाने भी कभी खाया न हो। स्वतन्त्रतापूर्वक विचरो, चाहे जहां जावो चारों ओर जागीर है और किसीका भय नहीं।

गधा—ईश्वरने मुझे जो देना था सब दे दिया है, मैं उसके दियेपर यहीं मलमय स्थानमें प्रसन्न हूं। मुझे तुम्हारा न तो हरा-भरा जङ्गल चाहिये और न स्वतन्त्रतापूर्वक विचरण ही। जा तू अपना रास्ता ले। तुझे ही वह स्थान मुबारक हो, मैं तो अपने इसी स्थानमें संतुष्ट हूं।

गीदड़—यार! तू तो बिचकता है। न जाने तुझे अपनी यह परतन्त्रता क्यों बुरी नहीं लगती। देख, अपनी भलाई-बुराईको सदा ध्यानमें रखना चाहिये और सोच-समझकर कार्य करना चाहिये। यहां तुझे दिनभर बोझ उठाना पड़ता है, और खानेको

यह सड़ा भूसा—कूड़ा पेश किया जाता है। तुम्हारी दोनों टांगोंको ऐसी बुरी तरह बांधा है कि देखनेवालेको भी दुःख होता है। छोड़ इस परतन्त्र जीवनको और चल मेरे साथ, फिर देख तुझे कैसी स्वच्छन्द हवा, स्वादिष्ठ हरी-भरी घास, पुष्टिकारक ओषधियां तथा शीतल जल आदि दुर्लभ वस्तुएं प्राप्त होती हैं।

गधा—विद्वानोंने कहा है कि जिसके कुल और शीलको न जाने ऐसे अपरिचित आगन्तुकका कदापि विश्वास न करे। इसलिये मुझे भय है कि कहीं तू मुझे अपने चक्करमें डाल किसी ख़तरेमें न डाल दे क्योंकि तू गीदड़ है, बड़ा चालाक मालूम होता है। नहीं तो तुझको क्या पड़ी है जो मुझे इस प्रकार फ़रेबमें लाना चाहता है। जा, चला जा यहांसे, मैं तेरी बातोंमें नहीं आ सकता। मैं यहां ही खुश हूं। यहां मेरा कुल है, जाति है, भाई-बन्धु हैं, क्या तेरे कहनेसे मैं उनको छोड़ दूं। थोड़ेसे सुखके लिये मैं अपनी जातिका द्रोह नहीं कर सकता।

गीदड़—ओहो! तू तो सचमुच गधा है। अरे, मैंने तो तेरे हितका उपदेश किया है, तुझे अच्छा स्थान बताया है और तू इसमें बुराई माने बैठा है। मुझे क्या, तू चाहे इससे भी रद्दी हालतमें रहे। मैं तो तेरी अवस्था देखकर खड़ा हो गया था और चाहता था कि तुझे इस दुःखके गर्तसे निकाल लूं, पर मैं क्या करूं जब तू ही नहीं निकलना चाहता। यदि तू जाति बिरा-दरीका मोह करता है तो उनको भी वहीं ले चल जिससे वह

भी आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करें। क्या तू अपनी जातिका शुभचिन्तक नहीं जो उनके हितको नहीं मानता। यदि भाई-बन्धुओंको कुछ भी प्रेम है और अपनी हालतके सुधारनेका तनिक भी विचार है तो चल उस स्थानको एक बार अपनी आँखोंसे देख ले, फिर चाहे घरभरको साथ ले जाना। मेरा तेरा कोई रिश्ता तो है नहीं जो वहां ले जाना चाहता हूं। महात्माओंसे सुना है कि दुःखीपर दया करनी चाहिये। इसी-लिये तेरे दुःखको दूर करनेके अभिप्रायसे यह प्रस्ताव पेश किया है। अब, आगे तेरी इच्छा है, मान या न मान।

अब गधा सब तर्क-शास्त्र भूल गया और वह गीदड़के पीछे-पीछे हो लिया। कुछ ही दूर जानेके बाद उन्हें घना जङ्गल मिला। अब गीदड़ फिर जङ्गलके दृश्यकी प्रशंसा करने लगा और वह गधेको अपने कथनकी सत्यताका विश्वास दिलाने लगा।

शेरने देखा कि गीदड़ एक गधेको अपनी बातोंमें फुसलाये चला आ रहा है। यह देख वह बड़ा खुश हुआ। इतनेमें गधा आ पहुंचा और शेरने तुरन्त कूदकर उसपर हमला कर दिया। शेरमें शक्ति तो थी ही नहीं क्योंकि वह स्वयं घायल हुआ पड़ा था, केवल उछला और उछलकर रह गया। गधेने देखा कि अचा-नक कोई उसपर हमला हुआ है भयभीत हो दुलत्ती झाड़ भाग खड़ा हुआ। शेरके हाथ और तो क्या आना था, उलटा गधेकी दुलत्ती खानी पड़ी। भूखे शेरको यदि खाना भी मिला तो गधेकी दुलत्ती! हा दैव!

शेरको गीदड़पर बड़ा क्रोध आया और उससे इस तरह बोला कि—

शेर—ऐ नमकहराम ! तूने मेरे साथ वफ़ा न की। मैं शेर हूं, मुझे अपने शौर्य, पराक्रम और बलपर भरोसा है। मैं तेरे जैसे गीदड़ोंपर कब आशा करता हूँ। नालायक़ ! मैंने तेरा विश्वास किया और आज घायल हुआ पड़ा हूँ। तूने मुझे व्यर्थमें बैलसे लड़ा मारा और आज गधेसे दुलत्ती लगवायी। हा ! तूने मुझे किसी कामका न रखा। तेरे जैसे बुद्धिमान् मन्त्रीके होते मुझे बैल और गधेसे हारना पड़ा, आगे न मालूम क्या क्या तेरे सबब मुझे देखना होगा।

गीदड़—अन्नदाता ! क़सूर माफ कीजिये। मैं तो आपकी ही ख़ातिर गधेको ला रहा था मगर हुज़ूरने ही जल्दबाज़ीसे नुक़सान उठाया वरना मेरा इरादा तो मुतल्लिक़ यह न था कि कमीने गधेसे आपको दुलत्ती लगवाई जावे। अगर आप गधेको बिल्कुल पास आ जाने देते और सब्र किये पड़े रहते तो मैं उसे आपके मुंहके पास पहुंचा देता। मुझे अफ़सोस है कि ख़ता आपसे हुई और गुस्ताख़ी मेरी कही जाती है। बहरहाल मैं माफ़ीका ख्वास्तगार ज़रूर हूं आप रहमदिली फ़रमावें।

शेर—अरे गीदड़ ! तू बड़ा चापलूस है। तूने बड़े बड़े जाल रचे हैं। आज तूने अब माफ़ीका ढोंग रचा है। अच्छा, यदि तू अपनेको निरपराध समझता है तो जा तुझको माफ़ किया, फिर कभी ऐसी भूल नहीं करना। मगर शर्त एक है कि एक

बार फिर गधेको लावो, ताकि प्राण-रक्षा हो। बस, इसी एक शर्त-पर तुझे मुआफ़ किया जा सकता है वरना कोई वजह नहीं कि तुझे क्यों न मुअत्तिल किया जावे तथा प्राण-दण्ड दिया जावे।

गीदड़—(डरते २) हुज़ूर ! मैं बेगुनाह हूँ, मुझपर गुस्सा न किया जावे, क्योंकि मैं तो खुद ही अपने आपको हुज़ूरके आगे डाल चुका हूं। अब चाहे आप मारें या माफ़ करें यह जिस्म आपका है। गधेका फिर वापस लाना महाराज जैसा टेढ़ा काम है, मैं ही जानता हूं। बड़ी मुश्किलसे तो उसे फांसकर लाया था और आपने जल्दबाज़ीमें आ सब किया-कराया धूलमें मिला दिया। अच्छा, अब भी कुछ डर नहीं—मुझे आशा है कि मैं अपनी बुद्धिसे कोई ऐसी तदबीर ज़रूर निकाल लूंगा जिससे गया हुआ शिकार फिर हाथ आ लगे।

शेर—अच्छा, मैं तुम्हारे कहनेके अनुसार चुप-चाप बैठता हूं, तुम जावो और गधेको फिर फांसकर लावो।

गीदड़—बहुत अच्छा हुज़ूर ! अभी लाता हूँ।

गधा भागकर एक वृक्षके नीचे भयभीत खड़ा हुआ था। उसके चेहरेसे स्पष्ट प्रतीत होता था कि इस ग़रीबपर किसी दुष्ट हिंस्र जन्तुने प्रहार किया था। गधा अपने भाग्य और गीदड़की करतूतपर धिक्कार रहा था कि पीछेसे खट-खटका शब्द हुआ। वह बेचारा घबराकर उधरको मुड़कर देखने लगा, देखा तो सामने गीदड़देव चले आ रहे हैं। देखते ही भागा और कहीं झाड़ीके पीछे छिपकर खड़ा हो गया। गीदड़ भी सूंघते २

वहां जा पहुंचा। जब थोड़ा फासिला रह गया तो कहने लगा—अरे भाई, मुझसे क्यों डरता है? मैं तो मुसीबतका मारा तेरा साथी हूं। तेरे दुःखमें शरीक होनेको आ रहा हूं। ठहर और मेरी बात सुन ले। गधा ठहरा तो था ही, गीदड़के पहुंचते ही इस प्रकार बोला—

गधा—अरे पापी! तूने मित्र-द्रोह किया। मुझे मित्र बनाया और शेरसे फड़वानेको तैयार हो गया। यह तो मेरी किस्मत थी कि तेरे जैसे मक्कारके चक्करमें फंसकर भी सहीसलामत बच गया, वरना तूने तो अपनी तरफसे कुछ कम न किया था। जा नीच, मेरे सामनेसे दूर हो जा। मैं तेरे जैसे पापी, अधम और नीचकी शक्ल नहीं देखना चाहता।

गीदड़—मित्र! नाखुश मत हो। मैंने तेरे साथ कोई बुरा बर्ताव नहीं किया। यह तो तेरा भ्रम है कि जो यह समझ रहा है कि मैंने शेरके पास जा पहुंचाया है, भला ख्याल तो कर कि क्या तू शेरसे बच सकता था और मुझे भी क्या शेर छोड़ सकता था? कदापि नहीं। वह स्थान तो बड़ा रमणीक है, मैं सदा वहीं चरा करता हूं, वहां अवश्य चलना चाहिये।

इत्यादि इत्यादि बातें बनाकर गधेको फुसलाकर शेरके पास फिर ले गया।

शेर भी चुपचाप पड़ा था कि गधेको पहुंचा जान उछला और फाड़ डाला। शिकार तो हो गया अब खाना बाकी था।

गीदड़—महाराज! आप स्नानकर आवें क्योंकि शास्त्रोंका

कथन है कि भोजनसे पहले स्नानध्यानसे निवृत्त हो लेना चाहिये। जबतक आवें मैं इसकी रक्षा करता हूँ।

शेर चला गया और स्नान करके वापस आया तो भोजन होनेकी बारी आयी। देखा तो मृत गधेका दिल और जिगर नहीं है। जब शेर जाते ही स्नानके लिये गया था गीदड़ने उसके दिल और जिगर निकालकर खा लिये थे। आखिर शेरने बड़े क्रोध-पूर्वक गीदड़की ओर देखा और पूछा कि उसका दिल और जिगर कहां गया, ठीक २ बतला।

गीदड़—महाराज! यदि उसके दिल और जिगर होता तो क्या वह दूसरी बार इस जगह आता! नहीं, कदापि नहीं। वास्तवमें उसके न तो दिल था और न जिगर। भला जो इतना मूर्ख है कि नुकसान उठाकर तथा अच्छी तरह जानकर कि यहां निश्चय ही मृत्यु है फिर घासके लोभमें आता है उसमें दिल कैसे होगा और उसमें जिगर कैसे रहेगा? ऐसे लोगोंके जोकि अपनी मूर्खतासे शिकार हो जाते हैं दिल और जिगर हो सकता हो तो बेशक ढूंढ़ लीजिये।

शेरको विवश हो उसीपर सन्तोष करना पड़ा और गधेका आहार पा क्षुधा-निवारण करना पड़ा।

तात्पर्य्य—मक्कारोंसे सदा बचना चाहिये। लोभको महान् शत्रु समझना चाहिये। अपने आपको गधा मत बनाओ, जिससे तुमपर दूसरेका फरेब न चल सके। आत्मा कभी कभी गधा बन जाता है और लोभादि दुष्ट गीदड़ोंके चक्करमें आकर माया-

रूपी शेरसे फाड़ा जाता है और कष्टपर कष्ट झेलता है। ऐसा न हो कि तुम भी उस गधेकी तरह शैतान सिंहके आगे बतौर खुराकके डाल दिये जाओ।

चोरोंमें बादशाह

महमूद बादशाहका दस्तूर था कि रातको भेष बदलकर ग़ज़नीकी गलियोंमें घूमा करे। एक रात जो निकला तो कुछ आदमी छिप २ कर चलते दिखायी दिये। यह भी उनके पास पहुंचा। चोरोंने इसे देखा तो वह ठहर गये। जब यह उनके पास जा पहुंचा तो वे कहने लगे कि भाई, तुम कौन हो और किस लिये इस समय घूम रहे हो? बादशाहने कहा कि मैं भी तुम्हारा भाई चोर हूँ। रात जान रोजीकी फ़िक्रमें निकला हूं। चोर लोग खुश हो गये और कहने लगे कि तूने बड़ा अच्छा किया जो हमारे साथ आ मिला। जितने प्रेमी मिलकर काम करें, उतनी ही कामयाबी हासिल होती है। अब सभी चलो, किसी एक साहूकारके घर चोरी करें। जब थोड़ी दूर चलने लगे तो एकने कहा कि पहले यह तै होना चाहिये कि कौन भाई क्या २ काम कर सकता है। जो जिस कार्यको भली भाँति कर सके उसको स्पष्टतया कह दे, ताकि हम सब एक दूसरेके गुणोंसे परिचित हो जावें और कामयाबीके साथ कार्य करें।

यह प्रस्ताव सुन प्रत्येकने अपना २ हस्त-कौशल वर्णन करना आरम्भ किया।

एक बोला—मुझमें ऐसी योग्यता है कि कुत्तोंकी बोली पहचानता हूं। वह जो कुछ कहें उसे मैं भली प्रकार समझता हूं। यह आप जानते हैं कि हमारे काममें यदि कोई कण्टक है तो यह कुत्ता ही है। वह जब भूंकता है तब कुछ कहता है। यदि उसकी बोली जान ली जावे तो उसकी आवाजको समझ-कर अपनेको बचाया जा सकता तथा सुरक्षित रहा जा सकता है। इसलिये ऐसे परमावश्यक कार्यको मैं अच्छी तरह कर सकता हूं।

दूसरा—मेरी आंखोंमें ऐसी शक्ति है कि जिसको अंधेरेमें भी देख लूं उसे कभी नहीं भूल सकता। दिनके देखे हुएको अंधेरी रातमें भी बखूबी पहचान सकता हूं। यह हुनर भी कुछ कम नहीं क्योंकि हमें उन लोगोंसे काम पड़ता है जोकि हमें पहचान पहचानकर पकड़वाया करते हैं। मैं ऐसे लोगोंको एक नजरमें ही जान जाता हूं जिससे भागने या धोखा देनेका कार्य किया जा सकता है।

तीसरा—मुझमें ऐसी शक्ति है कि भारीसे भारी दीवारमें नक़ब लगा सकता हूं, यह काम मैं ऐसी फुर्ती और शान्तिसे करता हूं कि सोनेवालेकी नींद नहीं खुल सकती और घण्टोंका काम मिनटोंमें हो जाता है। यही एक ऐसा काम है जिसपर कामयाबीका सेहरा लग सकता है।

चौथा—मुझमें सूंघनेकी ऐसी विचित्र शक्ति है कि भूमिमें गड़े हुए धनको केवल वहांकी मिट्टी सूंघकर निकाल सकता

हूं। मैंने इस कार्यमें इतनी योग्यता प्राप्त की है कि मेरे दुश्मनोंको भी क़ायल होना पड़ा है। अमीर लोग प्रायः धनको भूमिमें गाड़ कर ही रखते हैं। बस, ऐसे समयमें सिवा इस कलाके और कोई सहायक और कार्य-साधक नहीं होता। मैं इस विद्याका पारंगत प्रकाण्ड पण्डित हूँ, अतएव मैं यही कार्य कर सकता हूं।

पांचवां—मेरे हाथोंमें ऐसी शक्ति है कि मैं ऊंचेसे ऊंचे घर, महल और अटारीपर बिना किसी सीढ़ीके चढ़ सकता हूं और ऊपर जाकर अपने साथियोंको खींच सकता हूँ। कैसा महत्व-शाली काम है। है कोई वीर जो यह कार्य कर सके?

इस प्रकार जब यह सब अपने अपने गुण वर्णन कर चुके तो नवीन चोरसे बोले कि तुम भी अपना गुण प्रकट करो जिससे पता लगे कि तुम हमारे साथ मिलकर क्या कार्य कर सकते हो। बादशाहने जब यह सुना तो बड़ी ख़ुशीसे यों कहने लगा—

बादशाह—मुझमें एक बड़ी विचित्र शक्ति है। वह है गुनाह बख़शवा देनेकी। अगर हमलोग चोरी करते पकड़े जावें तो सजा ही पायेंगे। मगर मेरी दाढ़ीकी बदौलत तुम माफ़ किये जा सकते हो। कहो कैसी अजीब ताकत मेरे हाथमें है!

इस गुणको सुनकर सबने एक स्वर होकर कहा कि भाई, तू ही हमारा नेता है, हम सब तेरी ही अध्यक्षतामें कार्य करेंगे ताकि अगर कहीं पकड़े गये तो बख़्शे जा सकें। हमारा बड़ा सौभाग्य है, कि तुम्हारे जैसे सज्जन भ्राताके दर्शन नसीब हुए।

इस प्रकार ज्ञान-गोष्ठीकर और अपना अपना कार्य निर्धारित-कर वह सब वहांसे चले। जब बादशाहके महलके पास पहुंचे तो कुत्ता भूंका। कुत्ता कह रहा था कि 'बादशाह है।' पहलेने कुत्तेकी बोली पहचानकर कहा कि 'बादशाह है' इसलिये होशियारीसे चलना चाहिये। मगर उसकी बात किसीने नहीं सुनी। सुनी-अनसुनी कर दी और बढ़े हुए चले गये।

बादशाहके महलके नीचे पहुंचते ही सब रुक गये और सबने सलाह की कि यहां हो कार्य करना चाहिये, बस कार्य शुरू हो गया। कमन्दअन्दाज़ने रस्सा ऊंचा फेंका और ऊपर चढ़कर दूसरोंको भी खींच लिया।

महलके भीतर घुसकर नकाब लगायी और सबने बड़ी कुशलतासे अपना अपना काम किया। खूब लूट हुई, जिसके हाथमें जो आया बांधता गया, आख़िर जब लूट चुके तो चलनेकी बारी आयी। शीघ्रतासे नीचे उतरे और अपना रास्ता लिया। बादशाहने आगे बढ़कर सबका नाम और धाम पूछा और वापस आया। चोरी हुई। माल-असबाब, हीरे-जवाहरात लूटे गये और और चोर अपने अपने घर पहुंच गये।

बादशाहने फ़ौरन मंत्रीको हुक्म दिया कि तुम बहुत शीघ्र अमुक अमुक स्थानमें सिपाही रवाना कर दो, वह अमुक अमुक नामवाले लोगोंको माल-असबाबके साथ गिरफ़्तार करके लावें। मन्त्रीने सिपाही बुलाये और उनको आज्ञा दी कि जाकर पकड़-कर सरकारके सामने उन्हें हाज़िर करें। अपराधी पकड़े गये और

बादशाहके रूबरू पेश किये गये। जब यह लोग सामने पहुंचे तो दूसरेने कहा कि बड़ा ग़ज़ब हो गया। रात चोरीमें बादशाह हमारे साथ था। यही वह चोर था, जिसने कहा था कि मेरी दाढ़ीमें यह शक्ति है कि वह हिलते ही गुनाह बख़्शे जाते हैं। फिर क्या था, सबने पहचान लिया और हौसला कर आगे जाकर सलाम की।

बादशाहने पूछा—तुमने चोरी की है?

सब एक स्वरसे—हां हुज़ूर, की है।

बादशाह—तुम लोग कितने थे?

सब—हम छः थे।

बादशाह—छठां कहां है?

दूसरा—हुज़ूर गुस्ताख़ी मुआफ हो!

बादशाह—बोलो, बोलो।

दूसरा—जहांपनाह! आप ही थे।

सिपाही—मंत्री तथा अन्य उपस्थित सबके सब हैरान थे कि क्या माजरा है। इतनेमें बादशाहने फिर कहा—

बादशाह—अच्छा, अब तुम क्या चाहते हो?

दूसरा—हुज़ूर! हममेंसे प्रत्येकने अपना अपना काम योग्यतापूर्वक कर दिखाया है। अब बाकी छठेकी बारी है। आपने इर्शाद फ़रमाया था कि मेरी दाढ़ीमें गुनाह बख़्शवानेकी शक्ति है सो इसलिये आप उस हुनरको करके दिखलायें ताकि हम अपराधियोंकी जान बचे।

सब—हां हुजूर ! रहमदिली फरमायी जावे !

बादशाह—(मुस्कराते हुए दाढ़ी हिलाकर) बहुत अच्छा, तुमको माफ़ किया। आगेको कभी यह काम मत करना।

तात्पर्य्य—संसारका राजा परम प्रभु तुम्हारे हर काममें साथ ही है, उसको साक्षी जानते हुए डरते रहना चाहिये और पापमें कभी प्रवृत्त नहीं होना चाहिये।

दानवीरकी परख

बुख़ारामें एक बड़ा उदारचरित दानी सज्जन 'सद्रेजहान' नामसे मशहूर था। कोई दिन ऐसा न होता जब कि वह सैकड़ों अन्धोंको दान न करता।

एक बार एक भले-चंगेको क्या सूझी कि फ़क़ीराना लिबास पहनकर आ पहुंचा और आकर सवाल करने लगा। सद्रेजहानने सुना और कुछ न दिया। जब ऐसे निराशा हुई तो और वेश धारणकर आया पर फिर भी न मिला। आख़िर यह किया कि चार आदमियोंको किराया दे आप अर्थीपर सवार हुआ और जीते जी मुर्दा हो गया। ऊपरसे कफ़न डाल लिया और कहा कि मुझे सद्रेजहानके सामनेसे ले चलो। वे जब वहां पहुंचे तो अर्थीको उसके सामने रख दिया। अब सद्र उठा और एक गिन्नी उसके कफ़नपर चढ़ा दी। फ़क़ीर उठा और सद्रसे यों बोला—

फ़क़ीर—मैंने कई बार तुझसे मांगा, विनयपूर्वक प्रार्थनाएं

कीं, तरह तरहके स्वरूप धारण किये पर तूने मुझको फूटी कौड़ी नहीं दी और जब मैंने सर्वथा निराश होकर यह स्वरूप धारण किया तो तूने गिन्नी भेंट की इसका क्या कारण है ?

सद्र—ऐ फ़क़ीर ! काश, कि तू समझता होता ! मैंने तब-तक तुझको कुछ न दिया जबतक कि तू निराश नहीं हो गया एक बात। दूसरे, मैंने तुझको तबतक नहीं दिया जबतक कि तू मांगता रहा। तीसरे, मैंने तुझको तबतक नहीं दिया जबतक कि तू जीते जी मुर्दा नहीं हो गया। ज्योंही तुझमें यह गुण आये मैंने तेरी सेवाके लिये दिल खोल दिया।

तात्पर्य्य—संसारसे निराश हो जावो। मांगना छोड़ दो। जीतेजी मर जावो।

बिन मांगे मोती मिले, मांगे मिले न भीख।
मांगो किसीसे कुछ नहीं, हिय धारो यह सीख॥

मसख़रेका उपहास और काज़ीकी कायापलट

एक जूजी मसख़रा था। उसकी एक महासुन्दरी युवती स्त्री थी। शनिग्रहवशात् अकाल जो फैला तो इन लोगोंको भी भूखे दिन बिताने पड़े, रात भी चैनसे न कटती थी। आखिर निश्चय किया कि किसी तरह धनोपार्जन किया जावे जिससे दो दिनकी ज़िन्दगी सुखसे कटे। निश्चय तो अच्छा किया पर अब उपाय भी तो सोचना चाहिये। वह कौनसा साधन है जिससे धन प्राप्त किया जावे ? अकालके कारण सब अपनी अपनी फिकरमें थे

इनको योंही भला कौन दिये देता था। प्रातःकालका समय था, जूजी बाहरसे लौट कर आया और अपनी स्त्रीको पुकारकर कहने लगा कि चल एकान्तमें मैं तुझे एक ऐसा तरीक़ा बताऊँ कि कभी ख़ता न करे। स्त्री भी खड़ी हुई और एकान्तमें जाकर कहने लगी कि बतला, कौनसा उपाय है?

जूजी—तुम यह जानती हो कि मैं बे हथियार हूं और किसी प्रकार अद्भुत कार्य नहीं कर सकता। तुम्हारे पास कटाक्षरूपी ऐसा तीर है कि जिसका वार सीधा दिलपर होता है, भ्रू ऐसे कठिन शस्त्र हैं कि जिनके द्वारा बड़ेसे बड़ा अभिमानी तपस्वी-तक परास्त किया जा सकता है। मुखमण्डलकी सुन्दरताको देख, हरएक दिल रखनेवाला बेकाबू हो जाता है और तेरी हंस जैसी चालको देख सैकड़ों पांवमें गिरनेकी इच्छा करते हैं। ऐसे अद्भुत तथा अचूक शस्त्रोंके होते क्या तू अकालसे युद्ध नहीं कर सकती? अवश्य कर सकती है। अच्छा तो अब तू ऐसा कर कि किसी आंखके अन्धे और गांठके पूरे—विषयी-लम्पट धनी—को अपने चक्करमें फँसाओ। बस, यही एक उपाय है कि जिसके द्वारा इस कष्टमय समयमें गुज़र हो सकती है।

स्त्री बड़ी पति-परायणा थी। क्या करती, आज्ञा माननी पड़ी।

उसी नगरमें एक क़ाज़ी—जज—था जो धनिक होते हुए बड़ा कुपथगामी—विषयी था। ठहरा कि इस मुर्ग़ेपर फन्दा डाला जावे। जा पहुंची और कहने लगी—

स्त्री—हुज़ूर! मेरी एक प्रार्थना है। यदि आप सुनें तो मुझ

दुखियाका कल्याण हो। मैं और कुछ नहीं चाहती, केवल यह चाहती हूं कि मेरे साथ न्याय हो।

काज़ी—(सुन्दरताको देख मुग्ध होता हुआ) तुमको क्या शिकायत है? क्या किसीने तुम्हारा धन चुरा लिया है या और कुछ बात है? जल्दी बोलो, हम तुम्हारा मुकद्दमा अच्छी तरह सुनेंगे।

स्त्री—हुज़ूर, मेरा पति मुझसे राज़ी नहीं है और जबतब मारा करता है। मैं यह चाहती हूं कि उससे गुज़ारा पाऊं और अलग रहा करूं। आप सब मुकद्दमे सुन लें, बादमें मैं निवेदन करूंगी; क्योंकि सब लोगोंके सामने मुझे अपने हालात बतलानेमें संकोच है।

काज़ी—बहुत अच्छा, तुम बैठ जाओ, मै अभी सब मुक़द्दमे तै किये देता हूं। तुम तसल्ली रखो, तुम्हारे साथ अन्याय नहीं होगा। मैं एकान्तमें तुम्हारे सब हालात सुनूंगा और जहांतक हो सका शीघ्र फ़ैसला कर दूंगा।

स्त्री—हुज़ूर! मैं काम-काजवाली औरत हूं। इतनी देरतक बैठना असम्भव है। आप मेहरबानी फ़रमाकर मेरे ग़रीबख़ाने-पर ही तशरीफ़ लावें। वहां एकान्त है और मेरा पति भी बाहर किसी गांवमें गया हुआ है।

काज़ी—अच्छा, तुम जा सकती हो, हम तुम्हारे घरपर ही आवेंगे और सब हालात सुनेंगे।

स्त्री—हुज़ूर! अपनी तशरीफ लानेका वक्त बतला दें तो

मैं ख़िदमतके लिये तैयार रहूं जिससे आपको अपने बेशकीमत वक्तकी बरबादीका नुक़सान न सहना पड़े ।

काज़ी—हम शामके सात बजे तुम्हारे मकानपर पहुंच जावेंगे ।

स्त्रीने सलाम किया और चलती हुई । जूतीकी तजबीज काम कर गयी । काजी स्त्रीपर ऐसा लट्टू हुआ कि शामके समय घरपर जानेको तैयार हो गया। सचमुच काजी उस सुन्दरीपर दिलो-जानसे फरेफ्ता हो गया था, यही कारण था कि जल्दी जल्दी सब मुक़द्दमे तैकर शामके समय वक्तसे पहले ही जा पहुंचा ।

स्त्रीने देखा कि काज़ी चला आ रहा है तो स्वागतके लिये दरवाजेतक आयी और सलामकर अन्दर ले गयी ।

मकानभरमें सिवा इन दोनों प्राणियोंके और कोई न था। काज़ीने जीभर प्रेमालाप किया, आंखोंके रास्ते सुन्दरीको हृदय-तक पहुंचाया मगर एक इच्छा थी जिसके पूर्ण हुए बिना यहां-तक आना बिल्कुल बेसूद बल्कि सरासर बेहूद था। काजीने चाहा कि उस इच्छाको पूर्ण कर ही लेना चाहिये, न जाने फिर समय मिले या न मिले । प्रेमकी भूमिका तो समाप्त हो ही चुकी थी, अब क्रियात्मक ग्रन्थकी ओर प्रयत्न होने लगा । काजी-ने बिना संकोचके अपने हार्दिक भाव प्रकट कर दिये और विवश हो हाथको हाथमें ले लिया ।

स्त्री पतिव्रता थी। कब गवारा कर सकती थी कि कोई नीच-प्रकृतिका पुरुष उसके धर्मको नष्ट करे। हाथसे हाथको छुड़ा-कर दूर जा खड़ी हुई और घृणाकी दृष्टिसे काजीकी तरफ देखने

लगी। कामी काजी इस दृष्टिको भी प्रेमपुस्तकका कोई अध्याय ही समझ रहा था, उठा और फिर जाकर जबरदस्ती करने लगा। स्त्रीने जब देखा कि काजी बुरी तरह पीछे पड़ा है और नहीं मानता तो जोरसे चीख लगा दी। अब तो काजीके होश ठिकाने आ गये। कहने लगा कि देवी, मुझे मुआफ कर, चिल्लाओ नहीं, मैं अभी ही चला जाता हूं।

काजी अभी यह कह भी न पाया था कि दरवाजेपर किसीने जोरसे हाथ मारा और कहा कि कौन है, दरवाजा जल्दी खोलो!

काजी—(स्त्रीसे) यह दरवाजेपर किसने आवाज दी है।

स्त्री—आवाजसे तो ऐसा प्रतीत होता है कि मेरा पति ही आ पहुंचा है।

काजी—जल्दी करो, मुझे कहीं छिपाओ। ऐसा न हो कि मुझे भी तुम्हारे साथ मार खानी पड़े और आबरू उतरवा बैठूं।

स्त्री—यह सन्दूक है अगर छिपना चाहो तो झटपट इसमें छिप जाओ, नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं है!

काजीने झटपट सन्दूक-प्रवेश-संस्कार किया और उसके अन्दर बड़ी बुरी तरहसे ठसकर बैठ गया। स्त्रीने जब देखा कि काजी साहिब अपने खास मुकामपर तशरीफ रख चुके हैं तो उसने इस अजीब तशरीफके सन्दूकमें ताला लगा दिया और यह कहकर दरवाजा खोलने चली गयी कि काजी साहिब हिलना डुलना नहीं और न कुछ बोलना, नहीं तो पोल खुल जावेगी।

दरवाजा खोला, देखा कि जूजी बाहर खड़ा है और कुछ बड़-

बड़ा रहा है, सान्त्वना देकर अन्दर लायी। इस मोटी मुरगीके फंसनेपर पति-पत्नी दोनों अन्दरसे खुश थे मगर बाहिरसे यह जतलाना चाहते थे मानों परस्पर द्वेषी हों।

जूजी—हमारे घरमें तो खानेको आटातक नहीं और लोग यह कहते हैं कि इनके पास हजारों अशर्फियां हैं। भला आज-कलके अकालमें कौन अशर्फियां बचा रखेगा जब कि भूखके कारण घरके बरतनतक बेचने पड़ रहे हैं। जिधर जाता हूं लोग यही कहते हैं कि तुम्हारे पास अशर्फियोंसे भरा सन्दूक रखा है, तुम तो अमीर हो। उधर यह है और इधर भूखके मारे प्राण निकले जाते हैं। आज मेरी इच्छा है कि इस सन्दूकको सबके सामने ले जाकर आग लगा दूं और भस्म कर दूं ताकि न सन्दूक रहे और न मुफ्तमें बदनामी हो। देवि! तुम बताओ तुम्हारी क्या इच्छा है।

स्त्री—आप यह जानते हैं कि पिताजीका दिया हुआ मेरे पास यही सन्दूक ही बाकी है और सब चीजें तो जैसे तैसे काममें ही आ चुकी हैं। इसलिये मेरी इच्छा है कि कुछ हो माता-पिता की दी हुई इस चीजको योंही नष्ट नहीं कर डालना चाहिये।

जूजी—कुछ हो, यह संदूक मेरी बदनामीका सबब है, मैं इसको कदापि न रखूंगा। जलाकर ही छोड़ूंगा। अभी जाकर कुलीसे उठवाकर सरेबाजार आग लगवाता हूं।

बाजार गया और कुली लेकर आ गया। सन्दूक बड़ी कठिनतासे उठवाकर कुलीकी गाड़ीपर रखा गया। कैसा

अजीब सन्दूक है। गाड़ी चल दी। थोड़ी दूर चलकर जूजोने गाड़ीवानसे कहा कि जरा ठहरो मैं कुछ भूल आया हूं उसे घरसे लेता आऊं। जूजी तो घर चला गया और काजी साहिबको मौका मिल गया।

गाड़ीवानको जब मालूम हुआ कि सन्दूकके अन्दरसे कुछ आवाज आ रही है तो कान लगाकर पास बैठ गया और कहने लगा कि तुम कौन हो और क्या कहना चाहते हो? जल्दी बताओ ताकि इन्तजाम किया जावे।

सन्दूक—मैं इस तहसीलका काजी हूं। दुर्भाग्यवश इसके जालमें फंस गया हूं। तुम ऐसा करो कि किसी प्रकार मैं इससे निकलूं, नहीं तो सन्दूकमें पड़ा जला दिया जाऊंगा।

गाड़ीवान—अगर आपकी इजाजत हो तो तहसीलमें आपके नायबको सूचना दे दूं ताकि वह उचित प्रबन्ध करे।

सन्दूक—ठीक, ठीक। यही करो; अब तो वह आ रहा होगा इसलिये अब तो न जाओ बल्कि तहसीलके पाससे होते चलना और वहां कुछ बहानाकर नायबको खबर दे देना। देखो, अगर तुम आज मेरी जान बचा दोगे तो मैं तुम्हें काफी इनाम दूंगा।

इतनेमें जूजी आ गया और गाड़ी चल दी। जब तहसीलके पास पहुंचे तो गाड़ीवानने बहानाकर नायबको खबर दे दी और बाजारकी तरफ गाड़ी हांककर चल दिया।

बाजार पहुंचकर गाड़ीसे सन्दूक उतारा गया और चौकमें

रखवा दिया गया। जो कोई आता यही कहता कि ऐसे अच्छे सन्दूकको जलाना क्यों चाहता है, यदि बेच दे तो कीमत भी मिल जावें और सन्दूक भी बना रहे। आखिर नीलामीकी आवाज लगायी गयी, जो कोई देखता हैरान रह जाता कि जूजीका सन्दूक बिक रहा है।

नायब साहिब भी आ पहुंचे और कहने लगे कि इस सन्दूककी क्या कीमत है और इसमें क्या चीज है।

जूजी—जनाबे आली! इसकी कीमत १०० दीनार है और इसके अन्दर एक विचित्र वस्तु है। आज्ञा हो तो खोलकर दिखला दूं?

नायब—(खोलनेके नाम घबराता हुआ) खोलनेकी आवश्यकता नहीं, बन्द ही रहने दो, लेकिन इसकी कीमत बहुत अधिक मांग रहे हो। क्या तुम्हारी समझमें १००० रुपया कुछ चीज ही नहीं? ठीक ठीक कहो।

जूजी—अजी! आपसे कह दिया है १०० दीनार इसका मूल्य है। खुशी हो तो लो वरना मैं खोलकर दूसरोंको दिखलाये देता हूं।

नायब—खोलो नहीं, हम १०० दीनार देते हैं इसे हमारे घर पहुंचा दो।

जूजी—घर तुम स्वयं ले जाओ। घर पहुंचाना मेरा काम नहीं है। अगर १०० दीनार दोगे तो यहांसे हिलने दूंगा वरना नहीं।

नायब साहिब घर गये और १०० दीनार लाकर दिये। जूज़ी अपने घर पहुंचा और नायब अपने घर पहुंचे। जाकर सन्दूक खोला और काज़ी साहिबको उससे बाहर निकाला। इस कुछ घण्टोंकी कैदसे काज़ीको पता लग गया कि कष्ट किस प्रकार सहा जाता है। अब काज़ीने अपना जीवन सुधारना शुरू किया और पापोंसे बचना आरम्भ कर दिया। अपने परि-श्रमसे ऐसा बना कि धर्मकी मूर्ति हो गया। अब उसके आचरण दिन प्रति दिन धर्मानुसार होने लगे। जहां पहले विषयी था अब संयमी हो गया, निर्दयी था तो दयालु हो गया।

जब इसी प्रकार शुद्ध जीवनमें रहते रहते एक वर्ष व्यतीत हो गया तो जूज़ी दुष्टको फिर ख्याल गया कि खर्च कम हो गया है इसलिये फिर चलकर काज़ीको फंसाना चाहिये। स्त्रीको बुलाकर कहने लगा कि उसी तरीकासे फिर काम करना चाहिये।

जब स्त्रीने जाकर काज़ीको फिर फांसनेकी कोशिश की तो होशियार काज़ी झटपट समझ गया और दुतकारकर बोला कि जा, दूर हो दुष्ट, तूने मुझे पहले भी चक्करमें डाल दिया था! अब मैं तेरे जालमें नहीं फंस सकता, किसी और नादानपर जाल फंसा।

तात्पर्य—शैतान अपनी स्त्री—मायाके हाथों हजारों मनु-ष्योंको फांसता है और बुरी तरह उनकी मिट्टी पलीद करता है। चाहिये कि उसके मकर—बाहरी टीपटाप—में न आ जावें।

हर आत्मा शरीररूपी सन्दूकमें बन्द है। इस सन्दूकको कोई विरला महात्मा ही खरीद सकता है और सदुपदेशोंके द्वारा कैदसे रिहाई दिला सकता है। ऐ इन्सान! जबतक तू पापी है तबतक तुझपर शैतानकी हुकूमत है, वह जिस सन्दूकमें चाहे तुझे कैद रख सकता है, पर ज्योंही धर्माचरण आरंभ किया त्योंही खुदाकी सलतनत—ईश्वरके धर्मराज्यमें स्थान मिला।

तीन आलसी

एक पुरुषके तीन पुत्र थे। जब उसकी मृत्यु निकट आयी तो काजीको बुलाकर वसीयत करने लगा कि मेरी धन-सम्पत्तिपर इनमेंसे उसका अधिकार हो जो सबसे अधिक काहिल और आलस्याचार्य्य हो।

वह पुरुष तो मर गया। काज़ीने सोचा कि कैसे पता लगे कि इनमें कौन सबसे अधिक सुस्त है। निश्चय किया कि बारी बारीसे सबको बुलाकर पूछना चाहिये ताकि वसीयतके मुताबिक कार्य किया जा सके। आखिर एकको बुलाया और पूछा कि तुम्हारा जीवन कैसे व्यतीत होता है? उसने अपना वृत्तान्त सुनाना शुरू किया।

एक—शीत कालका समय था और रात अंधेरी। जब बारह बजे तो बादल बरसना शुरू हुआ। इतने जोरकी बारिश हुई कि मकान चूने लग गये, बड़ी कठिनता पेश आयी—ऐसी रातमें मारे सर्दीके हाथ-पैर ठिठुर रहे थे, दाँत भी कटकटा रहे थे और

शरीरमें भूचाल आ रहा था। इधर तो यह हालत, उधर पानी बन्द हो गया और बरफ पड़ने लगी। ऐसी कड़ाकेकी सर्दी हुई कि बारी बारीसे घरके सब पुरुषा याद आने लगे। लिहाफ़में घुसकर गठरी सी बनना पड़ा फिर भी सर्दी लगती ही रही।

ईश्वरकी कुदरत देखो, मुझे बड़े जोरसे प्यास लगी, बड़ी कठिनाईका सामना हुआ—पानी पीनेके लिये लिहाफसे हाथ निकालता हूँ तो मारे सर्दीके सून हो जाते हैं और यदि प्यास सहता हूँ तो सही नहीं जाती। मारे प्यासके होंठ सूख गये, जबान सूख गयी और कलेजेमें आग सी लगने लगी। मगर शाबास है मेरी हिम्मतको कि मैंने इतने कष्टमें हाथ न निकाले और प्यासा ही पड़ा रहा हालां कि पानीका लोटा मेरे सिरहाने रखा था।

दूसरा—ऐ काजी! यह काहिली क्या है, जरा मेरी काहिली तो सुन। मुझे तू आलस्यका आचार्य्य समझ। आलस्यका छोटा-मोटा पत्थर नहीं पहाड़ समझ। नाला नहीं दरिया और समुद्र जान। मैं ऐसा आलसी हूँ कि अगर मेरे सिरपर तल-वार भी धरी हो, मैं हरकत नहीं करूंगा इस ख्यालसे कि अपने बचानेका या बच जानेका कष्ट किस लिये सहन करूं। अगर मेरे शरीरपर आग रख दे तो मैं उसे कदापि न दूर फेंकूंगा क्योंकि मैं जानता हूँ कि ऐसा करनेसे आलसी नहीं रहूंगा। अगर मेरे सिरपर आरा भी चले तो कभी वहांसे न हटूंगा क्योंकि मैं जानता हूँ कि ऐसा करनेसे मेरी बदनामी होगी और मेरी मान-

मर्यादामें फरक पड़ेगा। यदि सांप और बिच्छू भी सैकड़ोंकी संख्यामें मुझे डंक मारें तो भी मैं आलस्यको नहीं छोड़ सकता और वहांसे अपनी रक्षा नहीं करना चाहता। यदि तुझको मेरा हाल जानना हो तो सुन, मैं अपना कच्चा चिट्ठा तुझे सुनाये देता हूँ।

मैं एक बार एक बादशाहके हाल सुनकर उसके शहरकी तरफ जा निकला। देखा तो हर एक यही कह रहा है कि यह शाह ऐसा दानी है कि जो चाहे जिस समय दरवाज़ा खट-खटाये उसको उसी समय अभिलषित वस्तु दान दी जाती है। सुनते सुनते थक गया। मेरी हालत ऐसी ख़राब थी कि हर देखने-वालेको रोना आता था। खानेको अनाज नहीं,पीनेको पानी नहीं, पहननेको वस्त्र नहीं और रहनेको मकान नहीं—ऐसी हालतके होते हुए भी और दिन-रात बादशाहके दानकी चर्चा सुनते हुए मैंने अपना आलस्य-धर्म नहीं त्यागा। न तो मांगनेके लिये जबान हिलायी और न लेनेके लिये हाथ हिलाये और न वहां जानेके लिये पांवको ही हरकत दी, अपने स्थानपर ज्योंका त्यों पड़ा रहा और सुनी अन-सुनी करता रहा।

तीसरा—मुझे बात बनानी तो आती नहीं। हां,अपनी कहानी जरूर सुनाये देता हूँ। एक दिन मैं अपनी गौको चरानेके लिये बड़े घने जङ्गलकी तरफ जा निकला। जब ऐसे स्थानपर पहुंचा जहां खूब हरियाली थी तो गौको वहीं चराने लगा। गौ चरती रही और मैं एक वृक्षके नीचे बैठा उसकी रखवाली करता रहा। गौ चरती २ अच्छी २ घासके लालचमें आगे निकल गयी और मैं

जहां बैठा था वहीं बैठा रहा। आखिर शाम हो गयी, साथ ही मेरी काहिलीसे जहां तीनों समयकी प्रार्थनाएं जायद गयीं वहां गौ भी गुम हो गयी। यह सब कुछ सहा मगर यह न सहन कर सका कि आलस्यको छोड़ दूं और वहांसे उठकर गौको तलाश करूं या नमाज़—प्रार्थना—ही कर लूं।

जब यह तीनों भाई अपना अपना हाल सुना चुके तो क़ाजी-से कहने लगे कि हममेंसे जो अधिक सुस्त हो उसका नाम ले और पिताकी वसीयत उसको पूरी कर दे।

काजी कहने लगा कि निस्सन्देह तीसरा ही सबसे अधिक आलसी है क्योंकि उसने धर्मतकको खैरबाद कह दिया और सुस्तीको नहीं छोड़ा।

तात्पर्य्य—जो संसारके विषय-भोगोंमें मस्त हैं और धर्मके कामोंमें सुस्त हैं दुनियाके लिये वही ठीक हैं। वह पुरुष नहीं स्त्री हैं।

जो न किसीके आगे हाथ पसारता है, न मौतसे डरता है न तलवार, आग और आरासे भयभीत होता है वह सचमुच सांसारिक सम्पत्ति पानेका अधिकारी नहीं, उसके लिये तो दूसरे लोककी जायदाद तैयार पड़ी है; क्योंकि वह दुनियासे गाफिल होकर भी ब्रह्मलोककी हर बातसे जानकार है। यही मर्द है—सच्चा पुरुष है। जो न दुनियाको पसन्द करता है; न परमात्मा-को, बल्कि स्वर्गके स्वप्न देखा करता है ऐसा व्यक्ति न पुरुष ही है न स्त्री बल्कि उसको नपुंसक समझना चाहिये।

क्या करूं

एक धर्मात्मा गृहस्थ बड़े शशपञ्जमें फंसे हुए थे। उनको यह नहीं सूझता था कि कैसे इस बातको सुलझाये'। बात यह थी कि एक दिन ज़ुमाकी नमाज़का समारोह था। उसको उसमें सम्मिलित होना था और सबके साथ मिलकर ईश्वरकी स्तुति-प्रार्थना करनी थी पर यदि वह इस कार्यको करता है तो दो और काम हैं जो बरबाद हुए जाते हैं—उसी समय खेतको पानी देना था वरना बादमें पानी नहीं मिल सकता था और दूसरे एक ऊंट था जो नकेल खुलवाकर भाग खड़ा हुआ था। इन तीन कामोंमें हरएकको बाकी दोनोंसे अच्छा समझता क्योंकि यदि प्रार्थनाके लिये न जावे तो धर्मका उल्लङ्घन होता और दीन बिगड़ता है, यदि खेतको पानी नहीं देता तो फसल बरबाद होती है और खानेको अनाज नहीं मिल सकता, यदि ऊंटको नहीं पकड़ता तो १००) का नुकसान होता और सवारीके बग़ैर कष्ट उठाना पड़ता है। अब करे तो क्या करे। आखिर निश्चय किया कि चाहे खेत बरबाद हो और ऊंट चला जावे पर नमाज़—ईश्वरकी याद—नहीं छोड़नी चाहिये। यह सोच सीधा संगतकी तरफ चला गया और प्रार्थनामें सम्मिलित हुआ। जब वहांसे वापस आया तो देखता क्या है कि ऊंट घरमें अपने स्थानपर बंधा हुआ है। स्त्रीसे पूछा कि यह क्या बात है? वह बोली—ऊंट भागता हुआ यहां आया था, उसके पीछे एक भेड़िया प्रतीत

होता था जो भगाये चला आ रहा था। जब गांवके पास ऊंट आ गया तो वह भेड़िया उलटे कदम वापस हो गया और ऊंट घरपर चला आया। बस, मैंने दौड़कर पकड़ लिया और बांध दिया।

इस बातके सुनते ही ईश्वरको धन्यवाद दिया और कहने लगा कि यह उसी सत्ताकी कृपा है जो जंगलसे ऊंटको इस प्रकार भगाकर यहां पहुंचा दिया।

शाम हुई तो शौचादिसे निवृत्त होनेके लिये खेतकी तरफ जा निकला, देखा तो सारे खेतमें पानी भरा है—बड़ा हैरान हुआ और किसानोंके पास जाकर पूछने लगा कि यह कैसे भर गया? किसानोंने कहा कि हम अपने अपने खेतोंमें पानी दे रहे थे कि रास्तेमें नहर टूट गयी। हमने बड़ी कोशिश की कि किसी तरह बन्द हो पर तबतक न बन्द हुई जबतक कि इस खेतमें पानी भर न गया।

कुछ तो पहले ही धर्मभाव था, कुछ इसके सुनते ही और उमड़ पड़ा—अब तो ऐसा विश्वास हो गया कि जो किसीके हटाये हट नहीं सकता था।

तात्पर्य्य—तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति। जो मुझे नहीं भुलाता उसे मैं भी नहीं भुलाता।

जो ईश्वरके हाथमें अपनी नकेल दे देता है उसके सब कार्य ईश्वरके गुप्त हाथोंद्वारा सदा सिद्ध होते रहते हैं।

अध्यात्म शिक्षाका विचित्र विज्ञान

एक सूफी संगत लगाये बैठा था। उसकी शिष्य-मण्डली

उसकी चारों ओर बैठी थी। अकस्मात् जब कि वह सूफी उपदेश कर रहा था कि पूर्व दिशासे तीन पक्षी बड़ी तीव्र गतिसे उड़ते-उड़ते उधर आ निकले। सबसे आगे एक कबूतर था, उसके पीछे मुर्ग और उसके पीछे कौआ। शिष्य-मण्डलीने जब यह असाधारण मण्डली ऊपर उड़ते देखी तो सूफीसे पूछा कि महाराज! यह क्या बात है, जो कबूतर, मुर्गा और कौआ एक दूसरेके पीछे भागे चले जा रहे हैं?

सूफी—इसको कबूतर न समझो, यह ज्ञानी महात्माका प्रतिबिम्ब है और चाहता है कि इन दोनोंसे पीछा छुड़ाकर भाग जाऊं। यह जो मुर्ग है इसको दुनिया समझना चाहिये। यह चाहता है कि किसी प्रकार पर मारकर ज्ञानीपर हमला करूं और अपने तेज पञ्जों तथा चोंचसे छिछोड़ डालूं। इसीलिये उसने अपनी मददके लिये कौएको साथ ले रखा है। मगर न तो दुनिया रूपी मुर्ग पहुंच सका है और न उसका साथी तलबगार संसारी विषयोंमें मस्त कौआ ही पहुंच पाया है। ज्ञानी कबूतर इनकी पहुंचसे परे है। वास्तवमें ज्ञानमें बड़ी शक्ति है, जो उसका सहारा ले वह सबसे आगे रहता और शत्रुओंके हमलोंसे बचा रहता है। कौआ जो है यह संसारके विषयभोग जो कि सचमुच मलमूत्रके समान है भक्षण करता और इसीलिये संसाररूपी मुर्गके पीछे २ चलता है। यह धूर्त इसलिये ज्ञानीको नहीं पा सकता कि इसके आगे दुनिया है। अगर यह दुनियाके पीछे न होता तो सम्भव था कि कुछ कर सकता मगर अब कुछ आशा नहीं।

तात्पर्य्य—जो संसारके विषय-विकारसे भागकर विरक्त हो आगे निकल गया वही ईश्वरको पा गया और जो संसारके पीछे रहा वही प्रकृतिका दास, ईश्वरसे विमुख और कौआ कहलाया।

प्रेमका आदर्श

एक परी जैसी बड़ी खूबसूरत स्त्री थी। वह चलते चलते एक स्थानमें जा खड़ी हुई। उसने यह देखा कि एक आदमी उसकी तरफ चला आ रहा है। जब पास आ गया तो वह देखते ही बेहोश हो गया। जब दिल ठिकाने हुआ तो उठा और उस सुन्दरीकी तरफ देखने लगा। देखते २ रहा न गया और आगे बढ़कर उसकी इच्छा हुई कि वह इस प्यारी शक्लको कण्ठसे लगावे। यह सोच आगे बढ़ा ही था कि स्त्री फौरन पीछे हट गयी और कहने लगी—

स्त्री—क्यों जी! क्या बात है जो इधर बढ़े चले आ रहे हो और अपनी हद्दसे बाहर जा रहे हो।

पुरुष—देवि! तेरे सौन्दर्यने मुझे मार डाला है और तेरी नाज़ुक अदाओंने तीर बरसाये हैं तथा तेरी टेढ़ी चालों और तिरछी नजरोंने मुझ गरीबको घायल कर दिया है। क्या कहूं तेरे रूपने मेरे दिलको जबरदस्ती छीन लिया है। इस प्रकार जब तेरी तरफसे इतनी जियादतियां हुई हैं तो मुझे भी हौसला हो गया कि अपनी रक्षाके लिये आगे बढ़कर वार करना चाहिये।

अब तो मैं तेरा आशिक हो गया हूं। जबतक तुझको आलिङ्गन न करूं, शान्ति नहीं पा सकता। मेरे हालपर मेहरबानी कर और अपने सुन्दर शरीरसे एक बार सुखस्पर्शरूपी महाकर्य पुष्पको सूंघने दे।

स्त्री—मेरे पीछे मेरी एक दासी है वह मुझसे अधिक सुन्दरी है। अगर तू उसको पावेगा तो बड़ा आनन्दित होगा। देख, मेरी दासी वह चली आ रही है।

पुरुषने जो पीछे मुड़कर देखा तो दासीका कहीं ठिकाना ही नहीं। जब देखते देखते थक गया तो स्त्रीने बड़े जोरसे उसके मुंहपर एक तमाचा मारा और बोली—

स्त्री—ऐ मक्कार, दगाबाज और झूठे आशिक! तुझको शरम नहीं आती कि मुझसे प्रेम करता हुआ दूसरीकी तलाशमें इन्तजारी कर रहा है। तुझ नालायकको किसने आशिक कहा है। जा, तू आशिक होनेके लायक नहीं है। जो ग़ैरसे प्रेम करता है वह धोखेबाज़ है।

तात्पर्य्य—हे आत्मन्! तू परमात्मापर आशिक हो जा और उसकी दासी माया चाहे कितनी ही खूबसूरत क्यों न हो उससे दिलको हटा ले। यहांतक कि सिवा प्रभुके किसी अन्य-वस्तुका न दर्शन कर, न स्पर्श कर, न घ्राण कर, न ज्ञानकर और न ध्यान कर। अगर ऐसा न करेगा तो परम कमनीय महाप्रभुके हाथों ऐसा तमाचा खायेगा (नुकसान उठावेगा) कि जो सहे न सहा जावेगा।

दिलका हुजरा साफ़ कर जानांके आनेके लिये ।
ध्यान ग़ैरोंका हटा हस्ती मिटानेके लिये ।।

चौथा खण्ड

(सदुपदेश)
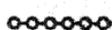
प्रेम-माहात्म्य

नादान बच्चे जब खेलका नाम सुनते हैं तो खुशीके मारे फूले नहीं समाते और ऐसे भागते हैं जैसे बे लगाम गधे। लेकिन इन भोले-भाले खिलाड़ियों-को यह मालूम नहीं कि इस मा में ऐसा एक भयानक गड्ढा है कि जिसमें गिरकर इनका सब बना-बनाया खेल बिगड़ जायगा और यह स्वयं खेलका शिकार हो जायंगे।

ऐ मनुष्य! युवावस्था गयी। अब तुझपर बुढ़ापेकी काली घटाएं छा गयी हैं। अब तो तू अपने दिलको इस संसारगर्तके पंकसे बाहर कर, क्योंकि इस प्रकार संसारमें निमग्न होनेसे सिवा टोटेके और कुछ भी हासिल नहीं होता।

यदि दिल प्रसन्न है तो मनुष्य होशियारीसे कार्य कर सकता है और यदि वह कीचड़में फंसा है तो उससे किसी तरहकी आशा करना व्यर्थ है। लोग बागोंकी सैर करते हैं और व्यर्थमें अपना समय बरबाद करते हैं। हां, वे यदि हृदयके उद्यानकी सैर कर

और इसमें खिले इश्क पुष्पकी बहार देखें तो मस्त हो जावें और गांयतकका रास्ता छोड़ बैठें। ठीक है; वह प्रेम कैसा है जो राह चलतेको अपनी तरफ न खींच सके और अपनी शक्तिसे अपनेपर प्रेम न करा सके।

जो बदनसीब इस प्रेम-उद्यानकी शुभ सैरको छोड़कर गांवकी गन्दी हवापर जान दे रहा हो मानो वह अक्लको तबाह करनेमें लगा हुआ है। देख, अगर तू इस दिलके यात्रा बागकी करे तो सचमुच यूसुफकी तरह तुझको जुलेखाका दुर्लभ पुष्प मिल जावे। क्योंकि जिन यात्रियोंने इस उद्यानकी तरफ कदम बढ़ाया है उनके स्वागत करनेको वायु-देवताने मनोहर पुष्पोंकी सुगन्धि नासिका-द्वारपर लाकर रख दी है। धरती-माताने अपने शीतल स्पर्शसे यात्राके सभी क्लेश मिटा दिये हैं और सूर्यदेवने रंग-बिरंगे फल फूल दिखाकर आंखोंको खुश कर दिया है।

अहा! जिस खुशनसीबको प्यारेके दर्शन हो गये हैं उसकी यात्रा सुफल हो गयी और यह बागेदुनियां उसके लिये वीरान हो गया। वह तो अब यही चाहेगा कि कब प्रीतमके दर्शन करूं। वह अपने प्रेमीके देखनेके लिये बड़े-बड़े कष्ट उठाता है, आपदायें सहन करता है और यह कहता है कि एक रातके लिये तुझसे मुलाकात हो।

सच्चा और निर्दोष प्रेम उसीका समझना चाहिये जिसने कि अपने दिलबरकी यादमें हरएकसे नाता तोड़ लिया है और

दिन-रात यही चाहता है कि प्यारेकी प्यारी प्यारी शक़ल देखूं। ऐ मनुष्य ! तू इस तरह क्यों प्रेम कर रहा है जिससे तुझको चिरकालतक कबरमें सड़ना पड़े ? तू क्यों नहीं उस प्यारेसे प्रेम करता, जो सदा जीते रहकर अपने प्रेमियोंको एक नजरमें निहाल कर देता है ।

यदि बाहरकी शक़लको छोड़कर भीतरके दृश्यको—प्यारेके सुन्दर मुखको देख ले, तो उसके सब संशय मिट जावें और वह प्रेमसागरमें निमग्न हो जावे । पर सज्जनो ! जबतक यह मायाका विस्मरणका पर्दा उठाकर परे नहीं फेंका जाता, तबतक छिपे रुस्तमके दर्शन नहीं हो सकते । प्रश्न यह है, कि इस पर्देको कौन तोड़ सकता है । भाई, वही तोड़ सकता है जो अपने अपूर्व बल, उत्साह श्रद्धा और प्रेमसे रात-दिन एक कर देता है और तबतक चैन नहीं लेता जबतक कि प्यारेके प्यारे मुखड़ेकी प्रतिभाशाली सौन्दर्यकी किरणें उसके उदास चेहरेकी निराशामय अन्धकार-पूर्ण रात्रियोंका अन्त नहीं कर देतीं । सच तो यह है कि जो इस मार्गमें अपनेको भुला, गला, सड़ा यहांतक कि अपनेको जीते जी मुर्दा नहीं कर सकता, वह उस प्यारेके द्वारतक कदापि नहीं पहुंच सकता ।

ऐ यात्रियो ! यदि इस मार्गपर चलनेका निश्चय कर चुके हो और श्रद्धासम्पन्न हो चलनेको तैयार बैठे हो तो रास्तेके भयानक गड्ढों—संशय, व्याधि और नाना प्रकारके विस्मर-णादि विक्षेपोंको दूर करने तथा उनसे बचकर सीधी सड़कपर

चले चलनेके लिये एक लालटेन (मार्गदर्शक गुरु) साथमें ले लो ।

जो कोई प्रभुके प्रेममें फंस जाता है उसके फिर लाखों बार इम्तहान होते हैं और तरह २ की परीक्षाओंकी चलनियोंमेंसे उसे छानना पड़ता है। ऐसी अवस्थामें जो इन कष्टोंको सहन कर सकनेकी हिम्मत—रखता हो, वही इस रास्तेपर कदम रखे वरना हर कसो-नाकसके चलनेका मुकाम नहीं है। इसीलिये इस मार्गके पहले फाटकपर ही लिखा रखा है कि—'यह शारअ आम नहीं है। परीक्षासे वही लोग भयभीत होते हैं कि जो सच्चे सभावके नहीं होते या जिनमें धैर्य नहीं होता, वरना परीक्षा तो शीघ्रसे शीघ्र प्यारेतक पहुंचनेकी सीढ़ी है। भला, ऐसा कौन दुर्मति होगा जो परमप्रभु प्रीतमके प्रेम-भवनकी सीढ़ियोंपर चढ़नेसे घबराता हो यदि परीक्षाका लिहाज न रखा जावे तो नपुंसक भी इस कशमकशमें रुस्तम बन जावे।

जो संसारकी शराब पीता है वह रातभर तबाहीमें बेहोश पड़ा रहता है, जब सूर्य उदय होता है तो उसे अपनी मूर्खताका ज्ञान होता है। पर जो लोग प्यारेके प्यारमें प्रेमके प्याले पीकर संसारकी आवाज़से दूर पड़े हैं, उनको सूर्य भी नहीं जगा सकता (१) और न सूरे महा प्रलयका सर्व दिग्व्यापी भयंकर शब्द ही।

---

(१) कठोपनिषत्‌में कहा है कि 'न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकम्' अर्थात्

ऐ अभिमानी! तू अपनेको थोड़ीसी मेहनत करनेपर जुनीद और बायुज़ैद (१) समझने लगा है पर मैं तेरा यह दम्भ पहचान गया हूं, तू किसी भी प्रकार प्यारी शकलको नहीं देख पावेगा। वहां तो उसका गुजर हो सकता है जो मारे प्रेमके अपने अभिमानादिक वस्त्रोंको फाड़ डाले और इन फटे हुओंको जलाकर नग्न होकर प्यारी मूर्त्तिके प्रेमका एकान्तमें लुत्फ उठाये। यदि तूने अभिमानको नहीं त्यागा और खुदीको छोड़ बेखुद नहीं हो गया तो निश्चय जान तू एक लुटेरा है जो राह चलतोंको लूटनेवाला है। बिल्लीकी तरह तू चूहोंका शिकार करता है। यह भी कोई शिकार है कि दबक कर बैठ रहे और नाचीज़ चूहोंको मार खाया करे! अरे! अगर शिकारी बनना है तो उठ, शेरका शिकार कर जिससे तेरी बहादुरीका भी पता लगे (२)। संसारके नश्वर पदार्थोंसे प्रेम किस कामका! भाई, प्रेम तो वही है जो परमेश्वरसे किया जावे।

न वहां सूर्यका प्रकाश पहुंच सकता है और न चांद और तारोंकी रोशनी। मुक्तिकी नींद वास्तवमें ऐसी ही है।

(१) अरबमें आजसे ८०० वर्ष पहले जुनीद नामक एक महा विरक्त ब्रह्मवेत्ता हो गये हैं, जिनके सम्प्रदायमें प्रसिद्ध ब्रह्मज्ञानी महामना तेजस्वी मनसूरका सूर्य चमकता रहा। बायुज़ैद भी बड़े तपस्वी ऋषि थे। इन्होंने ३० वर्षतक कठिन व्रत पालन किये थे और २ वर्षतक जलपान नहीं किया था।

(२) इसी भावको कठोपनिषत्में कहा है—प्रणवो धनुः शरोह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते। ओंको धनुष बनाकर अपने आत्माको तीरकी जगहपर लगा दो और ब्रह्मको लक्ष्य बनाकर तीर छोड़ दो। कैसा अद्भुत शिकार है!

ऐ विषयकीचड़में लतपत हुए कीड़े! उधर जानेका मार्ग और है। तू उसको छोड़ क्यों इधर-उधर टक्करें मार रहा है और अपना अमूल्य समय बरबाद कर रहा है (१)।

यदि तू प्रेमियोंका रूप बना इसलिये फिर रहा है कि दुनिया तेरे जालमें फंसे तो ऐ नादान! यह कुकर्म मत कर क्योंकि सिवा अनिष्टके और क्या ले लेगा (२)। क्या ही अच्छा होता यदि तू अपना अपराध आप ही कह देता, ताकि वैद्य तेरा इलाज आसानीसे कर पाता। यह जो तू मौनव्रत धारणकर मक्कारीका सबूत दे रहा है सचमुच तेरे हक़में वज्र है। ऐ दुनियाके कुत्ते! दिखानेके लिये शेरकी पोस्तीन—खाल मत पहन, अगर हौसला है तो सच्चा शेरेनर बन और दिखावट छोड़ दे।

ऐ मनुष्य! तू चाहे चालाक है या होशियार है, मगर यह तो

---

(१) कठोपनिषत्में कहा है कि—न ह्यध्रुवैः प्राप्यते हि ध्रुवं तत् अर्थात् नाशके मार्गपर चलनेसे अविनाशी ब्रह्म प्राप्त नहीं हो सकता। भला गधोंमें शेर कहां रह सकता है? काकोंकी काली मण्डलीमें महाश्वेत शुभ्रकाय हंस किसने देखा है? सचमुच इस अनित्य और अशुद्ध संसारमें नित्य शुद्ध और आनन्दघन प्रभुके दर्शन नहीं हो सकते। उपनिषत् देखो।

(२) कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्। अहंकार विमूढ़ात्मा मिथ्याचारः स उच्यते—गीता। जो कर्मेन्द्रियोंको संसारसे हटाकर मनसे सांसारिक भोगोंका ही चिन्तन करता रहता है, उस दुरात्माको मिथ्याचार-छली या दम्भी ही कहना चाहिये।

देख कि तू किधर जा रहा है—क्या चालाकका यह कर्तव्य है कि वह अपवित्र अथवा कष्ट-बाहुल्य मार्गपर चले !

बुद्धिमान् वही है जो नापाकीसे पवित्रताकी तरफ और मृत्युसे अमृतकी तरफ चले (१)।

तूने अपने आपको कुछ नहीं समझा, इसी लिये तो तू विषयोंका दास हो गया है। कहां तो सबसे आगे था और कहां अब सबसे पीछे रहा जाता है। क्या उन्नतिसे गिरकर अवनत दशाको पाना भी कोई सुकीर्त्तिका फल है ? नहीं, तो फिर क्यों इस पतित अवस्थामें पड़ा है ? संसारके ऐश्वर्य और आरामको त्यागकर प्रेमसे विह्वल हो जा और दिन-रात प्रेमीकी यादमें रोया कर, क्योंकि इसी एक उपायसे तुझको ऐसा खज़ाना मिलेगा, जिसका अन्त न पाया जा सके। जब तुझपर विपत्ति आती है तो तू ईश्वरको याद करता है, पर ऐ नादान ! ज्योंही मुसीबतका अन्त होता है त्योंही ईश्वरकी याद छोड़ बदमस्त हो जाता है।

एक तो वह हैं जो जागृत हैं पर उनके दिल टूटे हुए हैं और उनके हौसले मारे हुए हैं, ऐसे लोग उस लोकके हवा पानीको नहीं पा सकते। दूसरे अगरचे प्रकटमें सोये हैं, आंखें बन्द किये

(१) असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्यो माऽमृतं गमय-उपनिषद्। हे तारनहार ! मुझे असत्से सन्मार्गपर, अंधेरेसे प्रकाशकी तरफ़ और मृत्युसे अमृतकी तरफ़ ले चल। द्वे सृती अशृणवं देवानामुतमानुषणाम्०—यजु: दो मार्ग हैं एक देवों अर्थात् वेदार लोगोंका और दूसरा मनुष्यों अर्थात् साधारण बुद्धि रखनेवालोंका।

हैं, पर वास्तवमें होशियार हैं, कर्तव्याकर्तव्यको जानते हैं; उनकी आंखें बन्द हैं पर वास्तवमें जागनेकी अपेक्षा बहुत दूरकी चीज़ें दीखती हैं। क्यों न हो यह ब्रह्मज्ञानी योगीजनोंकी आंखें हैं (१)। यदि तू उसको देखना चाहता है और दिल तलब करता है, प्रेमकी इच्छा है, तो तू सब तरफसे होशियार होकर किसी सुरक्षित स्थानमें बैठ और सवेरे शाम उसके प्यारको याद किया कर। अगर तेरा दिल संसार-निद्रासे जाग उठे, तो तुझे हर पापसे बचा सकता है (२)। जो दिल जाग उठे हैं और प्यारेके प्रेममें बेहोश पड़े हैं, समाधिनिष्ठ हैं, ऐसे बेदार दिलोंपर दिलोजान फिदा करनेको जी जाहता है। अहा! इस अवस्थाके मजे जबानसे बयान नहीं किये जा सकते, इनको तो वही जानता है, जिसने प्रेममें मग्न होकर लुत्फ उठाया है (३)।

---

(१) या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी, यस्यां जागर्तिभूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः, गीता। जो सबकी रात है वही संयमी-दुनियांसे मुंह मोड़नेवालेका दिन है और जो लोगोंका दिन है वही बेदार महा मुनिकी रात है अर्थात् वह उसको पसन्द करता है जिसको दुनिया नहीं चाहती।

(२) माण्डूक्य कारिकामें भगवत्गौडपाद कहते हैं कि—अनादि मायया सुप्तो यदाजीवः प्रबुध्यते०। अनादि मायाकी थपकियोंसे सुलाई गई यह आत्मा जब जागती है तो अपनी पस्त हालतसे बुलन्दीपर चढ़ना चाहती है।

(३) महर्षि व्यासका योगभाष्यमें कथन है कि न शक्यते वर्णयितुं गिरा तदा स्वयं तदन्तःकरणेन गृह्यते-समाधिके आनन्दको ज़बानसे नहीं कहा जा सकता। हां, उसको तो दिल ही महसूस कर सकता है।

विनीत हो और अभिमानी मत बन, फिर देख, तुझपर क्या रहमत बरसती है। जबतक तू विषयमें लिप्त है तू सचमुच उधरसे बेखबर है।

प्रेमी वही है जो दिनरात प्यारेके नजदीक है, सच्चा प्रेमी वही है जो अपने गुणोंको भूलकर प्यारेके गुणोंपर मोहित हो जावे और अपने आपको उसका दास समझे। ज्यों ज्यों इस कूपका पानी पीता है त्यों त्यों प्यास बढ़ती है। यही इस ब्रह्म-कूपमें विचित्रता है कि जिसने एक बार इसका पानी पी लिया वह सदाके लिये इसका प्यासा हो गया। धन्य हैं वह लोग जो प्यारेकी भोली-भाली मनमोहिनी सूरतका हमेशा दीदार हासिल करते और उसके दरपर बोरिया डाले पड़े रहते हैं।

ऐ भाई! जिसके लब खुश्क हो गये हैं, वही प्रयत्नशील होकर पानीकी इच्छामें निकल खड़ा होगा। आखिरकार उसकी प्यास पानीके पास ले जावेगी और इच्छा पूर्ण कर देगी। काश कि तू भी ऐसा ही प्यासा होकर पानीकी तलाशमें निकल पड़े। (१) यह प्यास-मुमुक्षा ही सब दरवाजोंकी कुंजी है तथा

---

(१) जिन ढूंढ़ा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ। किसी वस्तुका प्राप्त करना उसकी आवश्यकतापर निर्भर है, जो यह जान ले कि मुझे इस वस्तुकी आवश्यकता है वह उसे प्राप्त करनेका पूर्णक उपाय वर्तता है। इसी प्रकार प्रेमीजनोंका सिद्धान्त है कि प्यारेको ढूंढ़नेमें दिन–रात एक कर देने चाहिये। जब ऐसी उत्कट लालसा हो जाती है तो उसका मिलना कुछ मुश्किल नहीं रहता। यही प्यास मुक्तिका एक साधन है।

सब रोगोंकी औषधि है। जिसको यह प्यास लग गयी, समझो कि उसके नसीबे जाग गये और उसके हाथ बड़ी अटूट धन-राशि आ गयी।

उस पवित्र सत्तासे प्यार करनेमें प्रेमी कभी अपवित्र नहीं कहे जा सकते, क्योंकि उनका प्रेम पवित्र है, प्यारी वस्तु पवित्र है और उनकी चेष्टा पवित्र है। ऐसे विशुद्ध प्रेम करनेवाले यदि प्यार करते करते मौतके पास भी पहुंच जावें तो उनको उससे भी प्यार ही करना सूझेगा वह प्रेमके नशेमें मौतके लम्बे-लम्बे विकराल दांत देखना भूल जावेंगे और देखेंगे कि अब भी उनके सामने प्यारी सत्ता ही उपस्थित है। मौत भी उनके लिये अमृत है। वह जानते हैं कि यही एक पर्दा है जिसके हटा दिये जानेसे प्यारेका सुन्दर मुख देखा जायेगा। जो पर्दा प्यारेका मुखड़ा दिखाता है उसको द्वेष दृष्टिसे कैसे देख सकते हैं इसीलिये यह जानबाज अदममें कदम मारते हैं, मौतको सहर्ष स्वीकार करते हैं।

ऐ मोक्ष-मार्गके यात्री! इस रास्तेपर चलता हुआ स्वार्थ-परताको यहीं छोड़ जा ताकि तू बेखुद होकर उससे जल्दी मिल सके, वरना याद रख यही पत्थर है जो तुझे चलने नहीं देगा और भयंकर नदी-प्रवाहमें डुबा मारेगा (१)।

---

(१) अत्रा जिहाम य असंचेशेवा० ऋग्वेद। हम इस संसारसागरके पार उतरनेसे पहिले उन दुःखदायक बोझोंको यहीं छोड़ चलें। सब कुसंस्कारोंको मिटाकर वहां जा सकेंगे। यही अध्यात्मविषयमें वेदकी सम्मति है।

ऐ मेरे प्यारे! अगर तू मेरे प्रेमसे प्रसन्न है और कुछ इनाम देना चाहता है तो मैं सविनय यह प्रार्थना करता हूं कि यदि तू मुझको मेरी आहोजारी सुननेकी इज्जत बख्शे तो मैं तेरा अहसान माननेपर मजबूर हूंगा।

मैंने जबसे तेरा दर देख लिया है बारबार यही तमन्ना है कि वहींपर डेरा जमा दूं और दोनों जहानके आनन्दोंको तेरे दरको खाकपर कुरबान कर दूं।

ऐ गर्मीकी लपेटमें झुलसे हुए प्रेमियोंके लिये आबेहयातके चश्मे! मैंने जबसे तेरे सायेमें सिर रखा है, अजीब ठण्डक पायी है, जी चाहता है कि इसको छोड़कर कहीं न जाऊं और हमेशा इसीमें आसन जमाये, दिलोजिगर हवाले किये, पड़ा रहूं (१)

ऐ दोस्त! यह दुनियां सन्तोषका स्थान नहीं है। यदि तू सन्तोष ही करना चाहता है तो क्यों नहीं प्रेममय आनन्द-घन परमप्रभुके सौन्दर्यसम्पन्न प्यारे चेहरेपर सब्र करता और क्यों नहीं इस दीपकका परवाना हो जाता। अगर तू एक बार उसके चेहरेको देख ले तो मैं दावेसे कहता हूं कि तू इतना मस्त हो जावे कि अपने दिल और जिस्ममें आग लगा दे। ज्योंही उस पवित्र मुखड़ेके शुभदर्शन प्राप्त होते हैं त्योंही दुनियाको गन्दगी छोड़ने-

---

(१) यजुर्वेदका मन्त्र भाग है कि यस्यच्छाया अमृतम्० जिसकी छाया अमृतके समान है ऐसे परमेश्वरकी शरण पकड़नी चाहिये। फल खाना तो दूर रहा उस वृक्षकी छायामें ही अमृत रखा है।

को इच्छा प्रबल हो उठती है। अहा! यह वह सौन्दर्य है, जिसके आगे दुनियाकी खूबसूरती फीकी पड़ जाती है। (१)

अगर तेरे पांवसे दुनियाका कांटा निकल जावे तो निश्चय ही तेरी रफ्तार तेज हो जावे और तू जलदीसे जलदी वहां जा पहुंचे। तब तू प्रबल प्रयत्न करेगा और तपस्वी बनेगा तो बहुत सम्भव है कि उससे मिल सके, नहीं तो आलसी होकर पड़े रहनेसे वहां-तक पहुंच जाना असम्भव ही है।

ऐ रुखसारपर मरनेवाले! अगर तू कहीं उसकी रुखसार-का दिल फरेब नजारा देखे तो देवता तेरी कदमबोसीको मारे मारे फिरें। चन्दरोजा हुस्नका आशिक मत बन। उस सौन्दर्य-पर आशिक हो जा, जिसमें परिणामका नाम नहीं और सदा ही सुन्दर रहता है।

सुन, दोस्तकी गुलामी बादशाहीसे बहुत अच्छी है। अविद्या-का पर्दा उठाकर तो देख तू तालाबमें पड़ा है और कहता है कि मैं प्यासा हूं।

देवता होकर अभिमान किया तो शैतान कहाया और तू एक तो पहले ही आदमी है, देवतोंसे हजार दरजा नीचे है ति-

(१) हिरण्मये परे कोषे विरजं ब्रह्म निष्कलं तच्छुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिस्त यदात्मविदोविदुः—उपनिषत्। स्वर्णके समान चमचमाते चेहरेवाला अपनी अजीब शानसे बैठा है, खूबसूरतसे खूबसूरत नूरानी चेहरे उसका यशगान कर रहे हैं, यह बात आत्मज्ञानी कह रहे हैं।

सपर भी अभिमान कर बैठा तो न जाने क्या फल पायगा और किस नामसे पुकारा जायगा (१)।

परमार्थ-मार्गपर चलनेवालोंकी खाकको अपनी आंखोंका सुरमा बना ताकि तेरे दिलकी आंखको रोशनी नसीब हो (२)।

और नहीं, तो तू प्यारेकी यादमें कुछ रो ही लिया कर क्योंकि इस प्रकार याद कर कर रोनेसे भी दिलकी सफाई होती है।

देखो! बादल रोता है तो चमन खुश हो जाता है और फूलफल पेश करता है। बालक रोता है तो माताकी छातीसे प्रेमकी गंगा उमड़ पड़ती है और दूधके फव्वारे छोड़ने लगती है। कसे अफसोसकी बात है कि जिस उपायको एक दिनका बालक भी जानता है तू उससे अनभिज्ञ है।

ऐसा कर कि तेरा दिल तो सूर्य्यके समान तपता, विरहसे जलता रहे और आंखें बादलके समान टप-टप आंसू गिराती रहें।

रोटीके लिये इतना आशंकित मत हो कि रोटी देनेवालेको ही भूल जाओ। तरह तरहके व्रतोंसे अपने शरीरको कमजोर कर और शैतानके फांसेमें मत आ।

---

(१) निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति—गीता। जो ममतासे तथा अहंकारकी मात्रासे शून्य हो जाता है वह शान्ति-चैन पाता है।

(२) तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया—गीता। ज्ञानीजनोंके चरणोंपर गिरकर और सविनय प्रेमालाप करते हुए श्रद्धासम्पन्न हो सेवा करते हुए परमात्मातक पहुंचा जा सकता है।

अपने दिलको यारके दिलसे जोड़ दे और फिर देख कि क्या लुत्फ आता है।

तू अजीब शिकारी है। अपने आपका ही शिकार कर रहा है। क्या कभी अपने जैसेसे भी इश्क होता है? इश्कके लिये तो दूसरी जिन्स और दूसरी शरीरवाली सत्ताकी आवश्यकता है। तू छोड़ इस ख्यालको और प्रेमकर उस सुन्दरताकी देवीपर और दिलसे दिल मिला दे फिर देख कैसे आरामसे दिन और किस चैनसे रातें गुजरती हैं।

इश्क कहता है कि इस घरको छोड़ और इधर मेरी तरफ आ और अपने जीवनके शेष भागको प्रेमकी चाशनीमें डाल दे, फिर देख क्या रंगत आती और क्या मजा आता है।

दुनिया भी कैसी अजीब अन्धी है कि जो सर्वथा दरिद्र और गुलाम हैं उनको शाह कहकर पुकार रही है और जो प्रेम जैसे रत्नोंको लिये बैठे हैं उन धनियोंको भिक्षु—फकीर कह रही है। जब कि वह सरासर प्रेमकी मूर्ति बने हुए हैं फिर क्यों उनको भिखारी कहा जाता है तथा जो लोभके भारी तौक गलेमें डाले दुनियाके जेलमें कैद हैं वह कैसे आजाद कहलाते हैं।

जिस पवित्र हृदय-क्षेत्रमें प्रेमयज्ञ किया जाता है वहां माशूकके सिवा सब कुछ जलकर खाक हो जाता है और दुईका नाम नहीं रहता। 'नहीं' इस शब्दकी तलवार जब माशूकके गलेपर चलायी तो सब फना हो गये एक वही बच गया (१)।

---

(१) उपनिषदोंमें भी स्थान २ पर आता है कि—नेति नेति–'नहीं' यह

जिस खुशकिस्मतने उस नाज़ुक हाथसे प्रेमामृत-पूर्ण प्याला पिया वह कुर्बान होनेको तैयार हो गया। क्यों न हो, प्यारी जानके प्यारे हाथका दिया प्याला ठहरा, कोई मामूली बात थोड़े है। निश्चय जान! जो प्यारे चेहरेका आशिक़ नहीं वह जिस्म तो रखता है पर जान-दिल नहीं रखता। ऐसे मुर्दा दिलसे दोस्ती करना प्रेमके गलेपर छुरी चलाना है।

कहते हैं जब लैलीसे मजनूं दूर हो गया, दो दिलोंमें कई मीलका खेत आ गया तो मजनूं इसको बरदाश्त न कर सका और मारे विरह-वियोगके जिगरको जलाने लगा। आखिरकार कबतक तन्दुरुस्त रह सकता, कुछ ही दिनोंमें सख्त बीमार हो गया। वैद्य लोग आये और कहने लगे कि इसका एकमात्र इलाज यह है कि फसद निकाला जावे। मजनूंने सुना तो कहने लगा कि मुझे खून निकलवानेसे तो भय नहीं पर डरता हूं कि कहीं मेरे शरीरपर अस्त्र रखनेसे प्यारी लैलीको हानि न पहुंचे क्योंकि लैली मेरे अङ्ग-प्रत्यङ्गमें ऐसे घुसी हुई है जैसे दर्पणमें पारा। सच है, जहां दो जिस्मोंमें एक दिल होता है वहां यही हालत होती है।

शब्द बड़ी शक्ति रखता है और सबसे उस सत्ताको आनन् फानन् जुदा कर देता है। माशूक़के सिवा जो किसीको भी पसन्द नहीं करता वही सच्चा आशिक़ है। चाहिये कि जो आशिक़के सामने आवे उसको घृणासे देखकर 'न' ऐसा कर दे, हां, उसी समय निकले जब माशूक़ दिखायी दे।

इश्कका रास्ता आसमानपरसे होकर जाता है इसीलिये डरनेवाले इस तरफ भूलकर भी नहीं आते (१)।

मुरदेसे क्या प्रेम करना है, प्रेम तो जीते जागतेसे करना चाहिये ताकि कुछ नतीजा भी निकले।

यह आत्मासे शून्य संसार अचेतन, मुरदा ही है इसलिये जो दिन रात इसके भोगोंपर टूट टूटकर गिरा करते हैं उनको कुत्ता ही समझना चाहिये। मुरदारपर मँडलाना, लोलुप हुए फिरना गीधोंका ही काम है।

ऐ आत्मा! तू तो बहिश्तका जानवर है फिर क्यों नरक-मय संसारके गन्दे भोग-विलासोंमें मस्त हो रहा है? तुझको तो चाहिये था कि किसी स्वर्गकी परीसे सम्बन्ध जोड़ता पर तू तो सचमुच मुरदापसन्द है। बस, अब परमात्माका आशिक हो जा।

यह शरीर एक अतिथि-आश्रम है। आत्मा अतिथि होकर इसमें निवास कर रहा है। इसलिये इस शरीरको प्यारे अतिथि—परम प्यारे प्रभु—की सेवामें लगा देना चाहिये (१)। प्यारेके

(१) क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति—उपनिषत्। तेज़ छुरेकी पैनी धारके समान यह मार्ग कहा गया है। इसपर चलना आसान नहीं है। हां, जो कवि प्रेमकी महिमा जानता हो वही इस तरफ़ क़दम उठा सकता है और किसी कायरका सामर्थ्य नहीं है।

(१) अतिथिं वो जनानाम्, घृतैर्बोधयतातिथिम्—ऋग्वेद। उस प्यारे का जो तुम सब मर्त्यलोकवासियोंका अतिथि है घृत आदि प्यारी वस्तुओंसे सत्कार करो। ब्रह्म अतिथिका सत्कार यही है कि घृतसमान शुभ्र और जलनेवाले दिलको उसकी राहमें बिछा दिया जावे।

वास्ते तन फिदा करना—प्यारेको सिर-आंखोंपर बिठाना,—बुद्धिमानों प्रेमकी कद्र करनेवालोंका काम है।

ऐ हीरे! आत्मा, तू क्यों मुट्ठीभर खाक—पञ्चभौतिक शरीर—में खुश हुए बैठा है? तुझको चाहिये कि उसी भूमिमें जाकर आराम कर जहांसे तू जाहिर हुआ है अर्थात् ब्रह्मलोकमें जा बस। यदि अपने शरीरकी खाकको बेचना चाहे तो उसका बढ़िया गाहक ईश्वर ही है। वह जब मोल लेगा तो बदलेमें क्षमा, स्वर्ग अथवा मुक्तिकी नकदी पेश करेगा।

तेरी दर्दभरी आहको मोल लेकर बदलेमें सैकड़ों तरहके सत्कार और आनन्द देता है।

दुनियाके उतार-चढ़ावमें ठीक २ सौदा खरीदना मुश्किल है। इसलिये इस बाजारमें भाव करनेसे पहले महात्माजनोंकी, जो कि बड़े भारी अनुभवी व्यापारी हैं, सम्मति ले ले।

नूरको ढूंढ़ने गया तो मुझे नूरुल-नूर—प्रकाशका भी प्रकाश मिला और हूरकी तलाशमें निकला तो मुझे महा सुन्दर हूरसे भी हूर-परियोंकी भी परी—मिली।

जब प्रभुने इस भूमिपर आबेइश्क़—प्रेम-रस छिड़का तो सब मुरदे जिन्दा हो गये और इश्ककी स्तुति करने लग पड़े (१)।

(१) क एवान्यात् कः प्राण्यात् यदेष आकाशः आनन्दो न स्यात्-उपनि०। किसमें हरकत महसूस होती और कौन दम मार सकता—सांस ले सकता—अगर यह (प्रभु) आनन्द टपकानेवाला न होता। रसं ह्येवायं लब्ध्वा आनन्दी भवति—यह आत्मा जब अपने वतनका पानी पीता है तो मारे खुशीके उछल पड़ता है। ब्रह्मपुरीमें प्रेम-रसका ही पान किया जाता है।

इश्क यद्यपि पहले पहल तो रंज और बला है तथा रोना चिल्लाना है मगर बादमें अनन्त खुशीका देनेवाला है। जो घोर मिलापके इन्तजारमें अपने बदनको आंखोंके रास्ते आंसू बना २ कर बहाते हैं वही फिर समय आनेपर प्रसन्न-वदन हुए दिखायी देते है।

कामका छोड़ देना आलस्य है, आशिकोंको कर्मका त्याग करना ठीक नहीं। उनको तो दिन-रात ऐसे काम करते रहने चाहिये जिससे प्यारेके दीदार जल्दसे जल्द हासिल हों (१)।

न्याय और वेदान्तकी बड़ी २ पुस्तकें वहांतक पहुंचानेमें असमर्थ हैं। इनको यहींपर छोड़ो और ऐसा उपाय सोचो कि तुम उसकी यादमें फना हो जाओ। बस, इसीमें तुम्हारा कल्याण है। तुम्हारी यह तन्मयावस्था वहां ऐसा अङ्कुर पैदा करेगी कि वह सख्तदिल, मुश्किलसे रीझनेवाला तत्काल आकुल हो उठेगा और तुमको गले लग जानेका संकेत करेगा (२)।

---

(१) यज्ञ दान तपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेवतत्'''पावनानि मनीषिणाम्—गीता। यज्ञ, दान और तप यह ऐसे कर्म हैं जिन्हें कभी नहीं त्याग करना चाहिये क्योंकि दिलवालोंकी सफाई इन्हीं कर्मोंसे होती है। प्रेम-अग्निको हृदय-वेदीमें स्थिर करना यज्ञ है, प्यारेकी यादमें आंसू बहाना सर्वोत्कृष्ट दान है और भोले चेहरेके विरह-वियोगमें जिगरको तपाते-सुखाते रहना अर्थात् उसके ग़ममें घुलते जाना परम पवित्र तप है। कौन दिलवाला होगा जो इन कर्मोंका त्याग करेगा!

(२) नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन, यमेवष

संसारका त्याग बेशक रंज देनेवाला है पर परमप्यारे प्रभुसे जुदा होना तो बड़ेसे बड़े रंजका देनेवाला है।

इश्कके मारे जिसका जामा चाक हो गया है अर्थात् जिसने प्रेमके मारे कपड़े फाड़ डाले हैं और इतना व्याकुल हो उठा है कि दिल और जिगरको भी जिस्मसे बाहर निकालना चाहता है ऐसे प्रेमी सज्जनके पास सिवा माशूकके और कोई नहीं जा सकता। यदि चला भी जावे तो सही सलामत वापस नहीं आ सकता क्योंकि उसके पास एक ऐसी आग है कि जिसमें न सिर्फ खुद ही जल रहा है बल्कि औरोंको भी जलाना चाहता है। इश्क़के घोड़ेपर सवार होकर ज़मीनकी ख़ाक भी आसमान-की सैर करती है, इश्क़का इशारा पाकर ही पर्वत नाचने लग जाते हैं।

ऐ मेरे इश्क, तू खुश रह क्योंकि मुझको तुझसे आराम मिलता है। तू ही मेरा सौदा, दिन-रातका काम है। ऐ मेरी हर बीमारीके इलाज! तू खुश रह, मुझपर कृपा-दृष्टि बनाये रख, तू ही मेरा वैद्य है, बीमारियोंसे—प्राकृतिक संस्कारोंसे छुटकारा दिलानेवाला है। ऐ मेरे नंगो-नामूसकी दवाई! तू मुझपर प्रेमकी नजर डाल ताकि मैं तुझको दिल तक पहुंचाऊं। ऐ

वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा वृणुते तनूं स्वाम्--उपनिषत्। पठन-पाठन और बालकी खाल उतारनेवाली दलीलोंसे यह आत्मा नहीं पाई जा सकती। जिस पर उसका नज़र जम जावे बस, वही उसका प्यारा हो जाता है और महा सुन्दर कायसे अरमान निकालनेका पुरस्कार पाता है।

मेरे इश्क! तू मेरे लिये जालीनूस और अफलातून है। मेरी तरफ आ और तन्दुरुस्त बना।

प्यारेकी याद

सब काष्ठ और पत्थर प्यारेकी यादमें माला फेर रहे हैं। यादमें इतने मस्त हो रहे हैं कि काठ और पत्थर हो गये हैं (१)। यह तो इन जड़ वस्तुओंकी हालत है पर आदमीको देखो कि पत्थरसे गिर गया है और प्यारेको घड़ीभरके लिये भी याद नहीं करता। लोग अपने २ फिरकों-सम्प्रदायोंमें फंसकर असली वस्तुकी तरफसे मुख मोड़ बैठे हैं, कोई सुन्नी है तो कोई शीआ है, इसी परस्परके झगड़ेमें खुद पिसे जा रहे हैं और दूसरोंको पीस रहे हैं। जैसे इनकी शकलमें अन्तर है ऐसे ही इनकी अक्लमें फरक है।

जो प्यारे प्रीतमकी यादमें लीन-बेसुध हो गया उसीको प्रेमी समझना चाहिये फिर चाहे वह सफेद बालोंवाला वृद्ध हो या काले बालोंवाला नौजवान।

---

(१) यस्येमे हिमवन्तो महित्वा०—ऋग्वेद। यह बड़े २ ऊंचे सफ़ेद सिरवाले हिमालयके बूढ़े बच्चे—पर्वत शिखर किसका स्तुतिमें मक्खन—बरफ़—बिखेर रहे हैं, यह श्वेत चादर ओढ़नेवाले तपस्वी किसकी यादमें एकान्त सेवन करते और नदी नालोंके आंसू बहा रहे हैं, वृहत्काय समुद्र किस प्यारेको ढूंढ़ते २ इतनी गहराईमें चला गया है और किसके वियोगमें मोर क्रोधके बां देता हुआ मर्यादाका उल्लङ्घन करना चाहता है! वह तुम्हारा प्यारा है।

याद कर, उस प्यारेकी प्यारी सूरतको याद कर और खूनको आंसू बना २ कर फेंकता जा। इतना याद रख कि सब्रको हाथसे नहीं जाने देना—निराश नहीं हो जाना क्योंकि आशाकी मजबूत रस्सी ही एक ऐसी चीज है कि जिसने सारे संसारको आशा दिला रखी है।

प्यारेसे प्यार करना एक यज्ञ है और यज्ञमें कुर्बानी करनी चाहिये। वह यज्ञ कैसा, जिसमें कुर्बानी न की जावे !

जब याद आवे अपने मनको प्यारेके दरबारमें कुर्बान करनेके लिये ले जाना चाहिये। सोचो तो यही मन था जो भटकता फिरता था और प्यारेसे विमुख बना रहता था, सदा अपने ऊपर ही मस्त करवानेकी चेष्टा किया करता था। इसलिये इससे अधिक और कौन होगा जो अपराधी कहला सके और दण्ड भोग सके।

जब प्यारेकी याद हमें बिस्मिल किये देती है तो इस मुजरिमको हलाल किये बिना कैसे छोड़ सकती है? उसका सुन्दर मुखड़ा न केवल हमें ही फांसे है बल्कि दिल जैसा चालाक भी उसके दाममें फंसे बिना नहीं रह सकता।

ज्यों ज्यों याद आती है दिलका शीशा चूर २ हुआ जाता है। इस अवस्थामें अपने सब कर्म याद आ जाते हैं। विचार आता है कि उसने हमपर कैसी मिहरबानियां कीं और हमने उसको किस कृतघ्नताके साथ भुलाया।

ज्यों २ उसकी कृपा और अपनी बेरुखीको सोचते हैं, मारे

भयसे विह्वल हो उठते हैं। इसी दीनतामें आंखोंसे नदी बह निकलती है और दिल टुकड़े २ हो जाता है। जब यही हालत बनी रहती है तो प्यारेकी कृपा दिखायी देने लगती है। प्यारेकी यादमें अपनेको भुला दो। जब मनुष्य अपनेको फना करता है तो उसकी इस क्रियासे वही बाकी बचता है जो प्यारा है, प्रभु है, प्रीतम है। यह वह पाठ है जिससे नफी और इस्बातका उदाहरण मिलता है। तीन—ईश्वर, जीव और मन हैं, इन तीनोंमें दो जीव और मनको नफी निकाल डालो अब जो बाकी रहा वह ईश्वर प्यारा ही है। अपनेको और मनको लीन कर दो, बस फिर वही वह बाकी है। यदि तुम प्यारेको कुछ भी प्यार करते हो तो उसकी यादमें अपनेको ऐसा लय कर दो कि तुम्हारा पता ही न रहे (१)।

हमारा—आत्माका नाश नहीं होता। वह याद-समाधिमें छिपा होता है जैसे उदय होते समय सूर्यमें किरणें (२)।

संसारके विषयोंपर बालकोंकी ही आंखें लगती हैं क्योंकि अभी उनकी अक्ल कच्ची है। बुद्धिमान् आदमी अपनी आंखें उसी

---

(१) स्वरूप शून्यमिव समाधिः-योग दर्शन। समाधिमें आत्माका अपना आप शून्यसा हो जाता है—वह नहीं जानता कि मैं क्या हूं, कैसा हूं और कहां हूं।

(२) यथा नद्यः स्यन्दमाना समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति० मुण्डक उपनिषत्। जैसे वेगवाली नदियां समुद्रमें मिली होती हैं वैसेही सब आत्मा परमात्मामें मिल जाते हैं। यथा शुद्धे शुद्ध मासिक्तं तादृगेवभवति तथात्मा भवति गौतम—छान्दोग्प उपनिषत्। शुद्ध जलमें जैसे जल मिले वैसे ही आत्मा परमात्मामें मिलता है।

ज्योतिर्मय आनन्दघन प्रेमास्पदसे लगाता है जिसकी आंखकी एक किरणसे सूर्य और चांद चमक रहे हैं (१)।

आत्मा वहां नेस्त-स्वरूप शून्य भी होता है और हस्त-सत्ता-सम्पन्न भी। स्वरूपशून्य तो ऐसे कि वहां उसका कुछ पता ही नहीं और सत्तासम्पन्न इसलिये कि है वह उस में, और कहीं गया नहीं। देखो, शहद दो मन ले लो और उसमें एक तोला सिरका डाल दो, प्रतीत यही होगा कि शहद ही है। क्योंकि दो मन शहदमें एक तोला सिरकेका क्या स्वाद आ सकता है? अच्छा, तो स्वाद लेकर यह सिद्ध हुआ कि यह मधु ही मधु है-इस अंशमें तो सिरका रूपसे शून्य है, पर यदि तोला जावे दो मन एक तोला सिद्ध होता है अतः इस रूपमें वह मौजूद है।

ऐ प्यारेकी याद करनेवाले! तू अपनेको जीते जी नेस्त कर दे ताकि मुझको सरमदका स्थान मिले (२)। एक बार नहीं यदि तुझे १०० बार भी मारकर पैदा किया जावे तो तू उसीसे प्यार कर (३)।

---

(१) पादोऽस्येहाभवत् पुनः-यजुर्वेद। उसकी एक ही नज़र प्रकृतिपर पड़ी है।

(२) सरमद एक बड़े उच्च श्रेणीके महात्मा हो गये हैं। यह औरङ्गज़ेबके राज्यकालमें फ़ारिस देशसे भारतमें आये थे। दाराशिकोह जो उपनिषदोंका प्रेमी हुआ है इन महात्माका ही शिष्य था और इनकी ही कृपासे भक्त बना था। ईश्वरकी कृपा हुई तो सहृदय प्रेमियोंकी सेवामें सरमदकी रुबाइयात—कविता पेश करेंगे (लेखक)।

(३) कौषीतकी ब्राह्मणमें गाथा है यदि ते प्रथमं आयुर्दयाम किंतेन-

बांसुरीका रुदन

सुन, वियोगसे दुःखी हुई बांसुरी क्या २ शिकायत कर रही है और कैसा दिल हिला देनेवाला रुदन सुना रही है।

बेदर्दीने जबसे मुझे आनन्दवनसे जुदा किया है, तबसे दुनियामें कुहराम मच गया है। कौन ऐसा है जिसने मेरा दिल-सोज़ रोना न सुना हो और उसे सुनकर खूनके आंसू न बहाये हों। जिसका हृदय वियोगके मारे पारा २-टुकड़े टुकड़े न हो गया हो वह मेरा अभिप्राय कैसे समझ सकता है?

यदि मेरी दरद भरी दास्तां सुननी है तो पहले अपने दिलको किसी प्यारेके वियोगमें टुकड़े २ कर दो फिर मेरे पास आवो तब मैं बताऊंगी कि मेरी क्या हालत है।

मैंने अच्छे-बुरे सभीके पास जाकर अपने रोने रोये पर किसीने भी ध्यान न दिया—सुना और सुनकर टाल दिया।

जिन्होंने सुना और ध्यान न दिया मैं उनको बहरा जानती हूं और जिन्होंने चिल्लाते देखा पर न जाना कि क्यों चिल्ला रही है मैंने समझ लिया कि वह अंधे हैं। मेरे रोनेके रहस्यको वह जान सकता है जो आत्माकी आवाजको सुनता है तथा

कुर्याः ब्रह्मचर्यमेव चरेयम्-द्वितीयं, तृतीयम्०। भरद्वाज ऋषिसे प्रजापतिने पूछा कि यदि तुझे इससे भी अच्छे शरीर बार बार दूं तो तू क्या अनुष्ठान करेगा? बोला कि, ब्रह्मचर्य—प्यारेको मिलनेका उद्योग।

पहचानता है। वास्तवमें मेरा रुदन आत्माके रुदनसे जुदा नहीं है (१)।

मैं प्रेमकी आगको हवाके समान तेज करती हूं (२)।

जिस निर्मोही—मुरदा—दिलमें यह आतिशेइश्क (प्रेमकी आग) ही नहीं उसका दुनियामें कोई वजूद ही नहीं।

मुझे रोते सुन कई एक विद्वान् कह दिया करते हैं कि बांसुरी एक भस्म कर देनेवाली आग है, यह ऐसी अजीब चीज है कि विषकी बेल भी है और विषका इलाज भी है (३), यह दिलकी तोड़नेवाली भी है और दिलवरसे मिलानेवाली भी (४)। बांसुरी

---

(१) बांसुरीको आत्मा मान लो और फिर ख़याल करो कि इस गूढ़ बातका क्या रहस्य है।

(२) हवा चलनेसे आग तेज़ हो जाती है इसी प्रकार बांसुरीका गाना सुननेसे प्रभु-भक्तिमें उत्तरोत्तर मन मग्न होने लगता है। गन्धर्ववेदमें लिखा है कि वादनान्नर्तनाद्गानाच्च निश्रेयसम—नाचने, गाने, बजानेसे प्रेमकी रग फड़क उठती है और वह मुक्ति—पथपर चल पड़ता है—देवर्षि नारद सदा वीणा बजाते तथा श्रीकृष्ण बांसुरीको अधरोंसे चिपटाये रहते थे। मुक्ति-मार्गका प्रदर्शक सामवेद गायनकलाका आदिभवन है।

(३) विषका प्रभाव शरीरपर शोषण-कर्मके समान है—बांसुरीका रोना भी प्यारेकी याद दिलाकर चिन्तासागरमें डाल देता है जिससे शरीर चिन्ता-वश हुआ सूखने और निर्बल होने लगता है। विषका इलाज़ ऐसे है कि जिसको प्रकृति-पंकमें पड़ प्रमाद सूझ रहा हो ऐसे प्रमादी पुरुषके प्रमादविष-दोषको हटा प्यारेकी यादका अमृत-जल छिड़कती है।

(४) संसारसे हटाती और ईश्वरसे मिलाती है।

ही जिन्दगीको सम्पूर्ण कर देती है और यही है जो मजनूंकासा आसक्त—बना देती है।

जो लोग कच्चे हैं वह पक्कोंका हाल क्या जानें (१)।

ऐ प्यारे! उठ और अपने बन्द तोड़—बन्धन ढीले कर, तू कबतक सोने-चांदीकी चमककी चकाचौंधमें रहेगा। (२)।

लोभ बहुत बुरी चीज है। लोभीकी आंख एक ऐसा सागर है जो कभी नहीं भरता। छोटासा मनुष्यका कूजा थोड़ेसे जलसे भर जाना चाहिये। यदि सीपी सब्र न करे तो क्या कभी मोतीसे भरी जा सकती है? नहीं, फिर क्यों नहीं मेरी तरह थोड़ीसी वायुपर सन्तुष्ट रहते (३)।

---

(१) आठ दस वर्षके बच्चे क्या जानें, कि नवोढ़ा सुन्दरी क्या आनन्द देती है, मूर्खोंको क्या पता कि ज्ञानसे क्या लाभ होता है? उसको वही जान सकता है जो उसके जैसा पक्का हो। नवयुवक पुरुष ही युवतीका प्रेमपात्र है और ज्ञानी महात्मा ही ज्ञानका रक्षक है। बांसुरीको भी वही जानता है जिसने उसकी तरह कलेजा छलनी करा लिया है। उपनिषत्में कहा है—न साम्परायः प्रतिभाति बालं—वित्तमोहेन मूढम्। उस हालत को सोने-चांदीसे खेलनेवाला नादान बालक—क्या जाने! अर्थात् नहीं जान सकता।

(२) उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत०—उपनिषत्। उठो, जागो और जानकार महात्माओंकी शरणमें जावो—यह मार्ग सो रहनेका नहीं है। जो सोया वह खोया।

(३) बांसुरीके छिद्रोंमें कोई जानकर वायु दे तो उससे प्रसन्न हो अपने सारे राज़—गाने-तराने—सुना देती है। यदि सन्तोष करो तो तुम्हें भी प्यारेके प्यारे अधरोंसे चिपटनेका सौभाग्य प्राप्त हो।

मैं जब प्यारेके हाथोंमें अपने आपको सुपुर्द कर देती हूं तो वह प्रेममें मग्न हो मेरे मुंहसे मुंह लगाता है और कुछ प्रेम-भरी गरम गरम सांस मेरे कानोंपर छोड़ता है। गोया वह आप बीती कहता है और मुझसे कहलानेकी चेष्टा करता है। बस, मैं उसके हृदयकी बात जान जाती हूं और अपनी व्यथा साथ मिलाकर जोर-जोरसे लोगोंको सुनाती हूं (१)।

जो जिसकी जबान जानता है वही उसके पास रहना, मिलना और बैठना पसन्द करता है, दूसरेको क्या! (२)

जब बुलबुलोंका प्यारा दिलबर—'फूल'—बागसे चला गया तो क्या वह चुप पड़ी रहेंगी? नहीं; वह वियोगमें विह्वल हो उठेंगी। यदि ख़िज़ा आवे तो उससे दिलका भेद न देंगी। ख़िज़ा-से न बोलकर इधर-उधर दौड़ती हैं मानो फूलकी तलाशमें मजनू हो रही हैं (३)।

---

(१) मा कर्मफल हेतुर्भूः—गीता। तू ऐसा न हो कि तुझको ज़बरदस्ती कर्मका फल भोगना पड़े। निष्काम कर्म करनेसे ही यह हो सकता है। जो लोग निष्काम कर्म करते हुए अपनेको ईश्वरके सुपुर्द कर देते हैं वही उसके रहस्योंको जान सकते हैं।

(२) कुनद हमजिन्स बाहम जिन्स परवाज़, कबूतर बा कबूतर बाज़ बा बाज़। हरएक अपने समानवालोंके संग ही उड़ता ही रहता है—कबूतर कबूतरोंके साथ और बाज़ बाज़ोंके साथ।

(३) ज्ञानी जब समाधिमें परमात्माकी व्यापकता देखता है तो विह्वल हो इधर-उधर तलाश करनेके लिये ज़र्रे २ की पड़ताल करता है।

प्रेमपात्र तो सदा जीते रहनेवाला है और प्रेम करनेवाला मृत्युका अधिकारी है क्योंकि उसके जीवनका पर्दा जबतक न हटे प्यारे चेहरेका दिखलायी देना असम्भव है। प्रेमीका तो एक मात्र प्रेम ही सहायक है? सिवा प्रेमके जिसके कि वह पीछे फिर रहा है प्रेमी बेचारेका और कौन है? सच है, इस बेपरोबाल गरीब पक्षीका सर्वस्व यही है। प्रेम यह चाहता है कि दर्पण देखकर ही सन्तुष्ट न हो जाओ बल्कि हृदयको साफ करो और वहांपर देखो क्योंकि जिस दर्पणमें 'जान' के (१ दर्शन नहीं वह गन्द है जो विषयोंके पत्तोंसे ढका हुआ है।

जितना दर्पण निर्मल—जङ्ग आदिसे रहित होगा उतना ही प्यारेके दीदार जल्दी और सहीह दिखला सकेगा। बस, तुझको चाहिये कि प्यारी मनमोहिनी मूरत देखनेके लिये अपने दिल-दर्पणको साफ कर (२)।

---

(१) जानके बिना शरीर नहीं ठहर सकता और दिलके बिना आत्मा और कहीं नहीं बैठ सकती। इसी भावको उपनिषत्‌ने कहा है कि अंगुष्ठमात्रः पुरुषः—आत्मा अंगूठे बराबर जगह चाहती है, पर यह जगह दिल ही है।

दिलका हुजरा साफ़ कर जानाके आनेके किये
ध्यान ग़ैरोंका हटा हस्ती मिटानेके लिये।

(२) नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो चानमाहित०—उपनिषत्। जो दुराचार से बाज़ नहीं आया, जिसने चञ्चलता नहीं छोड़ी वह उसको नहीं पा सकता।

परम पुरुषार्थ

ईश्वरने परिश्रमका फल मीठा बनाया है और आलस्यमें ऐसा कटु फल लगाया है कि जिसे विषसे बुरा समझना चाहिये। परिश्रमी लोग तरह २ के कष्ट उठाकर तथा व्रत और नियमोंका तपोमय महा कठिन अनुष्ठानकर स्वर्ग-सुखमय स्थानको पाते हैं और आलसी लोग अपने आलस्यमें पड़े २ वहीं नरक-कुण्ड खुदवा लेते हैं। हदीसमें ठीक कहा है कि स्वर्ग छिपोया गया है और नरक विषय वासनासे ढांपा गया है (१)।

पुरुषार्थका वृक्ष ऐसा है कि वह आगके जलसे सींचा जाकर फल देता है अर्थात् ज्यों २ कठिनतासे कार्य किया जावे त्यों २ अच्छा और शीघ्र फलदायक होता है। कुरानमें कहा है कि यदि तुझमें राईके दाने बराबर भी सच्चा पुरुषार्थ होगा तो तुझे अमृत-जलमें स्नान कराया जावेगा।

उसका दिल देखो जो दिन-रात पुरुषार्थ कर रहा है और अपने प्रबल प्रयत्नसे सुखमय भूमिके नजदीक होता जा रहा है

---

(१) हिरण्यथेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्—यजुर्वेद। सत्यस्वरूप आनन्दकन्द भगवान्का चेहरा चम-चमाते हुए धातुओंसे ढंपा हुआ है। हम नाचीज़ इतनी शक्ति नहीं रखते कि उछलकर वहांतक पहुंच सकें। हे भगवन्, आप ही अपने चेहरेसे यह पर्दा उतारो और हमें उस स्वरूपके दर्शनका सौभाग्य प्रदान करो।

और उसको भी देखो जो आलसी हो विषय-कोचड़से निकलने-का यत्न नहीं करता।

तूने ईसाको छोड़ दिया और गधा पकड़ लिया (१)। यदि तू ईसाको पकड़ता तो तुझे ब्रह्म-विद्याके रहस्य ज्ञात हो जाते और तेरा बेड़ा पार हो जाता; पर तू तो गधेपर मस्त है। क्या तू नहीं जानता कि गधोंका संग विद्वानोंको भी गधा बना देता है? और तू जो पहलेसे ही गधा है गधेसे भी बदतर हो जायगा! उठ और गधेको छोड़कर ईसाको पकड़। यदि तुझे दया ही करना है तो गधेपर क्यों करता है, ईसापर कर! तू मनपर दया न कर बल्कि बुद्धिपर कर, क्योंकि मनपर की गयी दया उद्दण्डता पैदा करती है और बुद्धिपर की गयी ज्ञानकी गंगा बहाती है (२)।

अगर तू सुखका भाण्डार चाहता है तो अपने सिरपर रंज, कष्ट, पुरुषार्थका भारी पत्थर उठा क्योंकि बिना रंज उठाये खजाना नहीं हाथ आता (३)।

---

(१) ज्ञानका उपदेश दे विषय-पंकसे निकालनेवाला और परमप्रभुका प्यार करनेवाला महात्मा मार्ग-दर्शक गुरु ही ईसाका अर्थ है और ज्ञान-शून्य, मैला खानेवाला, और जो पास आये उसीपर दुलत्ती झाड़नेवाला दुश्चरित्र ही गधा कहा गया है; सो तुम महात्माको छोड़ दुरात्माको गुरु मत बनावो।

(२) बुद्धि ही ईसा है। वह जिधर जाती है,सदुपदेशकी गंगा बहाती है और मन ही गधा है, जो इसको आगे करता है, दुलत्तियां ही खाता है।

(३) दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्म शक्त्या—भाग्यको पांव-तले दबा लो और भरसक पुरुषार्थ करो।

मुस्तफ़ा—मुहम्मद कहते हैं कि—यदि मैं मनके विरुद्ध बोलूं तो पहलवानोंका जिगर खून होकर निकल जाये तथा उनका जीना कठिन हो जाये (१)।

ईश्वरने जब आदमको उपदेश दिया कि—करम्ना बनी आदमा ; यानी हमने मानव-सन्तानको तरह २ के पुरस्कारोंसे पुरस्कृत किया है (२)।

ऐ मनुष्य! जब तुझमें अक्ल भी है, हाथ-पैर भी हैं और दिलोजिगर भी हैं तो तू क्यों नहीं पुरुषार्थ करता और प्रभुके पास जानेका यत्न करता (३)?

ईश्वरके प्यारे इस मार्गका महत्व जानते हैं। संसारी तो

---

(१) मनको पापसे हटाना ऐसा है जैसे मस्त हाथीको वनमें चरनेसे पकड़ लेना। यह क्या कोई सरल काम है? नहीं, इसमें बड़ेसे बड़ योद्धा शक्ति खर्च करके भी नाकामयाब होते हैं और कई एक महाबली तो इस हाथीके पांव-तले रौंदे जाकर जीवन अन्त करा लेते हैं। गीतामें अर्जुन जैसे महारथी भी मनके सम्बन्धमें कह गये कि 'तस्याहं निग्रहं मन्ये वायो रिव सुदुष्करम्।' उसका वशमें करना ऐसा है जैसे प्रचण्ड वायुके वेगको रोकना।

(२) सहस्रं यस्य रातयः उत वा सन्ति भूयसि—सामवेद। जिस दानीने हज़ारों नहीं बल्कि उससे ज़ियादह दान किये हैं।

(३) योऽविदित्वा स्माल्लोकात्प्रैति सः कृपणः अथ विदित्वा सः ब्राह्मणः- छान्दोग्य उपनिषत्। जो उसको न पाकर यहांसे जाता है वह सब कुछ होनेपर भी कृपण है। जो जानकर यहांसे उठता है वह प्रभुका प्यारा होता है।

इससे दूर रहते हैं। प्रेमियोंने जब इस मार्गपर कदम रक्खा तो गाढ़ अन्धकार जानकर 'तप' का दीपक अपने हाथमें ले लिया (१)। यदि वह लोग जो तपश्चर्य्यामें आयु व्यतीत करते रहे हैं तपमें आनन्दका अनुभव न करते होते तो क्योंकर इतने चिरकालतक जंगलोंकी ख़ाक छानते।

निष्काम भावसे देना एकमात्र प्रभुका ही काम है (२) और बेगरज़ होकर करना सिवा प्यारेके प्यारेके और किसीका काम नहीं।

हज़रत मूसाने क्या ही अच्छा कहा है कि—यह संसार श्मशान-भूमि है (३)। तुझे चाहिये कि तू तपस्वी बनकर अपने तन-मनको ईश्वरकी प्राप्तिमें लगा दे।

---

(१) यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति—उप०। जो जिसको चाहते हुए ब्रह्मचर्य-व्रतका अनुष्ठान करते हैं (तपो ब्रह्म इति व्यजाना—तैत्तिरीय उप०) उसने तपको सबसे अच्छा साधन जाना।

(२) ईश्वर जो देता है तो किसी परिवर्त्तनके ख़्यालसे नहीं देता है। वह इस विचारसे नहीं दे रहा है कि मेरे दानको लेकर यह लोग मुझे भी कुछ देंगे। कहा है, आप्त कामस्य का स्पृहा—जिसको हर तरहके सुख प्राप्त हैं, उसकी किससे स्पृहा हो सकती है!

(३) श्मशानमें मुरदे—जिनमें आत्मा नहीं होती वही लोग रहते हैं इसी प्रकार संसारके भोग—विलासमें वही लोग मस्त रहते हैं जो आत्मिक शक्तियोंसे रहित होते हैं।

जब तू उधर जावे तो चुपचाप होकर रह (१) और जो कुछ उस मार्गके यात्री उपदेश दें, उसे ध्यानसे सुन। इस प्रकार कुछ कालतक जब सुनते सुनते परिपक्क मति हो जावे तो फिर आगेको चल। बच्चे पहले सुनते हैं और बादमें बोलना शुरू करते हैं।

अगर तू पेटको भरा रखे तो ईश्वरका प्रेम किसमें रखेगा? व्रत किया कर और फाका करके ईश्वरका प्रेम भरा कर। आत्मा-रूपी बच्चेको मायारूपी राक्षसी दूध मत पिला, बल्कि जा इसे किसी देवीको पवित्र गोदमें बिठा आ। क्या तू नहीं देखता कि तेरा मन ईश्वरकी तरफ नहीं चलता? यह और कुछ नहीं उसी दूधके पीनेका परिणाम है। अब भी तो तू कोशिश करके ब्रह्मविद्याका अमृत दुग्ध पिलाना आरम्भ कर, क्योंकि बहुत सम्भव है कि ईश्वर तेरे इस प्रयत्नसे प्रसन्न हो जावे और अपने दरबारमें स्थान दे देवे (२)।

अब तू जोरको छोड़ नम्रता इख्तयार कर—अपने बलका

---

(१) मौन धारण करनेसे बड़ा लाभ तो यह है कि उसकी वाक्शक्ति एक-त्रित होती रहती तथा बलवती हो जाती है, दूसरा लाभ यह कि कुछ भी न कर बहुत कुछ सुनना मिलता है। चाहिये यही कि जिस विषयको न जानता हो उसमें चुप हो रहे।

(२) मायाराक्षसीका दूध-संसारके विषय-विकार ही हैं। इनमें आत्माको लगाना ही ईश्वरसे विमुख होना है। ब्रह्मविद्या ही एक ऐसी पवित्र देवी है कि जिसके ज्ञानरूप दूधमें ईश्वरतक पहुंचा देनेकी योग्यता है।

अभिमान मत कर, बल्कि ईश्वरके आगे अपनी नम्रता दिखाता हुआ रोया कर क्योंकि यदि तू ऐसा करेगा तो दयाके सागरमें एक तूफान पैदा होगा जिससे तुझको मोती और हीरे मिलेंगे (१)।

जब यह कर चुको तो तुझको उपासनाकी तरफ कदम उठाना चाहिये।

बन्दगीमें है अबदकी जिन्दगी
बन्दगी कर बन्दगी कर बन्दगी (२)।

जब ईश्वरकी दया होती है तभी मनुष्यका मन भक्तिमें लगता है। जो यह समझ ले कि चाहे मैं धनपति हूं अथवा निर्धन हूं, हर हालतमें हूं तो उसीकी प्रजा; वह उसपर फिर ऐसे जलता है जैसे दीपकपर परवाना।

---

(१) यो यदिच्छति तस्यतत्—उप०। वह एक ऐसा सागर है जहां जो जिस वस्तुकी इच्छा करे उसको वही वस्तु मिल सकती है। समुद्रमें मोती और रत्न होते हैं पर वह जड़ प्रकृतिके विकार होनेसे किस कामके! असली मोती तो ब्रह्म-सागरमें हैं जिनको पाकर भक्त निहाल हो जाता है। प्यारा जब अपनी प्यारी अंगुलीसे बुलाता है तो इसीको मोती जानना चाहिये, जब मनमोहिनी छवि दिखाता है तो यही रत्नकी प्राप्ति समझनी चाहिये, और जिस समय वह मारे प्रेमके छातीसे लगा लेता है तो इसकी हीरा मानना चाहिये। प्यारे! क्या यह रत्न और हीरे चाहते हो? हां, तो प्रयत्न करो।

(२) वन्दना या उपासना एक ऐसा फल पैदा करती है जिसे अमृतपद कहना चाहिये। विद्ययाऽमृतमश्नुते—यजुर्वेद। ज्ञानसे अमृतको पाते हैं। इस फलको वही पचा सकता है जो ज्ञानी हो।

ऐ दिल! तू उस जगह जाकर विश्राम ले जहां किसी प्रकारकी आपदा नहीं बल्कि सुख ही सुख है।

ऐ दिल! तूने अभीतक तो संसारके धन्दोंमें लगे रहकर तनको खूब प्रसन्न किया अब कुछ देरके लिये इस गरीब आत्मापर दया कर और इसे भी चैनसे कुछ खा पी लेने दे।

ईश्वरने कहा है कि संसारका हुनर बच्चोंके खेलसे भी बद्तर है (१)।

ऐ इन्सान, जब यह तेरा मन असन्मार्गपर चले तब तू इसका विरोध कर (२)।

जहां दरद होता है दवा वहीं पहुंचती है। इसी प्रकार जो कष्टातुर हो प्रभुको याद करता है, प्यारेका प्रेमभरा हाथ उसपर जा पहुंचता है, उसपर दयाकी दृष्टि हो जाती है। जहां मुश्किल है, वहां मुश्किलकुशा भी है, क्योंकि जहां निचाई या गड्ढा होता है पानी वहीं जा पहुंचता है। जबतक कि अपने

---

(१) अध्यात्म विद्या विद्यानाम्—गीता। विद्याओंमें सबसे अच्छी विद्या अध्यात्म विद्या है। इसके इलावा सब बच्चोंका खेल! भाई! रास्ता वही ठीक है, जिसपर चलनेसे यार मिले, वह क्या रास्ता जो भटकाता फिरे।

(२) विपक्षबाधने प्रतिपक्षभावनम्—योगदर्शन। जब मनपर पापका रङ्ग चढ़ने लगे तभी प्रतिपक्षकी भावना करो अर्थात् यह सोचो कि यह मेरा कर्म ऐसा ही है कि जिससे मैं तुल्योऽहंश्च वृत्तेन—थूक चाटनेवाले कुत्तेके समान हो रहा हूं।

प्रेममें बच्चेके समान न बन जाय, तबतक स्तनोंसे दूध जारी नहीं हो सकता।

अगर तू ईश्वरसे मिलना चाहता है तो देख, यह काला लोहा पहले बेनूर था लेकिन अब आगमें पड़कर बिल्कुल आग-सा चमकने लगता है (१)। अरे मूर्ख! तू इस प्रकारसे कबतक डरेगा और चमगादड़ बनेगा? भागना छोड़, भय मत कर क्योंकि वह तोबासे प्रसन्न हो जाता है (२)।

सच तो यह है कि जिसने उसके मिलनेकी कोशिश की वह अवश्य उसे पाके छोड़ा।

बच्चा जब बिगड़ता है, तो माता उसको मारकर दण्ड देती है लेकिन बच्चा मातासे मार खाकर माताकी कमर पकड़ लेता है। ऐसा हरगिज नहीं करता कि उससे मार खाकर किसी औरकी सहायता की इच्छा करे या उसके पास जावे। ऐ मनुष्य! जब तू बच्चोंकी यह दशा देखता है कि माताको

---

(१) इसी उदाहरणको वेदान्तकी अनेक पुस्तकोंमें दिया गया है। भाव इसका यह है कि यदि चाहनेवाला सच्ची प्रीति रखता है तो उसे लोहेके समान आगमें कूद पड़ना चाहिये। उपनिषत्‌में कहा है कि 'ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति' अर्थात् ब्रह्मका जाननेवाला ब्रह्म ही हो जाता है। इस रहस्यको अच्छी तरह जानना चाहो तो छान्दोग्य उपनिषत्‌का श्वेतकेतु संवाद पढ़ो।

(२) सच्चे दिलसे निवृत्त हो जानेको ही प्रायश्चित्त कहना चाहिये। सुबहका भूला यदि शामको घर आ जावे तो खुश न होगा। पर जो प्रतिज्ञा करके फिर भी पापाचरण नहीं छोड़ता वह दण्डनीय ही है।

छोड़ किसी अन्यका सहारा नहीं लेते तो तू बच्चोंसे भी गिर गया है जो ईश्वरको छोड़ किसी अन्यसे सहायता चाहता है। जरा सोच, कि क्या कोई ऐसा रक्षक या स्थान है जो ईश्वरके मुलाजिमको छिपा सके या सुरक्षित रख सके।

जब भी तेरा मन किसी विषयमें फंसना चाहे तो तुझको चाहिये कि उसी समय परमात्मासे प्रार्थना करो,—

हे त्रिभुवन जगदीश्वर! आप हमारे सब कर्मोंको भली भांति जानते हैं। आपके द्वारको छोड़कर हम किसका सहारा लें! कौन है जिससे जाकर अपने हार्दिक भाव कहें! तेरी कृपा हो तो हम सुपथ-गामी हो सकते हैं अन्यथा और कौन मार्ग है! प्रभो! दया करो और हमें पाप-गर्तमें गिरनेसे बचाओ (१)!

सत्संग

यदि तू सोच-समझ रखता है तो मूर्खोंकी संगतिसे भाग जा। क्या नहीं सुना कि हज़रत मसीह मूर्खोंकी सभासे उनका साथ छोड़ भाग पड़े थे? मूर्खोंकी संगति विपत्तिका बड़ा भाण्डार है और यह ऐसी बीमारी है कि जिसका इलाज ही नहीं हो सकता।

---

(१) अग्ने नय सुपथाराये अस्मान्०—यजुर्वेदके इस मन्त्रमें कही गयी प्रार्थना इससे अक्षरशः मिलती है।

(१) ब्रह्मापितं नरं न रञ्जयति—भर्तृशतक। ब्रह्म भी मूर्खको राहेरास्त-पर नहीं ला सकता। आदर्श मूर्खका वर्णन है।

जिसपर ईश्वरका वज्र गिरना होता है वह अक्ल खो बैठता है यानी मूर्ख हो जाता है (१)। इसीलिये जो ईश्वरके वज्रसे बचना चाहे उसे चाहिये कि इन मूर्खोंसे बचे, भागे और पृथक् रहे।

जिस दिलमें मूर्खताका रोग होता है उससे सत्यासत्यकी परीक्षा नहीं हो सकती। पर कानके रोगीके समान वह सबको मूर्ख, बुरा और पापी ही समझा करता है।

सबसे बड़ा मूर्ख वह है जो सब विद्याओंका पण्डित होकर भी आत्मज्ञानसे शून्य है अर्थात् यह नहीं जानता कि मैं कौन हूं और कहांसे आया हूं (२)।

यह मूर्ख और वस्तुओंकी कीमत तो जानते हैं पर इनको अपने तन, मन और आत्माकी क़ीमत मालूम नहीं।

जो विषयमें लतपत है और परमार्थसे बेख़बर है उसको मूर्ख ही जानना चाहिये।

जो इब्लीसकी तरह चाहे कितना ही बूढ़ा, जमाना-शनास हो यदि वह अभिमानी है तो वह निश्चय ही मूर्ख है।

मूर्ख यदि किसी गुणको भी ले लेगा तो वह अवगुण ही हो

---

(१) विनाशकाले विपरीतबुद्धि :—चाणक्य। जिसका नाश होनेको है उसकी बुद्धि विपरीत हो जाती है अर्थात् अक्ल मारी जाती है।

(२) इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति नो चेदवेदीर्महती विनष्टि०—केन उप०। इस मनुष्यतनको पाकर यदि आत्माको जान लिया तब तो ठीक, पर यदि न जाना तो बड़ा भारी टोटा सहना होगा,—८४ लाखका चक्र भ्रमना होगा।

जायगा (१)। अगर कोई दुश्चरित्र धर्मको जाने या उसका उपदेश करे तो वह धर्म भी पाप हो जाता है।

देख, यह जो तेरा कान पकड़कर दुखोंकी तरफ़ घसीटता है इसको शैतान समझ (२)।

जो लोग विद्वान् होते हैं उनको दीपक जानना चाहिये और सदा उनके प्रकाशरूपी उपदेशसे लाभ उठाना चाहिये।

देखो, दीपक प्रकाश करता है। उसमें अन्धकार कहीं नहीं। दीपकने अपना स्वार्थ छोड़ प्रकाशित अग्निको अपने सिरपर धर रखा है और जल २ कर उसमें लीन हुआ जाता है। विद्वान् भी ऐसा ही होता है।

कौआ विष्ठापर मुंह मारता और खुश होता है तथा मुर्ग खंगारको स्वादिष्ट समझ खाता है, पर यह मूर्ख हैं इसीलिये मलको अमृत समझकर टूट २ कर पड़ते हैं पर जो विद्वान होते

---

(१) आस्वाद्यतोया समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेया—नीति। मधुर जलवाली नदियां समुद्रकी संगतिसे पीने योग्य नहीं रहतीं। हज़रत मनसूरके 'अना-अहं ब्रह्मास्मि' जैसे विद्वद्गम्य महावाक्यको जब मिश्रके राजा फिरऊनने ले लिया तो कैसी बेदरदीसे पीटा गया, नरसिंहके हाथों हिरण्यकशिपुने कैसी मुंहकी खायी।

(२) अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः। काम एष क्रोध एष०—गीता। यह मन किसकी चालोंमें आकर पाप करने चल पड़ता है जब कि यह स्वयं न चाहता हुआ किसी बलवान्से लगाया जाता है। वही काम है और क्रोध है जो ज़बरदस्ती मनको पापमें लगाता है।

हैं वह इन चीज़ोंपर—अशुद्ध और अपवित्र मार्गोंपर—दिल नहीं लगाते।

वही विद्वान् है जो शैतानके झांसेमें नहीं आया और उसके जालमें नहीं फंसा।

लाल २ छलकती हुई शराब, हीरे जवाहरात और सुन्दर स्त्रीकी मन्द २ मुस्कुराहट, हंसजैसी चाल तथा नयनोंके तीर इत्यादि शैतानके जालके धागे हैं। जो इनसे बचता और ईश्वरको चाहता है उसी विद्वान्की संगति करनी चाहिये (१)।

वेदान्त

मायाके गड्ढेमें पड़े हुए लोग अपना—प्रतिबिम्ब देख देखकर हैरान होते हैं। वह समझते हैं कि प्रतिबिम्ब ही हम हैं पर उनको यह पता नहीं कि अस्ल अस्ल ही है और नक्ल नक्ल ही।

ऐ मनुष्य! तू कबतक प्रतिबिम्ब गिरता रहेगा और मूर्खता-वश अपने आपको कुछका कुछ समझता रहेगा। क्या तुझको पता नहीं कि प्रतिबिम्ब गिरनेवाला बहुत टोटेमें रहता है—शेर ख़रगोशके कहनेसे प्रतिबिम्ब गिरा था तो कूपमें मरा था। यह आत्मा भी शेर है इसको भी मनरूपी खरगोशके कहनेसे मायाके मिथ्या कूपमें नहीं गिरना चाहिये।

जो लोग अपने आपको देखनेके लिये अपनेसे भिन्न किसी

---

(१) इमा रमाः सरथाः सतूर्या नहीदृशा लम्भनीया मनुष्यैः०—कठ उप०। ये ख़ूबसूरत स्त्रियां जो मनुष्योंको नहीं मिल सकतीं तू इनको ले, पर ईश्वरको मत चाह। विशेष देखो उपनिषत्में।

दर्पणको पसन्द किया करते हैं वह सचमुच भूल करते हैं। इस-लिये कि उनके दर्पणासक्त होनेपर कष्ट पैदा होता है। जब दर्पण देखते हैं तभी प्रतीत होता है कि हम दुर्बल हो गया अथवा रोगी जान पड़ते हैं। जो दर्पण शरीरपर ऐसा भयंकर प्रभाव डालता है कि भले चंगेको बीमार और दुर्बल बना देता है ऐसे निर्बल-कर्त्ताको मित्र बनाकर सिवा दुःख और कष्टके और क्या हाथ आवेगा ?

दोस्तो! अस्लबीनी स्वीकार करो, सदा वास्तविक बातों-पर दृष्टि रखनी चाहिये और इस प्रतिविम्बकी दिखावटको जो तुम्हारी आदतमें घुस गयी है छोड़ देना चाहिये। सोचो, तो अक्स या प्रतिविम्ब देखनेके कारण अक्स ही अक्स दिखायी देते हैं और अस्लकी ओर दृष्टि नहीं होती। संसारमें जितनी सौन्दर्य-सम्पन्न वस्तुएं हैं, वह सबकी सब दर्पण हैं उनमें जो खूबसूरती दिखायी देती है वह उसकी है जो इन दर्पणोंको देख रहा था। नियम है कि दर्पणकी अपनी ख़ूबसूरती कुछ नहीं होती वह तो एक रिक्त वस्तु है जिसमें सिवा उसके और कुछ है ही नहीं। दर्पणोंके सामने कौन खड़ा है जिसका सुन्दर मुखड़ा इन तरह २ के दर्पणोंमें दिखायी देता हैं, तो निश्चय जानो कि सिवा परमे-श्वरके और कोई नहीं जो हर वस्तु—दर्पणका साक्षात्कार कर रहा हो (१)।

(१ साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च—उपनिषत्। वह प्रभु सब वस्तुमात्रका साक्षी है, चेतन है, ख़ालिस एक है और निर्गुण है।

जब सब वस्तुओंकी खूबसूरती वास्तवमें ईश्वरकी है तो उसको छोड़ इन प्राकृतिक दर्पणोंपर क्यों लट्टू हो रहे हो? तुम्हें चाहिये कि उसी एकको स्वीकार कर लो और अनेकतासे मुंह मोड़लो।

यह विभिन्न प्रकारकी रंग-विरंगी सृष्टि ही अनेकता है, और एक प्रभु ही अद्वैत निरञ्जन है।

दर्पणकी नक़ली खूबसूरतीपर मर मिटनेवालो! तुम कबतक उस असली चाओंसे गुमराह बने रहोगे और ईश्वरके बजाय शीशोंपर कबतक मस्त रहोगे? मेरे मित्र! अगर तू देखनेकी शक्ति रखता है तो तू जिधर भी देखे वही वह है—उसके सिवा और है ही कौन? (१)।

विद्वानोंका कथन है कि ईश्वरमें किसी क़िस्मका द्वैषभाव नहीं, वह केवल एक है। न तो उसके ऐसा कोई है और न उससे बढ़कर ही है और न उसके विरुद्ध कोई वस्तु ही है (२)।

अगर तू आदमीको देखे तो तुझ इसीमें सब कुछ दिखायी देवे पर चाहिये यह कि तू जो इसे देखे तो शैतानकी नज़रसे न देखे बल्कि देवताओंकी दृष्टिसे देखे। जब तू उस नज़रसे देखेगा

(१) नेह नानास्ति किञ्चन—उपनिषत्। यहांपर कई नहीं है क्योंकि वह सर्वथा एक है। नान्यात्किञ्चन मिषत् और—कोई नहीं जो उसके होते दम मार सके।

(२) इसी अद्वैत भावको हमारे वेदान्ती सज्जन सर्वभेद शून्यके नामसे कहा करते हैं अर्थात् इस्वर, सजातीय विजातीय और स्वगत भेदशून्य है।

तो यह आब और ख़ाक नहीं मालूम होगा, बल्कि सरासर ईश्वरीय प्रकाश।

आदमको जो देवताओंने नमस्कार किया तो प्रकृति-विकार समझकर नहीं किया अपितु यह जानकर कि इसमें जो आत्मा है सो ईश्वरकी प्रेरित हुई है इस कारण उन्होंने नमस्कार किया। वरन् कभी फ़रिश्ते सिर न झुकाते और न ईश्वर उनको ऐसा करनेकी आज्ञा ही देता।

जब तू ग़ैर-ईश्वरसे भिन्न वस्तुको मौजूद मानता है तो वह अद्वैत और एकताका माननेवाला कहा जा सकता है। या तो तुझे ईश्वर ही दिखायी देना चाहिये या फिर संसार—

हम ख़ुदाख़्वाही व हम दुनियाए दूं
ईं ख़्यालस्तो मुहालस्तो जुनूं

तू दुनियां भी चाहता है और ईश्वरको भी। तेरा यह इरादा सिवा पागलपनके और कुछ भी नहीं।

अरे! तू दिलकी आंखसे तो देख! है वह एक ही या नहीं!

अरे भाई! सूरतका बनानेवाला बेसूरतको पसन्द करता है, लेकिन तू ऐसा सूरतपसन्द है कि उसकी भी सूरत देखना चाहता है। ग़ौरसे देखे तो न तू है, न मैं हूं और न यह संसार ही है। यदि है तो वही एक सत्ता ईश्वरकी और कुछ नहीं।

जैसे एक सूर्यका अनेक वस्तुओंपर प्रकाश है ऐसे ही अनेक शरीरों और पदार्थोंपर ईश्वरका बिम्ब पड़ रहा है और एक अनेकसा दृष्टिगोचर हो रहा है।

तीर्थ

ज्ञानीके लिये ज्ञानपुञ्ज परमेश्वर तीर्थ है। बुद्धिमानके लिये बुद्धितत्व ही परम तीर्थ है। धनी पुरुषके लिये सोना और चांदी तथा रत्न और जवाहरात ही तीर्थस्थान हैं।

जो लोग सूरतपरस्त या चेहरेके इच्छुक हैं उनका यदि कोई तीर्थ है तो सुन्दरीका सुन्दर मुखड़ा।

दिल रखनेवालोंका दिल ही सर्वस्व है। मूर्खों, अविद्वानों और असभ्योंका तीर्थ-स्थान मूर्खता, अविद्या और असभ्यता है।

कर्म-निष्ठोंका चैनघर एकमात्र कर्मकाण्ड है। आलसी लोग यदि किसीको तीर्थ समझकर पूजते हैं तो वह है आलस्य।

पापियोंका इष्टदेव पापतीर्थ है।

धर्मात्मा सज्जनोंका यदि कोई तारणहार स्थान है तो वह धर्मभूमिका महातीर्थ है।

प्रेमियोंको प्रेममय बनानेवाला प्रेम ही पवित्र तीर्थ-स्थान है।

झूठोंका शैतान ही एकमात्र गुरु है और मक्कारोंकी विहार-स्थली यदि कोई है तो वह दुनिया।

योगीका बेड़ा पार करना यह योगका ही काम है।

पांचवां खण्ड

सुभाषित

हरकसे कौ दूर मांद अज अस्ले ख्वेश
बाज जोयद रोज़गारे वस्ले ख्वेश । १ ।

भावार्थ—हर कोई जब अपने मूलकारणसे जुदा हो जाता है तो उसे बार २ याद करके मिलना या प्राप्त करना चाहा करता है। दिन-रात उसकी यही इच्छा होती है कि वह किसी प्रकार वहां पहुंचे ।

आतिशे इश्कस्त कान्दर नै फुताद
जोशिशे इश्कस्त कान्दर मै फुताद । २ ।

भावार्थ—बांसुरी जो तरह २ के रुला देनेवाले राग सुनाती है, उसको यह प्रेमकी आगने ही सिखाया है ; शराब जो उछलती और नशेमें मस्त कराती है, यह भी इश्कका जोश है। इश्क न होता तो बांसुरी न कुछ गाती और न शराब कुछ रंगत दिखाती ।

महरमे ईं होश जुज़ बेहोश नेस्त
मर ज़ुबांरा मुश्तरी जुज़ गोश नेस्त । ३ ।

भावार्थ—परमार्थकी बातोंको वही पसन्द कर सकता है जो संसारके हालातसे विरक्त हो जावे। क्या नहीं देखते कि ज़ुबानके वाक्योंका खरीदार सिवा कानके और कोई नहीं है। जैसे ज़ुबानके निकले शब्दोंको कान ही सुन सकते हैं वैसे ही सिवा विरक्तके ईश्वरको कोई नहीं पा सकता।

कूज़ए चश्मे हरीसां पुर न शुद
ता सदफ़ कानेअ न शुद पुर दुर न शुद। ४।

भावार्थ—लोभियोंकी आंखोंका बरतन कभी नहीं भरता, सीप जब सन्तोष करती है तो मोतियोंसे भरी जाती है।

हर किरा जामा ज़ इश्के चाक शुद
ओ ज़ हिरसो ऐबो कुल्ली पाक शुद। ५।

भावार्थ—जिसने प्रेममें आकर अपने वस्त्रतक फाड़ डाले वही लोभ और पापसे बरी हो गया अर्थात् जिसने ईश्वरसे लौ लगायी उसके सब दोष दूर हो गये।

चूंकि गुल रफ्तो गुलिस्तां दर गुज़श्त
नश्नवी जीं पस ज़ बुलबुल सर गुज़श्त। ६।

भावार्थ—जब बागसे फूल चला गया तो बुलबुल अब किससे जी बहलावे और अपने हृदयके हाल सुनावे। जो बुलबुलका हाल सुनना चाहे उसे चाहिये कि स्वयं फूल बने और अपनी मनोहरतासे बुलबुलको खुश करे।

जुम्ला माशूकस्तो आशिक परदाई
जिन्दा माशूकस्तो आशिक मुरदाई। ७।

भावार्थ—यह सब कुछ माशूक—चाहने लायक परमात्मा ही है, और जो चाहनेवाला उपासक है वह परदा है। जबतक वह न हटेगा ब्रह्म न दिखायी देगा। ब्रह्म जिन्दा है और उपासक मुरदा है अर्थात् वह नित्य जीवित है और उपासक मरण धर्मा है।

आईना अत दानी चिरा ग़म्माज़ नेस्त
जां कि जङ्गार अज़ रुख़श मुम्ताज नेस्त। ८।

भावार्थ—हे मनुष्य, तू जानता है कि तेरा दर्पणरूपी मन क्यों साफ नहीं है! देख, इसलिये साफ नहीं कि उसके मुखपर जङ्गसा मैल लगा हुआ है। मनको शुद्ध करो और आत्माका साक्षात्कार करो।

नक़द हाले ख्वेश रा गर पै बुरेम
हम ज़ दुनियां हम जडकबा बर खुरेम। ९।

भावार्थ—अगर हम अपने वास्तविक स्वरूपको समझ लें तो संसार और परमार्थ दोनोंसे लाभ उठावें। आत्मज्ञानसे न केवल संसारके सुख प्राप्त होते हैं बल्कि परोक्षका आनन्द भी मिलता है यह सार है।

नूरे हक़ जाहिर बुवद अन्दर वली
नेक बीं बाशी अगर अहले दिली। १०।

भावार्थ—प्रत्येक ईश्वरभक्तमें एक विशेष प्रकारका प्रकाश होता है। उस प्रकाशको वही देख सकता है जो अहलेदिल या शुद्ध मनवाला हो। दूसरा नहीं देख सकता।

आं यके लब तिश्ना वां दीगर चूं आब
व आं यके मख़मूर वां दीगर शराब। ११।

भावार्थ—एक प्यासा है तो दूसरा शीतल जल है, एक शराबकी इच्छा रखनेवाला है तो दूसरा शराब है। जीवात्मा प्यासा है और मस्तीकी इच्छा रखता है और ब्रह्म शीतल जलके समान है तथा मस्ती देनेवाली शराब है।

बेअदब तनहा न ख़ुद रा दाश्त बद
बल्के आतिश दर हमा आफ़ाके ज़द। १२।

भावार्थ—असभ्य पुरुष अपने आपको ही बुरा नहीं बनाता, बल्कि अपनी ख़राबीकी आग सब जहानके बीच डालता है। पापी सबको पापी बना देता है।

सब्र तलख़ आमद व लेकिन आक़बत
मेवाए शीरीं दहद पुर मनफ़अत। १३।

भावार्थ—सन्तोष यद्यपि कड़वा वृक्ष है तथापि इसका फल बड़ा ही मीठा और लाभदायक है।

आशिकी पैदास्त अज ज़ारीये दिल
नेस्त बीमारी चू बीमारीए दिल। १४।

भावार्थ—दिलकी ज़ारीसे आशिक़ी पैदा हो जाती है और दिलकी बीमारी जैसी संसारमें कोई बीमारी नहीं है। प्रेमका रोग सदा दिलको ही होता है और दिल एक ऐसा स्थान है कि जहां आयी हुई बीमारी छिपती नहीं।

गरचे तफसीरे जुबां रोशन गर अस्त
लैक इश्के बे जुबां रोशन तर अस्त। १५।

भावार्थ—यद्यपि ज़ुबान व्याख्या करनेमें प्रसिद्ध है पर जब यह बेजुबां इश्कके सामने आती है तो उसको रोशन पाती है—ज़ुबां बोलकर अपनी महिमा प्रकाशित करती है और प्रेम बिना बोले अपनी करामात दिखाता है।

चूं कलम अन्दर नविश्तन मीशताफ्त
चूं ब इश्क आमद कलम बर खुद शिगाफ्त। १६।

भावार्थ—लेखनी लिखनेके लिये कैसे खुश होकर दौड़ती है पर जब चलते-चलते इश्कके विषयमें लिखा चाहती है तो इसका भी मारे प्रेमके दिल फट जाता है। गोया कलमपर इश्कका प्रभाव पड़ता है।

अक्ल दर शरहश चू खरदर गिल ब खुफ्त
शहर इश्को आशिकी हम इश्क गुफ्त। १७।

भावार्थ—स्वच्छसे स्वच्छ बुद्धि प्रेमकी व्याख्या करनेमें ऐसी है जैसे गधा कीचड़में लेट जावे। हां, प्रेम यदि चाहे तो स्वयं ही व्याख्या कर सकता है और तो सब विवश हैं। बुद्धिकी पहुंच नहीं कि प्रेमकी महिमा सुना सके उसको मनसे ही जाना जाता है।

दर तसव्वर जाते ओ रा गुञ्जे को
ता दर आयद दर तसव्वर मिस्ले ओ। १८।

भावार्थ—उसकी ब्रह्मकी ज़ातका ख्यालमें आना सम्भव नहीं है यही कारण है कि उसकी उपमा ढूंढ़नेसे नहीं मिलती।

गुफ्तम ऐ दूर उफ्तादह अज हबीब
हम चू बीमारे कि दूरस्त अज तबीब। १९।

भावार्थ—प्यारे यारसे दूर रहना ऐसा ही है जैसे बीमारका वैद्यसे दूर रहना। जो लोग ईश्वरको स्मरण नहीं करते वह ऐसे बीमार हैं कि वैद्य नहीं चाहते।

खुश्तर आं बाशद कि सिर्रे दिलबरां
गुफ्ता आयद दर हदीसे दीगरां। २०।

भावार्थ—अच्छा यह होता है कि प्यारोंका भेद दूसरोंके जिकरमें बयान किया जावे—देखनेमें तो किसी औरका जिकर हो रहा हो पर अन्दरसे मित्रोंके वर्णन हो रहे हों।

परदा बरदारो बिरहना गो कि मन
मी नखुस्पम बा सनम बापैरहन। २१।

भावार्थ—परदा उठा दो और खुल्लमखुल्ला कह दो कि मैं यारके साथ कुर्ता पहिनकर नहीं सोती। यारके साथ सोनेका मजा तो कपड़े उतार कर ही आता है—ब्रह्मका आनन्द भी तभी हासिल होता है जब कि कोई भी परदा—आवरण—न रहे।

आरजू मी खाहलेक अन्दाजह खाह
बर नताबद कोह ए यक बर्गे काह। २२।

भावार्थ—इच्छा तो बेशक कर, पर परिमित कर, क्योंकि एक घासका तिनका पहाड़को नहीं उठा सकता। ईश्वरको जान लेना महा कठिन है। आखिर यह परिमित छोटासा जीव व्यापक ब्रह्मको कैसे जान सकेगा ? जैसे तिनकेपर पहाड़का आना असम्भव है वैसे ही जीवका ब्रह्मको ज्ञानमें रख लेना भी असम्भव है।

खार दर पा शुद चुनीं दुश्वार याब
खारे दर दिल चूं बुवद दादह जवाब। २३।

भावार्थ—जब कांटा पांवमें लग जाता है तो बड़ी कठिनतासे निकलता है मगर अगर दिलमें प्रेमका कांटा लग जावे तो कैसे निकलेगा, उसका निकलना बड़ा ही कठिन है। दिलका कांटा बेहाल कर देता है इसमें रत्तीभर सन्देह नहीं।

चूंकि इस्रारत निहां दरदिल बुवद
आं मुरादत जूदतर हासिल शवद। २४।

भावार्थ—जब तेरे गृह-भेद— तेरे ही दिलमें छिपे रहेंगे तब तेरे दिलकी मुराद हासिल हो जायगी, बुद्धिमानका काम है कि अपने भेद किसीपर जाहिर न करे बल्कि सदा छिपाया करे।

दाना चूं अन्दर जमीं पिनहां शवद
सिर्रे ओ सरसब्जिये बुस्तां शवद। २५।

भावार्थ—बीज जब पृथ्वीके अन्दर छिपता है तो बागीचोंकी सरसब्जीका सबब होता है।

ज़र ख़िरद् रा वालाओ शैदा कुनद्
ख़ासा मुफ़्लिस राके ख़ुश रुस्वा कुनद् । २६ ।

भावार्थ—धन बुद्धिको फरेफ़्ता और शैदा करता है, दरिद्र तो बुरी तरह हरुवा करता है। धनको पाकर विषय-विकार और अनर्थ ही सूझते हैं और मूर्ख दरिद्री तो धनको पा बेलगाम हो जाता तथा बड़े कष्ट भोगता है।

इश्कहाये कज पैयेरंगे बुवद्
इश्क न बुवद् आक़बत नंगे बुवद् । २७ ।

भावार्थ—जो प्रेम सूरत और रंगपर होता है वह प्रेम कह-लानेका अधिकारी नहीं क्योंकि वह तो बादमें कुछ ही दिनमें नंग सिद्ध हो जायगा। शकल सूरतके बदलते ही प्रेम भी न रहेगा फिर क्या होगा! नंगम नंग, और क्या!

दुश्मने ताऊस आमद् पर्रे ओ
ऐ बसा शहरा बकुश्तह फ़र्रे ओ । २८ ।

भावार्थ—मोरके शत्रु उसके सुन्दर पर ही होते हैं इसी-लिये कई बादशाहोंने उनको मरवा डाला।

गरचे दीवार अफ़गनद् साया दराज़
बाज गरदद् सूए ओ आं साया बाज । २९ ।

भावार्थ—यद्यपि दीवार बड़ी लम्बी छाया डालती हैं तथापि वह छाया आखिरकार उसी दीवारकी तरफ चली जाती है। आदमी जैसा भी करे आखिर उसे स्वयं ही भुगतना पड़ेगा।

बहरे आं अस्त इम्तहांने नेको बद
ता बजोशद बरसर आरद जर जबद । ३० ।

भावार्थ—अच्छे और बुरेकी परीक्षा केवल इसलिये की जाती है कि बुरेमेंसे जितना सोना हो वह जोश खाकर ऊपर आ जावे। सोनेको इसलिये भट्टीमें पिघलाते हैं कि सोना पृथक् हो जावे और खोट जुदा हो जावे। परीक्षामें भद्रजनोंका सोनेके समान कुछ नहीं बिगड़ता; हां हानि है तो पापियोंकी ही कि खोटेके समान कान्तिशून्य हो जाते हैं।

आं गुले सुर्खस्त तू खूनश मखां
मस्ते अक़्लस्त ओ तू मजनूनश मखां । ३१।

भावार्थ—प्रेमी सज्जनका ख़ून मत करो, क्योंकि वह तो गुले सुर्ख—लाल फूल है और उसे पागल भी मत समझो क्योंकि वह तो अक़्लका मस्त है—ईश्वरपर लट्टू है।

वांकि ईं हर दो जयक अस्लेरवां
बर गुजर जीं हरदो रौ ता अस्ले आं ।३२।

भावार्थ—पाप और पुण्य यह दोनों एक ही कारणसे पैदा हुए हैं इसलिये इन दोनोंको त्याग उस एककी तरफ चलना चाहिये जिसने इनको पैदा किया है। ईश्वरने ही इनको पदा किया है अतः उसी तरफ चलना चाहिये।

दर हजारां लुक्मह यक खाकाश खुर्द
चूं दर आमद हिस्से जिन्दह पै बबुर्द । ३३।

भावार्थ—मुंहमें हजारों लुक्मोंके साथ अगर कोई एक तिनका भी चला जावे तो चैतन्य-शक्ति उसे फौरन निकाल बाहर कर देती है। ईश्वरभक्त भी संसारमें रहते कोई अवगुण अपने अन्दर घुसने नहीं देते, सदा चौकन्ने रहते हैं।

कर्द वीरां खानह बहरे गंजे जर
वज हमां गंजश कुनद मामूर तर। ३४।

भावार्थ—जिसने दबे हुए खजानेको हासिल करनेके लिये घरका कोना २ खुदवा डाला और वीरान कर दिया, उसको बादमें खजाना मिला और उसका बरबाद घर आबाद हो गया। हृदयस्थ परमात्माके दर्शनके लिये जो अपने शरीरको तपस्वी और संयमी बनाता है आखिर उसको ईश्वरकी प्राप्ति होती है और वह खुश हो जाता है।

कामिलां कज सिर्रे तहकीक आगहन्द
बे खुदो हैरानो मस्तो दालिह अन्द।३५।

भावार्थ—जो पूर्ण योगी परमात्माके भेदोंसे आगाह हो गये, सचमुच वह ऐसे हो गये कि जैसे मस्त, दीवाना और हैरान परेशान आदमी। ब्रह्मका स्वरूप और आनन्द इस प्रकारका है कि देखनेवाला आश्चर्यसे उंगली मुंहमें डाल देता है। ओहो! ऐसा स्वरूप!

चूं बसे इब्लीस आदम रूए हस्त
पस बहर दस्ते नबायद दाद दस्त॥ ३६॥

भावार्थ—चूंकि बहुतेरे मनुष्य कुपथगामी मनुष्योंके रूपमें पाये जाते हैं इसलिये बिना सोचे, बिना परीक्षा किये हरेकके हाथमें हाथ नहीं दे देना चाहिये। व्याध जानवरोंकी बोली बोलकर उनको धोखा देता और पकड़कर मार डालता है।

आं शराबे हक खितामश मुश्केनाब
बा दहरा खतमश बुवद गन्दो आजाब ॥ ३७ ॥

भावार्थ—एक शराबमेंआनन्दकारक वस्तु ऐसी है कि उसमें खालिस कस्तूरीकी सुगन्धि भरी हुई है, एक शराब ऐसी रद्दी है कि सूंघनेकी इच्छा ही नहीं होती क्योंकि उसमें गन्दगी भरी हुई है। पहला सद्गुरू ईश्वरका उपासक है दूसरा विषयासक्त और धूर्त है।

खश्मो शहवत मर्द रा अहवल कुनद
जस्तिकामत रूह रा मुब्दल कुनद ॥ ३८ ॥

भावार्थ—काम, क्रोध मनुष्यको खराब कर डालते हैं और आत्माकी निश्चलताको नष्टकर उसमें एक तरहकी चञ्चलता पैदा कर देते हैं।

गर हजारां दाम बाशद दर कदम
चूं तुई बामानह बाशद हे च गम ॥ ३९ ॥

भावार्थ—हे ईश्वर! अगर हमारे पैरोंके नीचे हजारों जाल बिछे हुए हों, पर जब तू हमारे साथ है तो हमें कुछ भी गम नहीं है। हर हालतमें ईश्वरपर भरोसा रखना चाहिये।

गुफ्त लेला रा खलीफा कां तुई ।४०।
कज तो मजनूं शुद परेशानो गवी।

भावार्थ—खलीफाने लेलासे पूछा कि क्या तू ही वह लेला है जिसपर मजनूं परेशान और फरेफ्ता हो गया है? तुझमें दूसरे खूबसूरतोंसे क्या विशेषता है, हमें तो तू कुछ खूबसूरत नहीं जचती। बोली—

गुफ्त खामुश चूं तू मजनूं नेस्ती,
"दीदाए मजनूं अगर बूदे तूरा
हरदो आलम बेखतर बूदे तूरा ॥ ४१ ॥

कहने लगी कि--यदि तू मजनूं नहीं है तो चुप रह। यदि तेरे पास मजनूंकी आंख होती तो जरूर मेरे सामने दोनों जहानोंको व्यर्थ ठहराता--एक तरफ मैं होती और दूसरी तरफ दोनों जहांके आराम और सुख होते। भक्तकी यही दशा होनी चाहिये, कि अप्रगट, इन्द्रिय-शून्य ब्रह्मको दोनों लोकोंके बदलेमें प्यार करे। जैसे लेलाकी कदर मजनूं ही जानता है इसी प्रकार ब्रह्मानन्दकी कदर योगी प्रेमी ही जानता है दूसरेको क्या खबर!

सायाए यजदां बुवद बन्दह खुदा
मुर्दा ईं आलम व जिन्दह खुदा ॥ ४२ ॥

भावार्थ—ईश्वरकी छाया वही है जो ईश्वरका प्यारा भक्त है। लोग उसे अपने कामका न समझकर मुरदा ख्याल करते

हैं, पर वास्तवमें वह ईश्वरके समीप तो जीवित हैं। छाया चाहे किसीकी हो मुरदा ही होती है। चेतन नहीं होती, साथ ही इसके कि जिसको छाया होती हैं, उसके हिलनेसे हिलती है और खड़े होनेसे खड़ी रहती है। भक्तकी भी यही हालत होनी चाहिये कि वह छायाकी तरह ब्रह्मका मारा हुआ समझे, ईश्वर-विश्वासी बने, ईश्वरके आश्रय ही अपना जीवन बनाये और ईश्वरकी इच्छामें इतना मस्त रहे कि सुख-दुःखकी परवाह न करे और किसी भी हालतमें इस कल्प-वृक्ष—महद्ब्रह्मकी छाया बननेसे न हटे।

दामने ओ गीर जूदतर बेगुमां
ता रिही अज आफते आखिरी जमां ॥ ४२ ॥

हे मनुष्य! तू बहुत शीघ्र उस प्रभुका पल्ला पकड़ ले ताकि अन्त समयकी विपत्तियोंसे तू बच सके।

प्रणवे नित्य युक्तस्य न भयं
विद्यते क्वचित्
ओं शम्

२८—राजनीति-विज्ञान

ले०—सुखसम्पति राय भण्डारी

आज भारत राजनीति-निपुण न होनेके कारण ही दासताकी यातनाओंको भोग रहा है। हिन्दीमें राजनीतिकी पुस्तकोंका अभाव जानकर ही यह पुस्तक निकाली गई है। मुनरोस्मिथ, रो, ब्लंशले, गार्नर आदि पाश्चात्य राजनीति विशारदोंके अमूल्य ग्रन्थोंके आधारपर यह पुस्तक लिखी गई है। राजनीति-शास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, इकरार-सिद्धान्त, शक्तिसिद्धान्त, राज्य और राष्ट्रकी व्याख्या आदि राजनीतिके गूढ़ रहस्योंका प्रतिपादन बड़ी खूबीसे इस ग्रन्थमें किया गया है। इस राजनीतिक युगमें राजनीति-प्रेमी प्रत्येक पाठकको इस पुस्तककी एक प्रति पास रखनी चाहिये। राष्ट्रीय स्कूलोंकी पाठ्य पुस्तकोंमें रखी जाने योग्य है। २१६ पृ० की पुस्तकका मूल्य १।=) है।

२९—आकृति-निदान

ले०-जर्मनीके प्रसिद्ध जल-चिकित्सक डा० लूईकूने

सम्पादक-रामदास गौड़ एम० ए०

आज संसार डाक्टर लूईकूनेके आविष्कारोंको आश्चर्यकी दृष्टिसे देखता है। उसी लूईकूनेकी अंग्रेजी पुस्तक 'The Science of Facial Expression' का यह अनुवाद है। इसमें लगभग ६० चित्र दिये गये हैं, जो बहुत सुन्दर आर्ट पेपरपर छपे हैं। उन चित्रोंके देखनेसे ही झट मालूम हो जाता है कि इस चित्रमें दिये हुए मनुष्यमें यह बीमारी है। सब बीमारियोंकी प्राकृतिक चिकित्सा-विधि भी बतलाई गयी है। यदि पुस्तक समझ कर पढ़ी जाय और चित्रोंका गौरसे अवलोकन किया जाय तो मनुष्य एक मामूली डाक्टरका अनुभव सहज ही प्राप्त कर सकता है। इतने चित्रोंके रहते भी पुस्तकका मूल्य केवल १॥) रखा गया है।

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी

-: का :-

सूचीपत्र

—*—

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी माला

-: के :-

स्थायी ग्राहकोंके लिये नियम—

१—प्रत्येक व्यक्ति ॥) आने प्रवेश शुल्क जमाकर इस मालाका स्थायी ग्राहक बन सकता है।

२—स्थायी ग्राहकोंको मालाकी प्रकाशित प्रत्येक पुस्तकें पौने मूल्यमें मिल सकेंगी।

३—स्थायी ग्राहक मालामें प्रकाशित प्रत्येक पुस्तककी एकसे अधिक प्रतियां पौने मूल्यमें मंगा सकेंगे।

४—पूर्व प्रकाशित पुस्तकोंको लेने न लेनेका पूर्ण अधिकार स्थायी ग्राहकोंका होगा, पर नव प्रकाशित पुस्तकोंमेंसे कमसे कम आधे मूल्यकी पुस्तकें ग्राहकोंको लेनी होंगी, अर्थात् एक वर्षमें जितनी पुस्तकें प्रकाशित होंगी, उनमेंसे आधे मूल्यकी पुस्तकें उन्हें नियमानुसार लेनी होंगी; किसी भी हालतमें ६) रु० से कम लागतकी पुस्तकें न हों।

५—पुस्तक प्रकाशित होते ही उसकी सूचना स्थायी ग्राहकोंके

पास भेज दी जाती है। स्वीकृति मिलनेपर पुस्तक बी० पी० द्वारा सेवामें भेजी जाती है। जो ग्राहक वी० पी० नहीं छुड़ावेंगे उनका नाम स्थायी ग्राहकोंकी श्रेणीसे काट दिया जायगा।

६—यदि उन्होंने वी० पी० न छुड़ानेका कोई यथेष्ट कारण बतलाया और वी० पी० खर्च (दोनों बारका) देना स्वीकार किया तो उनका नाम ग्राहकश्रेणीमें पुनः लिख लिया जायगा।

७—हिन्दी पुस्तक एजेन्सी मालाके स्थायी ग्राहकोंको मालाकी नव प्रकाशित पुस्तकोंके साथ अन्य प्रकाशकोंकी कमसे कम ६) रु० के लागतकी पुस्तकें भी पौने मूल्यमें दी जायंगी। पुस्तकोंकी नामावली नव प्रकाशित पुस्तककी सूचनाके साथ भेजी जाती है।

८—हमारा वर्ष विक्रमीय संवत्‌से आरम्भ होता है।

मालाकी विशेषतायें

१—सभी विषयोंपर सुयोग्य लेखकों द्वारा पुस्तकें लिखायी जाती हैं।

२—वर्तमान समयके उपयोगी विषयोंपर अधिक ध्यान दिया जाता है।

३—मौलिक पुस्तकें ही प्रकाशित करनेकी अधिक चेष्टा की जाती है।

४—पुस्तकोंको सुलभ और सर्वोपयोगी बनानेके लिये कमसे कम मूल्य रखनेका प्रयत्न किया जाता है।

५—गम्भीर और रुचिकर विषय ही मालाको सुशोभित करते हैं।

६—स्थायी साहित्यके प्रकाशनका ही उद्योग किया जाता है।

१—सप्तसरोज

लेखक—श्रीयुक्त प्रेमचन्दजी

प्रेमचन्दजी अपनी प्रतिभा, मानवभावोंकी अभिज्ञता, वर्णन-पटुता, समाजज्ञान, कल्पनाकौशल तथा भाषाप्रभुत्वके कारण हिन्दी संसारमें अद्वितीय लेखक माने गये हैं। यह कहानियां उन्हींकी प्रतिभाकी ज्योति हैं। इस "सप्तसरोज" में सात अति मनोहर उपदेशप्रद गल्पें हैं, जिनका भारतकी प्रायः सभी भाषाओं-में अनुवाद निकल चुका है। हिन्दी संसारने इसे कितना पसन्द किया इसका अनुमान केवल इसीसे होगा कि यह हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी प्रथमा परीक्षा तथा कई राष्ट्रीय पाठशालाओंके कोर्समें और सरकारी युनिवर्सिटियोंकी प्राइज लिस्टमें है। अर्थात् राजा और प्रजा दोनोंने इसका आदर किया है। थोड़े ही समयमें यह चौथा संस्करण आपकी भेंट है। मूल्य केवल ॥)

२—महात्मा शेखसादी

लेखक—श्रीयुक्त प्रेमचन्दजी

फारसी भाषामें बड़े प्रसिद्ध और शिक्षाप्रद गुलिस्तां और बोस्तांके लेखक महात्मा शेखसादीका बड़ा मनोरंजक और उपदेशप्रद जीवन चरित्र, अनूठा भ्रमण वृतान्त विख्यात गुलिस्तां और बोस्तांके उदाहरणों द्वारा आलोचना, चुनी हुई कहावतें, नीतिकथायें, ग़ज़लें, कसीदे इत्यादिका मनोरञ्जक संग्रह किया गया है। इसमें महात्मा शेखसादीका ३०० वर्षका पुराना चित्र भी दिया गया है जिससे पुस्तकके महत्वके साथ साथ इसकी सुन्दरता भी बढ़ गई है। दूसरा संस्करण मूल्य ॥)

३—विवेक वचनावली

लेखक—स्वामी विवेकानन्द

जगत्प्रसिद्ध स्वामी विवेकानन्दजीके बहुमूल्य विचारों और अद्भुत उपदेशोंका बड़ा मनोरंजक संग्रह। बड़ी सीधी साधी और सरल भाषामें, प्रत्येक बालक, स्त्री, वृद्धके पढ़ने तथा मनन करने योग्य। दूसरा संस्करण, साफ सुथरी छपाई और बढ़िया चिकने कागजके ४८ पृष्ठोंका मूल्य ।)

४—जमसेदजी नसरवानजी ताता

लेखक—स्वर्गीय पं० मन्नन द्विवेदी गजपुरी बी० ए०

संसारमें आजकल उसी राष्ट्र या व्यक्तिकी तूती बोल रही है जो उद्योग धन्धे और व्यापारमें बढ़ा चढ़ा है। इन्हीं नररत्नोंमें आज भारतका मुख उज्ज्वल करनेवाले श्रीमान् धनकुबेर ताता का नाम है। यह उन्हीं कर्मवीरकी जीवनी बड़ी प्रभावशाली और ओजस्वी भाषामें लिखी गयी है। इस पुस्तकको यू० पी० और बिहारके शिक्षाविभागने अपने पारितोषिक-वितरणमें रखा है। दूसरा संस्करण। सचित्र पुस्तकका मूल्य केवल।)

५—कर्मवीर गांधीके लेख और व्याख्यान

लेखक—गांधीभक्त

इस पुस्तकके सम्बन्धमें कुछ लिखना सूर्यको दीपक दिखाना है। बस, इतना ही समझ लीजिये कि एक वर्षके भीतर पहला संस्करण समाप्त हो गया। दूसरा संस्करण बड़ी सजधजके साथ आपके सामने है। मूल्य १।)

६—सेवासदन

लेखक—श्रीयुक्त प्रेमचन्दजी

हिन्दी-संसारका सबसे बड़ा गौरवशाली सामाजिक उपन्यास, जिसका दूसरा संस्करण प्रायः खतम होनेमें आया है। वह हिन्दीका सर्वोत्तम, सुप्रसिद्ध और मौलिक उपन्यास है। इसकी खूबियोंपर बड़ी आलोचना और प्रत्यालोचना हुई है। पतित सुधारका बड़ा अनोखा मन्त्र, हिन्दू समाजकी कुरीतियां जैसे अनमेल विवाह, त्योहारोंपर वेश्यानृत्य और उसका कुपरिणाम पश्चिमीय ढङ्गपर स्त्रीशिक्षाका कुफल, पतित आत्माओंके प्रति घृणाका भाव इत्यादि विषयोंपर लेखकने अपनी प्रतिभाकी वह छटा फैलायी है कि पढ़नेसे ही आनन्द प्राप्त हो सकता है। दूसरा संस्करण। सादी जिल्द मूल्य २॥) एण्टिक कागज मनोहर स्वदेशी कपड़ेकी जिल्दका ३)

७—संस्कृत कवियोंकी अनोखी सूझ

लेखक—पं० जनार्दन भट्ट एम० ए०

संस्कृतके विविध विषयोंके अनोखे भावपूर्ण उत्तमोत्तम श्लोकोंका हिन्दी भावार्थ सहित संग्रह। ऐसी खूबीसे लिखा गया है कि साधारण मनुष्य भी पढ़कर आनन्द उठा सकें। व्याख्यानदाताओं, रसिकों और विद्यार्थियोंके बड़े कामकी पुस्तक है। दूसरा संस्करण मूल्य ।≠)

८—लोकरहस्य

लेखक—उपन्यास-सम्राट् श्रीयुक्त बंकिमचन्द्र चटर्जी

यह 'हास्यरस'का अद्भुत ग्रन्थ है। इसमें वर्तमान धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक त्रुटियोंका बड़े मजेदार भाव और भाषामें चित्र खींचा गया है। पढ़िये और समझ समझकर हँसिये। दिलबहलावके साथ साथ आपको कई विषयोंपर ऐसी शिक्षा मिलेगी कि आप आश्चर्य्यमें पड़ जायंगे। अनुवाद भी हिन्दीके एक प्रसिद्ध और अनुभवी हास्यरसके लेखककी कलमका है। दूसरा संस्करण, बढ़िया एण्टिक कागजपर छपी पुस्तका मूल्य ॥≈)

९—खाद

लेखक—श्रीयुक्त मुख्तारसिंह वकील

भारत कृषिप्रधान देश है। कृषिके लिये खाद सबसे बड़ा आवश्यकीय पदार्थ है। बिना खादके पैदावारमें कोई उन्नति नहीं की जा सकती। यूरोपवाले खादके बदौलत ही अपने खेतोंमें दूनी चौगूनी पैदावार करते हैं। इसलिए इस पुस्तकमें खादोंके भेद तथा किन अन्नोंके लिये कौन सी खादकी आवश्यकता होती है इनका बड़ी उत्तमतासे वर्णन किया गया और चित्रों द्वारा भली प्रकार दिखलाया गया है! इस पुस्तकको प्रत्येक कृषक तथा कृषिप्रेमियोंको अवश्य रखना चाहिये। पहला संस्करण खतम हो चला है। दूसरा संस्करण शीघ्र ही निकलेगा। मूल्य सचित्र और सजिल्दका १)

१०—प्रेम-पूर्णिमा

लेखक—श्रीयुक्त प्रेमचन्दजी

प्रेमचन्दजीकी लेखनीके सम्बन्धमें अधिक लिखनेकी आवश्यकता नहीं है। जिन्होंने उनके "सप्तसरोज" और "सेवासदन" का रसास्वादन किया है उनके लिये तो कुछ लिखना व्यर्थ है। प्रत्येक गल्प अपने ढंगकी निराली है। जमींदारोंके अत्याचारका विचित्र दिग्दर्शन कराया गया है। भाषाकी सजीविता, भावकी उत्कृष्टता और विषयकी उच्चताका अनूठा संग्रह देखना हो तो इस ग्रन्थको अवश्य पढ़िये। इसमें श्रीयुत "प्रेमचन्द" जीकी १५ अनूठी गल्पोंका संग्रह है। बीच बीचमें चित्र भी दिये गये हैं। दूसरा संस्करण खादीकी सुन्दर जिल्दका मूल्य २)

११—आरोग्य साधन

लेखक—म० गांधी

बस, इसे महात्माजीका प्रसाद समझिये। यदि आप अपने शरीर और मनको प्राकृत रीतिके अनुसार रखकर जीवनको सुखमय बनाना चाहते हैं, यदि आप मनुष्य-शरीरको पाकर संसारमें आनन्दके साथ कुछ कीर्ति कमाना चाहते हैं तो महात्माजीके अनुभव किये हुए तरीकेसे रहकर अपने जीवनको सरल, सादा, स्वाभाविक बनाइये और रोगमुक्त होकर आनन्दसे जीवन लाभ कीजिये। जिन तरीकोंको महात्माजीने बतलाया है वही यहांका प्राचीन प्रचलित तरीका था जिसके मुताबिक काम न करनेसे हमारी दशा इतनी बिगड़ गई है। तीसरा संस्करण १३० पृष्ठका, दाम केवल ।~) मात्र।

१२—भारतकी साम्पत्तिक अवस्था

लेखक—श्रीयुत राधाकृष्ण झा एम०ए०

भारतकी आर्थिक अवस्थाका यदि आप ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, यदि आप यहांके वाणिज्य व्यापारके रहस्यका मार्मिक भेद जानना चाहते हैं, यदि कृषिकी दुर्व्यवस्था और मालगुजारी तथा अन्यान्य टैक्सोंकी भरमारका रहस्य जानना चाहते हैं, यदि आप यहांका उत्पन्न कच्चा माल और वह कितनी कितनी संख्यामें विलायतको ढोया चला जाता है, उसके बदलेमें हमें कौन कौनसा माल दिया जाता है, उन आने और जानेवाले मालोंपर किस नियमसे कर बैठाया जाता है, यहां प्रत्येक वर्ष कहीं न कहीं अकाल क्यों पड़ता है ? हम दिनपर दिन क्यों कौड़ी कौड़ीके मोहताज होते जाते हैं ? इत्यादि बातोंको जानना चाहते हैं तो आपका परम कर्त्तव्य है, कि इस पुस्तकको एक बार अवश्य पढ़ें। पहला संस्करण प्रायः खतम हो रहा है। यह पुस्तक साहित्य सम्मेलनकी परीक्षामें है। ६५० पृष्ठकी खादीकी सुन्दर जिल्दका मूल्य ३॥)

१३—भाव चित्रावली

चित्रकार—श्रीधीरेन्द्रनाथ गङ्गोपाध्याय

१००रङ्गीन और सादे चित्र। भावुकताका अनूठा दृश्य।

इस पुस्तकमें एकही सज्जनके १०० चित्र विविध भावोंके दिखलाये गये हैं। आप देखेंगे और आश्चर्य करेंगे और कहेंगे कि ऐं ! सब चित्रोंमें एक ही आदमी ! गङ्गोपाध्याय महाशयने अपनी इस कलासे समाज और देशकी बहुतसी कुरीतियोंपर बड़ा जबर्दस्त कटाक्ष किया है। चित्र देखनेसे मनोरञ्जनके साथ साथ आपको शिक्षा भी मिलेगी। सुन्दर खादीकी सुनहरी जिल्द ४)

१४—राम बादशाहके छः हुक्मनामे

स्वामी रामतीर्थजीके छः व्याख्यानोंका उन्हींकी जोरदार भाषामें मय उनके जीवनचरित्रके संग्रह किया गया है। स्वामीजीके ओजस्वी और शिक्षाप्रद भाषणोंके बारेमें क्या कहना है, जिसने अमरीका, जापान और यूरोपमें हलचल मचा दी थी। इन व्याख्यानोंको पढ़कर प्रत्येक भारतवासीको शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। उर्दूके शब्दोंका फुटनोटमें अर्थ भी दिया गया है। स्वामीजीकी भिन्न २ अवस्थाओंके ३ चित्र भी हैं। बढ़िया एण्टिक कागजपर छपी है। मूल्य खादीकी जिल्दका १।)

१५—मैं नीरोग हूं या रोगी

ले०—डाक्टर लुई कूने

यदि आप सचमुच स्वस्थ रहकर आनन्दसे जीवन बिताना, डाक्टरों, वैद्यों और हकीमोंके फन्देसे छुटकारा पाना, प्राकृतिक नियमानुसार रहकर सुख तथा शान्तिका उपभोग करना चाहते हैं तो इस पुस्तकको पढ़िये और लाभ उठाइये। मूल्य केवल ।)

१६—रामकी उपासना

ले०—रामदास गौड़ एम० ए०

स्वामी रामतीर्थसे कौन हिन्दू परिचित न होगा। उनके उपदेशोंका श्रवण और मनन लोग बड़ी ही श्रद्धाभक्तिसे करते हैं। प्रस्तुत पुस्तक उपासनाके विषयमें लिखी गई है। उपासनाकी आवश्यकता, उसके प्रकार, परब्रह्ममें मनको कैसे लीन करना, सच्ची उपासनाके बाधक और साधक, सच्चे उपासकोंके लक्षण आदि बातें बड़ी ही मार्मिक और सरल भाषामें लिखी गई हैं। ४८ पृष्ठका मूल्य ।)

१७—बच्चोंकी रक्षा

ले०—डाक्टर लुई कूने

डाकृर लुई कुने जर्मनीके प्रसिद्ध डाकृर हैं। आपने अपने अनुभवोंसे सब बीमारियोंको दूर करनेका प्राकृतिक उपाय निकाला है। आपकी जलचिकित्सा आजकल घर घरमें प्रचलित है। प्रस्तुत पुस्तक भी आपके ही अनुभवोंका फल है। इस पुस्तकमें डाक्टर साहबने यह दिखलाया है कि बच्चोंकी रक्षाकी उचित रीति क्या है और उसके अनुसार न चलनेसे हम अपनी सन्ततिको किस गर्तमें गिरा रहे हैं। पुस्तक बड़ी ही उपयोगी है। इसकी एक एक प्रति घर घरमें रहना चाहिये। विद्यालयोंकी पाठ्य पुस्तकोंमें रखने योग्य पुस्तक है। मूल्य केवल ।=)

१८—प्रेमाश्रम

लेखक—श्रीयुक्त प्रेमचन्दजी

जिन्होंने प्रेमचन्दजीकी लेखनीका रसास्वादन किया है उनके लिये पुस्तककी प्रशंसा व्यर्थ है। पुस्तक क्या है वर्तमान दशाका सच्चा चित्र है। विविध अवस्थाओं और भावोंको बड़ी खूबीसे संयुक्त किया गया है। किसानोंकी दुर्दशा, जमींदारोंके अत्याचार, पुलिसके कारनामे, वकीलों और डाक्टरोंका नैतिक पतन, धर्मके ढोंगमें सरलहृदया स्त्रियोंका फंस जाना, स्वार्थसिद्धिके कलुषित मार्ग, देशसेवियोंके कष्ट और उनके पवित्र चरित्र, सच्ची शिक्षाके लाभ, गृहस्थीके झंझट, साध्वी स्त्रियोंका चरित्र, सरकारी नौकरीका दुष्परिणाम आदि भावोंको लेखकने इस खूबीसे चित्रित किया है कि पढ़ते ही बनता है, एक बार शुरू करनेपर बिना पूरा किये छोड़नेको दिल नहीं चाहता। ६५० पृष्ठोंसे अधिक है। सुन्दर खादीकी जिल्दका मूल्य केवल ३॥)

१६—पंजाब हरण और दलीप सिंह

लेखक—पं० नन्दकुमार देव शर्म्मा

१६ वीं सदीके आरम्भमें सिक्ख साम्राज्य महाराज रणजीतसिंहके प्रतापसे समृद्धशाली हो गया था। उनके मरतेही आपसके फूट बैर, कुचक्र, भीतरी घातों, अंग्रेज़ोंके विश्वासघातसे उसका किस प्रकार पतन हुआ, जो अंग्रेज़ जाति सभ्यताकी हामी भरती है, मैत्रीकी डींग हांकती है, उसने अपने परम प्रिय मित्र महाराज रणजीतसिंहके परिवारके साथ किस घातक नीतिका व्यवहार किया इसका वास्तविक दिग्दर्शन इस पुस्तकसे होता है। इससे अंग्रेजोंके सच्चे पराक्रमका भी पूरा पता चलता है। जो अंग्रेज़ जाति आज गली गली ढिंढोरे पीट रही है कि "हमने भारतको तलवारके बल जीता है" उनके सारे पराक्रम चिलियानवालाके युद्धमें लुप्त हो गये थे और यदि सिक्खोंने मिलकर एक बार उसी प्रकार और हराया होता तो शायद ये लोग डेरा डण्डा लेकर कूंच ही कर गये होते। पुस्तक बड़ी खोजसे लिखी गई है। सुन्दर मोटे एण्टिक कागजपर सचित्र २५० पृष्ठोंका मूल्य २)

२०—भारतमें कृषि-सुधार

लेखक—पण्डित दयाशंकर दूबे एम० ए०

आप भारतीय अर्थशास्त्रके धुरन्धर विद्वान—लखनऊ विश्वविद्यालयके अर्थशास्त्रके प्रोफेसर हैं। आपने प्रस्तुत पुस्तकमें बड़ी खोजके साथ दिखलाया है कि भारतकी गरीबीका क्या कारण है? कृषिका अधःपतन क्यों हुआ? अन्य देशोंकी तुलनामें यहांकी पैदावारकी क्या अवस्था है? और उसमें किस तरह सुधार किया जा सकता है, सरकारका क्या कर्त्तव्य है और वह उसका किस तरह पालन कर रही है। कई चित्र भी दिये गये हैं। मू० १॥)

२१—देशभक्त मैजिनीके लेख

लेखक—पण्डित छविनाथ पाण्डेय बी० ए० एल० एल० बी०

भूमिका लेखक—दैनिक "आज"के सम्पादक बाबू श्रीप्रकाश बी० ए०, एल० एल० बी० बेरिस्टर-एट-ला।

१८ वीं सदीमें इटलीकी क्या दशा थी। परराजतन्त्रके दमन-चक्रमें पड़कर इटली घोर यातनायें भोग रहा था। न कोई स्वतन्त्रतापूर्वक लिख सकता था और न बोल सकता था। कहनेका मतलब यह है कि भारतकी वर्त्तमान दशा इटलीको उस समयकी दशासे ठीक मिलती जुलती है। इटली एकदम निर्जीव हो गया था। ऐसी ही दशामें देशभक्त मैजिनीने अपने लेखोंका शंखनाद किया। इनका ही प्रभाव था कि इटली जाग उठा और स्वतन्त्र बन गया। ग्रन्थके अन्तमें संक्षेपमें मैजिनीका जीवनचरित्र भी दिया गया है। पृष्ठ संख्या २६०से भी अधिक है। मूल्य २)

२२—गोलमाल

ले०—रायबहादुर कालीप्रसन्न घोष

जिन लोगोंने बंकिम बाबूका चौबेका चिट्ठा और लोकरहस्य पढ़ा है, वे गोलमालके मर्मको भली भांति समझ सकते हैं। राय बहादुर काली प्रसन्न घोषने बंगलाके 'भ्रान्ति विनोद' नामक पुस्तकमें समाजमें प्रचलित बुराइयोंकी—जिसे वर्त्तमान समाजने प्रायः अनिवार्य और क्षम्य मान लिया है—मार्मिक भाषामें चुटकी ली है। प्रत्येक निबन्ध अपने ढंगके निराले हैं। रसिकता और रसीली बातोंसे लेकर दिगन्त मिलन तक समाजकी बुराइयोंकी आलोचनासे भरा है। उसी भ्रान्ति विनोदका यह गोलमाल हिन्दी अनुवाद है। मूल लेखकके भावको ज्योंका त्यों रखनेकी पूरी चेष्टा की गई है। २०० पृ०, मूल्य १=)

२३—१८५७ ई० के गदरका इतिहास

लेखक—पण्डित शिवनारायण द्विवेदी

सिपाहीविद्रोह क्यों हुआ? यह प्रश्न अभीतक प्रत्येक भारतवासीके हृदयको आन्दोलित कर रहा है। कोई इसे सिपाहियोंका क्षणिक जोश बतलाते हैं, कोई सिपाहियोंकी बेजड़ बुनियाद, धर्मभीरुता बतलाते हैं और कोई इसे राजनीतिक कारण बतलाते हैं। प्रस्तुत पुस्तक अनेक अंग्रेज इतिहासज्ञोंकी पुस्तकोंके गवेषणापूर्ण छानबीनके बाद लिखी गयी है। पूरे प्रमाण सहित इसमें दिखलाया गया है कि सिपाहियोंकी क्रान्तिके लिये अंग्रेज अफसर पूर्णतः दोषी हैं और यदि वे चेष्टा किये होते तो लार्ड डलहौजीकी कुटिल और दोषपूर्ण नीतिके रहते भी इतना रक्तपात न हुआ होता। प्रस्तुत पुस्तकसे इस बातका भी पता लगता है कि इस रक्तपातकी भीषणता बढ़ानेमें अंग्रेजोंने भी कोई बात उठा नहीं रखी थी। प्रथम भागके सजिल्द प्रायः ६०० पृष्ठोंका मूल्य ३॥) द्वितीय भागके सजिल्द प्रायः ८०० पृ० मूल्य ४॥)

२४—भक्तियोग

ले०—श्रीयुक्त अश्विनीकुमार दत्त

अनुवादक चन्द्रराज भण्डारी 'विशारद'। कौन भगवानका प्रेमसे सेवा नहीं करना चाहता? कौन भगवद्-भक्तिके रसका आनन्द नहीं लेना चाहता? आदर्श भक्तोंके जीवनका रहस्य कौन नहीं जा[illegible]ता? हृदयकी साम्प्रदायिक संकीर्णताको त्यागकर [illegible]हर दृष्टान्तोंके साथ साथ उच्च कोटिके धर्मशास्त्र[illegible]नों, भक्तों और महात्माओंके अनुभवोंसे भक्तिका [illegible]के लिये [illegible] 'भक्तियोग' ग्रन्थका आदिसे अन्ततक [illegible]आवश्यक है। २६८ पृष्ठ [illegible] सजिल्द १॥)

२५—तिब्बतमें तीन वर्ष

ले०—जापानी यात्री श्रीइकाई कावागुची

तिब्बत एशिया खंडका एक महत्वपूर्ण अङ्ग है, परन्तु वहांके निवासियोंकी धार्मिकता तथा शिक्षाके अभावके कारण अभी तक वह खंड संसारकी दृष्टिसे ओझल ही था, परन्तु अब कई यात्रियोंके उद्योग और परिश्रमसे वहांका बहुत कुछ हाल मालूम हो गया है। इन्हीं यात्रियोंमें सबसे प्रसिद्ध यात्री कावागुचीकी यात्राका यह विवरण हिन्दी-भाषा-भाषियोंके सामने रक्खा जाता है।

इस पुस्तकमें आपको ऐसी ऐसी भयानक घटनाओंका विवरण पढ़नेको मिलेगा जिनका ध्यान करने मात्रसे ही कलेजा कांप उठता है, साथही ऐसे ऐसे रमणीक स्थानोंका चित्र भी आपके सामने आयेगा जिनको पढ़कर आप आनन्दके सागरमें लहराने लगेंगे। आपको आश्चर्य्य होगा कि तिब्बत भारतके इतना नजदीक होने पर भी अभीतक हमलोग उसके विषयमें कितने अनभिज्ञ थे।

इस पुस्तकमें दार्जिलिङ्ग, नेपाल, हिमालयकी बर्फीली चोटियां, मानसरोवरका रमणीय दृश्य तथा कैलाश आदिका सविस्तर वर्णन पढ़कर आप बहुतही आनन्दलाभ करेंगे।

इसके सिवा वहांके रहन सहन, विवाहशादी, रीति-रिवाज एवं धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक अवस्थाओंका भी पूर्ण हाल विदित हो जायगा। यह पुस्तक इस ढङ्गसे लिखी गई है कि आप एक बार आरम्भ करनेके बाद बिना समाप्त किये नहीं छोड़ सकेंगे। पढ़नेमें उपन्याससे भी अधिक आनन्द मिलेगा। पुस्तक सुन्दर चिकने कागजके प्रायः ५२५ पृष्ठकी है। कावागुचीका चित्र भी दिया गया है मूल्य २।) सजिल्द २॥﴿)

२६—संग्राम

ले०—उपन्यास सम्राट् श्रीयुक्तप्रेमचंदजी

मौलिक उपन्यास एवं कहानियां लिखनेमें श्रीयुक्त प्रेमचन्दजीने हिन्दीमें वह नाम पाया है जो आजतक किसी हिन्दी लेखकको नसीब न हुआ। उनके लिखे 'प्रेमाश्रम' एवं 'सेवासदन' की प्रायः समस्त हिन्दी एवं अन्य भाषाके पत्रोंने मुक्तकंठसे प्रशंसा की है।

इन उपन्यासोंको रचकर उन्होंने हिन्दी-संसारमें एक नवयुग उपस्थित कर दिया है, और नये तथा पुराने लेखकोंके सामने भाषाकी प्रौढ़ता तथा मौलिकता, विषयकी गंभीरता और रोचकताका एक आदर्श रख दिया है। जिससे आज हिन्दीके लेखकों और पाठकोंमें विचार-क्रान्ति उत्पन्न हो गई है तथा विचारोंमें शुद्धता और पवित्रता आगई है।

उन्हीं प्रेमचन्दजीकी कुशल लेखनी द्वारा यह 'संग्राम' नाटक लिखा गया है। यों तो उनके उपन्यासोंमें ही नाटकका मजा आ जाता है फिर उनका लिखा नाटक कैसा होगा यह बतानेकी आवश्यकता नहीं प्रतीत होती। उनकी लेखनी मनोभावोंको प्रकट करनेमें सिद्धहस्त तो है ही नाटकमें तो मनोभावोंका ही संग्राम होता है फिर उसका क्या कहना। प्रस्तुत नाटकमें मनोभावोंका जो चित्र उन्होंने खींचा है वह आप पढ़कर ही अन्दाजा लगा सकेंगे। बढ़िया-एन्टिक कागजपर प्रायः २७५ पृष्ठोंमें छपी पुस्तकका मूल्य केवल १॥)

२७-चरित्रहीन

लेखक—श्रीयुक्त शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय

बंगलामें श्रीयुत शरत् बाबूके उपन्यास उच्च कोटिके समझे जाते हैं। मनुष्यके चरित्र-चित्रण करनेमें शरत् बाबूकी लेखनी अद्वितीय है। उनके लिखे उपन्यास पढ़ते समय आंखोंके सामने घटना स्पष्ट रूपसे भासने लगती है और यही जान पड़ता है कि मानों पढ़नेवाला वहीं मौजूद है।

चरित्रहीनका विषय नामसे ही प्रकट हो जाता है। इसमें दिखाया गया है कि युवा पुरुष बिना पूर्णदेख रेखके किस तरह चरित्रहीन हो बैठते हैं। साथ ही यह भी दिखाया गया है कि सच्चा स्वामिभक्त सेवक किस तरह दुर्व्यसनके पंजोंसे अपने मालिकको छुड़ा सकता है और अपने ऊपर आनेवाले कष्टकी कुछ परवा न कर, मालिककी भलाईका हमेशा खयाल रख कैसे उसे सच्चरित्रताके सिंहासनपर बिठा सकता है।

इसके अतिरिक्त पति-पत्नीमें प्रेमका होना कितना सुखद है, पतिव्रता स्त्री अपने पतिकी सेवा किस प्रकार कर सकती है और सच्चरित्र पुरुष अपनी सती सहधर्मिणीको हृदयसे कितना प्यार कर सकता है तथा अच्छे घरकी विधवा दुष्टाके बहकावे-में पड़कर कैसे अपने धर्मकी रक्षा कर सकती है, इन सब बातोंका भी इसमें पूर्णरूपसे दिग्दर्शन कराया गया है।

उपन्यास इतना रोचक और शिक्षाप्रद है कि एक बार हाथमें लेनेपर पुनः समाप्त किये बिना छोड़नेको जी नहीं चाहता।

पृष्ठ संख्या ६६४ सुन्दर खादीकी जिल्द सहित मूल्य ३।)

२८—राजनीति-विज्ञान

ले० सुखसम्पति राय भण्डारी

आज भारत राजनीति-निपुण न होनेके कारण ही दासताकी यातनाओंको भोग रहा है। हिन्दीमें राजनीतिकी पुस्तकोंका अभाव जानकर ही यह पुस्तक निकाली गई है। मुनरो,स्मिथ, रो, ब्लंशले, गार्नर आदि पाश्चात्य राजनीति विशारदोंके अमूल्य ग्रन्थोंके आधारपर यह पुस्तक लिखी गई है। राजनीति-शास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, इकरार-सिद्धान्त, शक्तिसिद्धान्त, राज्य और राष्ट्रकी व्याख्या आदि राजनीतिके गूढ़ रहस्योंका प्रतिपादन बड़ी खूबीसे इस ग्रन्थमें किया गया है। इस राजनीतिक युगमें राजनीति-प्रेमी प्रत्येक पाठकको इस पुस्तककी एक प्रति पास रखनी चाहिये। राष्ट्रीय स्कूलोंकी पाठ्य पुस्तकोंमें रखी जाने योग्य है। २१६ पृ० की पुस्तकका मूल्य १।=) है।

२९—आकृति-निदान

ले० जर्मनीके प्रसिद्ध जल-चिकित्सक डा० लूईकूने

सम्पादक-रामदास गौड़ एम० ए०

आज संसार डाक्टर लूईकूनेके आविष्कारोंको आश्चर्यकी दृष्टिसे देखता है। उसी लूईकूनेकी अंग्रेजी पुस्तक 'The Science of Facial Expression' का यह अनुवाद है। इसमें लगभग ६० चित्र दिये गये हैं, जो बहुत सुन्दर आर्ट पेपरपर छपे हैं। उन चित्रोंके देखनेसे ही झट मालूम हो जाता है कि इस चित्रमें दिये हुए मनुष्यमें यह बीमारी है। सब बीमारियोंकी प्राकृतिक चिकित्सा-विधि भी बतलाई गयी है। यदि पुस्तक समझ कर पढ़ी जाय और चित्रोंका गौरसे अवलोकन किया जाय तो मनुष्य एक मामूली डाक्टरका अनुभव सहज ही प्राप्त कर सकता है। इतने चित्रोंके रहते भी पुस्तकका मूल्य केवल १॥) रखा गया है।

३०—वीर केशरी शिवाजी

ले० पं० नन्दकुमारदेव शर्म्मा

महाराज छत्रपति शिवाजीका नाम किसीसे छिपा नहीं है। हिन्दू-धर्मपर विधर्मियोंद्वारा होते हुए अत्याचारसे बचानेवाले, गो-ब्राह्मण-भक्त, सच्चे धर्म्मवीर, कर्म्मवीर, राष्ट्रवीर 'वीर-केशरी शिवाजी' की इतनी बड़ी जीवनी अभीतक नहीं निकली थी। अंग्रेजी इतिहास-लेखकोंने शिवाजीके सम्बन्धमें अनेकों बातें बिना किसी प्रमाणके आधारपर मनमानी लिख डाली हैं। उन सबका समाधान एतिहासिक प्रमाणोंद्वारा लेखकने बड़ी खूबीके साथ किया है। औरंगजेबकी कुटिल चालोंको शिवाजीने किस प्रकार शह देकर मात किया, दगाबाज अफजलखाँकी दगाबाजीका किस प्रकार अन्त किया, हिन्दुओंके हिन्दुत्वकी कैसे रक्षा की, किस प्रकार मराठा-राज्य स्थापित किया, इन सब विषयोंका बड़ी सरल और ओजस्विनी भाषामें वर्णन किया है। लगभग ७५० पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य खद्दरकी जिल्द सहित ४) रेशमी सुनहली जिल्द सहित ४ॎ)

३१—भारतीय वीरता

ले० श्रीयुक्त रजनीकान्त गुप्त

कौन ऐसा मनुष्य होगा जो अपने पूर्वजोंकी कीर्त्ति-कथा न जानना चाहता हो। महाराणा प्रतापसिंहके प्रताप, वीर-केशरी शिवाजीकी वीरता, गुरु गोविन्दसिंहकी गुरुता और महाराजा रणजीतसिंहके अद्भुत शौर्य्य और रण-कौशलने आज भी भारतके गौरवको कायम रखा है। रानी दुर्गावती, पद्मावती, किरणदेवी आदि भारत रमणियोंकी वीरता पढ़कर आज भी भारतीय अबलायें बल प्राप्त कर सकती हैं। ऐसे वीर भारतके सपूतों और आर्य्य-ललनाओंकी पवित्र चरित्र-कथायें इसमें वर्णित हैं। इसकी १६—१७ आवृत्तियां वङ्ग-भाषामें हो चुकी हैं। अनुवाद भी सरल और ओजस्विनी भाषामें हुआ है। कवरपर तीनरङ्गा सुन्दर चित्र है। भीतर ८ चित्र दिये गये हैं। प्रत्येक नर-नारीको यह पुस्तक पढ़नी चाहिये। २७५ पृष्ठकी सचित्र पुस्तकका मूल्य केवल १॥) है।

३२—रागिणी

ले० : मराठीके प्रसिद्ध उपन्यासकार

श्रीयुक्त वामन मल्हारराव जोशी एम० ए०

अनुवादक—हिन्दी नवजीवनके सम्पादक तथा हिन्दीके प्रसिद्ध लेखक

श्रीयुक्त पं० हरिभाऊ उपाध्याय

रागिणी है तो उपन्यास, परन्तु इसे केवल उपन्यास कहनेसे सन्तोष नहीं होता। क्योंकि आजकल उपन्यासोंका काम केवल मनोरञ्जन और मनबहलाव होता है। इसको तर्क-शास्त्र और दर्शन-शास्त्र भी कह सकते हैं। इसमें जिज्ञासुओंके लिये जिज्ञासा, प्रेमियोंके लिये प्रेम और अशान्त जनोंके लिये विमल शान्ति मिलती है। वैराग्य खण्डका पाठ करनेसे मोह-माया और जगत्‌की उलझनोंसे निकलकर मनमें स्वाभाविक ही भक्ति-भाव उठने लगता है। देशभक्तिके भाव भी स्थान स्थानपर वर्णित हैं। लेखककी कल्पना-शक्ति और प्रतिभा पुस्तकके प्रत्येक वाक्यसे टपकती है। सभी पात्रोंकी पारस्परिक बातें और तर्क पढ़ पढ़कर मनोरञ्जन तो होता ही है, बुद्धि भी प्रखर हो जाती है। भारतीय साहित्यमें पहले तो 'मराठी'का ही स्थान ऊँचा है फिर मराठी-साहित्यमें भी रागिणी एक रत्न है। भाषा और भावकी गम्भीरता सराहनीय है। उपाध्यायजीके द्वारा अनुवाद होनेसे हिन्दीमें इसका महत्व और भी बढ़ गया है। लेखककी लेखनशैली, अनुवादककी भाषा-शैली जैसी सुन्दर है, आकार भी वैसा ही सुन्दर, छपाई वैसी ही साफ है। ऐसी सर्वाङ्गपूर्ण सुन्दर पुस्तक आपके देखनेमें कम आवेगी। लगभग ८०० पृष्ठकी सजिल्द पुस्तकका मूल्य ४) और सुन्दर रेशमी सुनहली जिल्दका ४।)

३३—प्रेम-पचीसी

ले० उपन्यास-सम्राट् श्रीयुक्त प्रेमचन्दजी

प्रेमचन्दजीका नाम ऐसा कौन साहित्य-प्रेमी है जो न जानता हो। जिस प्रेमाश्रमकी धूम दैनिक और मासिक पत्रोंमें प्रायः बारह महीनेसे मची हुई है उसी प्रेमाश्रमके लेखक बाबू प्रेमचन्दजीकी रचनाओंमेंसे एक यह भी है। 'प्रेमाश्रम', 'सप्त सरोज','प्रेम पूर्णिमा' और 'सेवासदन' आदि उपन्यासों और कहानियोंका जिसने रसास्वादन किया है वह तो इसे बिना पढ़े रह ही नहीं सकता। इसमें शिक्षाप्रद मनोरञ्जक २५ अनूठी कहानियां हैं। प्रत्येक कहानी अपने अपने ढङ्गकी निराली है। कोई मनोरञ्जन करती है, तो कोई सामाजिक कुरीतियोंका चित्र चित्रण करती है। कोई कहानी ऐसी नहीं है जो धार्मिक अथवा नैतिक प्रकाश न डालती हो। पढ़नेमें इतना मन लगता है कि कितना भी चिन्तित कोई क्यों न हो प्रफुल्लित हो जाता है। भाषा बहुत सरल है। विद्यार्थियोंके पढ़ने योग्य है। ३८४ पृ० की पुस्तकका खद्दरकी जिल्द सहित मूल्य २।)—रेशमी जिल्दका २॥)

३४—व्यावहारिक पत्र-बोध

ले० पं० लक्ष्मणप्रसाद चतुर्वेदी

आजकलकी अंग्रेजी शिक्षामें सबसे बड़ा दोष यह है कि प्रायः अंग्रेजी शिक्षित व्यवहार-कुशल नहीं होते। कितने तो शुद्ध बाकायदा पत्र लिखनातक नहीं जानते। उसी अभावकी पूर्तिके लिये यह पुस्तक निकाली गयी है। व्यापारिक पत्रोंका लिखना, पत्रोंका उत्तर देना, प्रार्थनापत्रोंका बाकायदा लिखना तथा आफिसियल पत्रोंका जवाब देना आदि दैनिक जीवनमें काम आनेवाली बातें इस पुस्तकद्वारा सहज ही सीखी जा सकती हैं। व्यापारिक विद्यालयों (Commercial Schools) की पाठ्य-पुस्तकोंमें रहने लायक यह पुस्तक है। अन्यान्य विद्यालयोंमें भी यदि पढ़ायी जाय तो लड़कोंका बड़ा उपकार हो। विद्यार्थियोंके सुभीतेके लिये ही लगभग १२५ पृ० की पुस्तककी कीमत ।≈) रखी गयी है।

३५—रूसका पञ्चायती-राज्य

ले० प्रोफेसर प्राणनाथ विद्यालंकार

जिस बोल्शेविज्मकी धूम इस समय संसारमें मची हुई है, जिन बोल्शेविकोंका नाम सुनकर सारा यूरोप कांप रहा है उसीका यह इतिहास है। जारके अत्याचारोंसे पीड़ित प्रजा जारको गद्दीसे हटानेमें कैसे समर्थ हुई, मजदूर और किसानोंने किस प्रकार जार-शाहीको उलटनेमें काम किया, आज उनकी क्या दशा है इत्यादि बातें जाननेको कौन उत्सुक नहीं है ? प्रजातन्त्र-राज्यकी महत्ताका बहुत ही सुन्दर वर्णन है। प्रजाकी मर्जी बिना राज्य नहीं चल सकता और रूस ऐसा प्रबल राष्ट्र भी उलट दिया जा सकता है, अत्याचार और अन्यायका फल सदा बुरा होता है इत्यादि बातें बड़े सरल और नवीन तरीकेसे लिखीं गयी हैं। लेनिनकी बुद्धिमत्ता और कार्यशैली पढ़कर दांतों तले अँगुली दबानी पड़ती है। किस कठिनता और अध्यवसायसे उसने रूसमें पंचायती राज्य स्थापित किया इसका विवरण पढ़कर मुर्दा दिल भी हाथों उछलने लगता है। १३६ पृ० की पुस्तकका मूल्य केवल ॥ᐟ मात्र रखा गया है।

३६—टाल्स्टायकी कहानियां

सं० श्रीयुक्त प्रेमचन्दजी

यह महात्मा टाल्स्टायकी संसार-प्रसिद्ध कहानियोंका हिन्दी अनुवाद है। यूरोपकी कोई ऐसी भाषा नहीं है जिसमें इनका अनुवाद न हो गया हो। इन कहानियोंके जोड़की कहानियां सिवा उपनिषदोंके और कहीं नहीं हैं। इनकी भाषा जितनी सरल, भाव उतने ही गम्भीर हैं। इनका सर्वप्रधान गुण यह है कि ये सर्व-प्रिय हैं। धार्मिक और नैतिक भाव कूट कूटकर भरे हैं। विद्यालयोंमें छात्रोंको यदि पढ़ाई जायँ तो उनका बड़ा उपकार हो। किसानोंको भी इनके पाठसे बड़ा लाभ होगा। पहले भी कहींसे इनका अनुवाद निकला था परन्तु सर्वप्रिय न होनेके कारण उपन्यास सम्राट् श्रीयुक्त प्रेमचन्दजी-द्वारा सम्पादित कराकर निकाली गयी हैं। सर्वसाधारणके हाथोंतक यह पुस्तक पहुंच जाय इसीलिये मूल्य केवल १ᐟ रक्खा गया है।

३७-सुयेनच्वांग

लेखक—श्रीयुत जगन्मोहन वर्मा

"सुयेनच्वांग" ने बड़े कष्ट और परिश्रमसे १३ सौ वर्ष पहले भारतकी यात्राकी थी, जिसका विस्तृत वर्णन उसने अपनी यात्रावाली पुस्तकमें लिखा है। उसने यहां की सुव्यवस्थाका दृश्य अपने आखों देखा था, इस पुस्तकके अवलोकनसे आपके सामने १३ सौ वर्ष पुराने भारतका दृश्य अंकित हो जायगा। उस समयका सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और व्यवहारिक अवस्थाओंको जान कर आप मुग्ध हो जायेंगे और यहांका सुशासन, विद्याका प्रचार, लोगोंकी आर्थिक अवस्था, अनेक जातियों और धर्मोंके होते हुए आपसका प्रेम इत्यादि विषयोंका तथा यहांका प्राकृतिक दृश्यका वर्णन बड़ा ही मनोरंजक और शिक्षाप्रद है पुस्तक पढ़ने और संग्रह करने योग्य है।

सुन्दर चिकने कागजकी २५४ पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य केवल १।)

३८-मौलाना रूम और उनका काव्य

ले०—श्रीजगदीशचन्द्र वाचस्पति

फारसी—भाषामें "मसनवी रूम" बड़ाही उत्कृष्ट ग्रंथ है। फारसीमें अध्यात्म विषयपका यह अनोखा है। फारसीमें अध्यात्म-विषयके यह ग्रन्थ प्रामाणिक समझा जाता है। इसके अधिकांश सिद्धान्त वेदान्तसे मिलते-जुलते हैं। हिन्दी-भाषाके सुयोग लेखकोंने अभीतक फारसी और अरबीकी तरफ ध्यान नहीं दिया है,हालांकि इन भाषाओंमें बड़े बड़े उत्कृष्ट ग्रंथरत्न हैं। एजेंसीने इस ग्रंथके लेखक "मौलाना रूम" की जीवनी, भावपूर्ण मनोरंजक कहानियां, शुभ उपदेश, फारसीके कुछ चुने हुए पद्य और उनका सरल भावपूर्ण अर्थ बड़े सुन्दर ढंगसे लिखाकर प्रकाशित किया है। लेखकने मौलाना रूमके विचारोंका आर्ष ग्रंथोंसे बड़ी खूबीसे मुकाबिला किया है। हिन्दी—भाषामें यह अपने ढंगकी एक ही आलोचनात्मक पुस्तक है। सुन्दर एण्टिक कागजके २२० पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य केवल १)

३९--आधुनिक भारत

ले०—श्रीप्यारेलाल गांगराड़े

अंग्रेजी अमलदारीके पूर्व भारतके व्यापारिक, व्यावसायिक, शिक्षा और आर्थिक अवस्थाकी क्या दशा थी और आज उसकी अवनति कैसे हुई है, इसी विषयको प्रामाणिक आधारपर लेखकने लिखा है। इस पुस्तकमें शिक्षा, स्वराज्य, धन, धर्म, स्वास्थ्य इत्यादिकी हीनता सरकारी रिपोर्टों तथा विद्वान् अंग्रेजोंकी रायसे प्रकट की गयी है। इस पुस्तकको सभी पढ़े-लिखे भारतवासियोंको पढ़ लेना चाहिये तथा "आधुनिक भारत" का स्वरूप देख और समझ लेना चाहिये। राजनीतिक, धार्मिक तथा व्यावसायिक क्षेत्रमें काम करनेवाले प्रत्येक देशभक्तोंको इस पुस्तकको अवश्य पढ़ना चाहिये। सुन्दर एण्टिक कागजकी १४४ पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य केवल ॥।)

४०—हिन्दी साहित्य विमर्श

ले०--श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी बी० ए०

(सरस्वती-सम्पादक)

यह पुस्तक क्या है, हिन्दी-साहित्यका जीता-जागता चित्र है। हिन्दी भाषाका सुन्दर आलोचनात्मक इतिहास, भाषाका विकास तथा उसकी स्थिरताके सम्बन्धमें पश्चिमीय तथा पूर्वीय विद्वानोंकी क्या राय है, उसका हिन्दी-भाषाके इस विकासके सम्बन्धमें कहांतक पालन होता है, हिन्दी भाषाके आधुनिक गद्य-पद्य लेखकों तथा शुभचिन्तकोंने कहांतक अपना कर्त्तव्य पालन किया है, और ब्रजभाषा तथा खड़ी बोलीके विवादास्पद विषयोंकी बड़ी विस्तृत आलोचना की गयी है। विद्वान् लेखकने अपनी प्रतिभामयी लेखनीसे बड़ी स्वतन्त्रताके साथ भाषाके विकासपर पूर्ण प्रकाश डाला है। यह सम्पूर्ण मौलिक ग्रन्थ है। प्रत्येक साहित्य-प्रेमीको पढ़ना और मनन करना चाहिये। पुस्तक सुन्दर एण्टिक कागजपर छप रही है।

असहयोग-मालाकी पुस्तकें

१—असहयोग या तर्कतअल्लुक—महात्माजीका मद्रासमें भाषण, मद्रास मेलके प्रतिनिधिसे बातचीत, तीन मोह -)

२—सूतके धागेमें स्वराज्य—महात्माजीका स्वदेशीपर भाषण)॥

३—असहयोग अर्थात् आत्मशुद्धि—मादक वस्तुओंपर महात्माजीके विचार)॥

४—अदालतोंका इन्द्रजाल—अदालतोंकी निस्सारतापर म० गांधी, पं० नेहरू आदिके विचार)॥

५—चरखेकी तान—गद्यपद्यमय चरखेपर कबीरदासजी आदि महात्माओंके गीत)॥

६—हिन्द स्वराज्य—म० गान्धीकृत ।-)

७—काशीमें महात्माजी—३ चित्र, महात्माजी और बा० भगवानदासजीके विचार)॥

८—गोरखपुरमें गांधीजी—४ चित्र, महात्माजी और मौ० मुहम्मद अलीकी वक्तृतायें)॥

९—लालफीता—"प्रेमचन्दजी" की अनूठी अहयोग कहानी -)

१०—कांग्रेस—३ चित्र, नागपुर कांग्रेसमें असहयोगपर भाषण -)

११—गांधी बाबाके चरित्र—ले० प्रो० रामदास गौड़ एम० ए० -)

१२—चरखेकी गूंज—चरखेपर गानेका गीत)॥

१३—वकीलकी रामकहानी—गीत)॥

१४—सत्याग्रहका अठवारा—सत्याग्रह सप्ताहमें बा० भगवानदासजीका भाषण)॥

१५—स्वराज्यके फायदे—"प्रेमचन्दजी" के भावमय विचार -)

१६—कवीन्द्र और महात्माजी—असहयोग-सिद्धान्तपर कवि-सम्राट् रवीन्द्रनाथ ठाकुर और महात्माजीकी लिखापढ़ी -)

१७—ब्रह्मचर्यपर महात्माजी ।)

१८—सारा भारत एक है—स्वराज्य प्राप्तिका मूल कारण भारतीय एकता है, इसीपर महात्माजीके विचार)॥
१९—लागडांट—"प्रेमचन्दजी" की एक मनोहर कहानी)॥
२०—चरखेके गीत—राष्ट्रीय पुर० के लिये चरखेपर रचित गीत)॥
२१—असहयोग वीणा)॥।
२२—सिद्धान्तके लिये बलिदान—असहयोग सिद्धान्तपर दृढ़ रहनेके लिये एक बालककी मृत्यु और उसके पिताका भाषण)॥
२३—कांग्रेसका जन्म और विकास—राष्ट्रीय महासभाका संक्षिप्त इतिहास और उसके पूर्वकालके राजनैतिक वायुमण्डलका दिग्दर्शन ⁄)
२४—नेताओंकी तीर्थयात्रा और उनके सन्देश—नेताओंके हृदयग्राही सन्देशोंका संग्रह जो जेल जाते समय आप लोगोंके लिये छोड़ गये हैं—नेताओंके ८ चित्र भी हैं ⁄)
२५—अछूतोंपर महात्माजी—अछूतोंके उद्धारके लिये महात्माजीकी गवेषणापूर्ण युक्तियां)॥
२६—स्वदेशी आन्दोलन—स्वदेशी आन्दोलनके क्रमागत विकास और व्यापारियोंकी प्रतिज्ञाओंका विवरण।)
२७—महात्माजीपर राजविद्रोहका अभियोग—जिस मुकदमेमें महात्माजीको ६ सालकी सजा हुई है उसीका संक्षिप्त विवरण)॥
२८—खादीपर विज्ञानाचार्य—खद्दरपर आचार्य प्रफुल्लचन्द रायके गवेषणापूर्ण विचार)।
२९—हृदय उद्‌गार—महात्माजीकी जेलयात्रापर कवितायें)।
३०—सत्याग्रह सप्ताह-काशीमें मालवीयजीका मर्मभेदी भाषण ⁄)

सस्ती ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमालाके प्रकाशित करनेका एकमात्र उद्देश्य यही है कि उपयोगी और अलभ्य पुस्तकोंको हिन्दीके गरीब और उत्सुक पाठकोंके पास स्वल्प और सुलभ मूल्यमें पहुंचाना। यदि पाठकवृन्द हमारा उत्साह बढ़ाते रहे तो शीघ्र विज्ञान, कलाकौशल तथा व्यापार सम्बन्धी पुस्तकें इस मालामें निकाली जायंगी।

(१) आनन्दमठ

ले०—उपन्यास सम्राट् बङ्किमचन्द्र चटर्जी

यह उपन्यास सम्राट् बङ्किमचन्द्र चटर्जीकी सर्वोत्कृष्ट रचना है। मातृभूमिके प्रति उत्कट अनुराग और प्रेमका यह प्रत्यक्ष स्वरूप है। इस पुस्तकसे नव बङ्गालने कैसा उत्साह ग्रहण किया था उसका अनुमान केवल १९०० के पूर्व और वर्त्तमान बङ्गालकी तुलना करनेसे ही लग सकता है। इसकी अपार उपयोगिता देखकर राजा कमलानन्दसिंहने इसे अनुवादितकर छपवाया था जो इस समय प्राप्य नहीं है। इस पुस्तकके कथानक पर ध्यान दिया जाय और संगठन किया जाय तो देशका बड़ा उपकार हो। जो एकाध संस्करण निकले हैं वे अपूर्ण और महंगे हैं। इसीसे केवल प्रचारके ख्यालसे सस्ते दरपर यह पुस्तक निकाली गई है, अर्थात् २८ लाइनके प्रायः २०० पृष्ठोंका मूल्य केवल ॥।) मात्र रखा गया है।

(२) पाश्चिमीय सभ्यताका दिवाला

ले०—ई० एस० स्टोक्स

यह पुस्तक "सस्ती ग्रन्थमाला"का दूसरा पुष्प है। आज यूरोपीय संसारमें रंगका जो प्रश्न उठ रहा है और इसके कारण संसारमें जो अशान्ति मची हुई है उसीका दिग्दर्शन इस पुस्तकमें कराया गया है, और साथ ही यह भी बताया गया है कि इस विपत्तिकालमें भारतका क्या कर्त्तव्य है और संसार इस रंगीले रोगसे कैसे मुक्त हो सकता है। मूल्य ।)

(३) संसारका सर्वश्रेष्ठ पुरुष

अ०—पं० छविनाथ पाण्डेय बी० ए० एल० एल० बी०

यह पुस्तक "सस्ती ग्रन्थ माला" का तीसरा पुष्प है। इसमें महात्मा गांधीके प्रति विदेशियोंके क्या विचार हैं, उनके प्रति उनके क्या भाव हैं, और उन्हें वह किस दृष्टिसे देखते हैं, इन विचारोंको पढ़कर हम भारतीयोंको अपने हृदयोंपर हाथ रखकर विचार करना चाहिये कि क्या वाकई महात्मा गांधीके प्रति हमारे हृदयमें सच्ची भावनायें हैं। क्या उनके उपदेशोंका सच्चे हृदयसे हम पालन कर रहे हैं? यदि नहीं तो देखिये और विचार कीजिये और अपने कर्त्तव्यको देश तथा महात्माजीके प्रति पालन कोजिये। मूल्य १४० पृष्ठकी पुस्तकका केवल ॥)

(४) भक्ति

ले०—स्वामी विवेकानन्दजी

भक्तियोगका अनूठा ग्रन्थ पृष्ठ मूल्य ।≈)

विक्रयकला अथवा माल बेचनेकी रीति

ले०—गङ्गाप्रसाद भैतिका एम० ए० बी० एल०

आजकल व्यापार और व्यवसायकी तरफ लोगोंका ध्यान आकृष्ट हो रहा है। परन्तु व्यापारके लिये दूकानदारी मुख्य चीज है। दूकानदारी भी एक कला है जिसपर अंग्रेजी भाषामें सैकड़ों पुस्तकें हैं। पाश्चात्य देशकी सभी युनिवर्सिटियोंमें इस विषयकी अलग शिक्षा दी जाती है। पर भारत ऐसे पराधीन देशमें न तो कोई स्कूल है न भारतीय भाषाओंमें इस विषयकी अच्छी पुस्तकें हैं। प्रस्तुत पुस्तकमें सरल भाषामें माल बेचनेके प्रत्येक अंगोंका दिग्दर्शन कराया गया है। मूल्य ।)

नेत्रोन्मीलन

ले०—पं० श्यामबिहारी मिश्र एम०ए० और शुकदेव बिहारी मिश्र बी० ए०

यह नाटक क्या है वर्त्तमान भारतके शासनकी त्रुटियोंका जीता जागता चित्र है। इसमें आपको पुलिसकी चालबाजियों, वकीलोंके हथकंडों और अदालत और न्यायका ढोंग इत्यादि बातें एक अनुभवी डिप्टी कलक्टर द्वारा लिखी पुस्तकसे मालूम हो जायंगी। मूल्य कागजकी जिल्दका ।≈)

सद्दर्शन

अध्यात्म जैसे गूढ़ विषयका बड़ी सरल और सरस भाषामें कथा और कहानियों द्वारा निरूपण किया गया है। अध्यात्मके गूढ़ तत्त्वोंको चन्द्रकालकी तरह इस पुस्तकमें भी दिखलाया गया है। मूल्य सजिल्द १।)